श्रीः

ज्योतिष्मती

त्रैमासिक

वर्ष
१५
सं० २०२९

संख्या
४
श्रावण





















वार्षिक
मूल्य
८.५०

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य २.५०

★ श्रीः ★

ज्योतिष्मती

[अखिल भारतीय ज्यौतिषपरिषद्‌की मुखपत्रिका]

सम्पादक एवं संचालक

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्यौतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य-सांख्य-योगाचार्य
एम.ए. (हिन्दी-संस्कृत) पी.एच.डी.

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

विषय-सूची

आवश्यक सूचना

इस १५वें वर्षका यह चौथा अङ्क है। आगामी अङ्कसे नया १६वां वर्ष प्रारंभ होगा। अधिकांश ग्राहकोंका मूल्य इस अङ्कमें समाप्त है—उन्हें छपा हुआ मनीआर्डर फार्म साथ भेजा जा रहा है। वे अपना आगामी १६वें वर्षका शुल्क आठ रुपये पचास पैसे शीघ्र भेज दें। पता और ग्राहक नम्बर कूपन पर साफ अक्षरोंमें लिखें। किसी कारणवश कोई सज्जन आगेके लिए ग्राहक न रहना चाहें तो भी मनीआर्डर फार्मको व्यर्थ न जाने दें। अपने किसी भी साहित्य संस्कृति ज्योतिष प्रेमी सज्जनको नया ग्राहक बनाकर सहयोग देनेकी कृपा करें छपे मनीआर्डर फार्म पर नये ग्राहकका पता लिख दीजिए और पुरानेके स्थान पर, नया, शब्द लिख दें।

पन्द्रहवें वर्षकी पूर्ति पर

'ज्योतिष्मती' को विगत पन्द्रह वर्षोंमें जो आशातीत सफलता मिली, वह हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंके इतिहासमें गौरवकी वस्तु है। इस सफलताका श्रेय विद्वान् लेखकों, संरक्षक-सहायकों और ग्राहकोंको ही है। सहृदय स्नेही सज्जनों और सम्मान्य विद्वानोंने लेख एवं प्रशंसा-पत्र भेजकर तथा सहायक, ग्राहक आजीवन सदस्य एवं दशवर्षीय पंचवर्षीय सदस्य बनाकर हमें जो सहयोग दिया उसके लिए हम उनके आभारी हैं। आशा है भविष्यमें भी इसी प्रकार उनका सहयोग हमें प्राप्त होता रहेगा। सोलनमें प्रेसकी सुविधा हो जानेसे गत चार वर्षसे सब अङ्क निश्चित तिथिसे सात दिन पहले पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत कर रहे हैं। आगेके सभी अङ्क इसी प्रकार ७ दिन पूर्व प्रकाशित हुआ करेंगे। आगामी 'नववर्षाङ्क' प्रथम नवरात्र दि. ८ अक्तूबर ७२ को प्रकाशित होगा।

वार्षिक मूल्य ८.५० (आठ रुपये पचास पैसे) शीघ्र भिजवाइये

गत वर्षसे ही प्रेसकी स्याही, ब्लाक, छपाई, कागज आदिके मूल्य बहुत बढ़ गये थे और यह महँगाई वस्तुमात्रमें सुरसाके मुखकी भांति बढ़ती ही जा रही है। गत वर्षसे अब कागज छपाई और डाकदरका मूल्य बहुत बढ़ चुका है। अतः प्रत्येक छोटे-बड़े पत्र-पत्रिकाओंने अपना मूल्य बढ़ा दिया और पृष्ठ भी कम कर दिये हैं। किन्तु हमने अभी 'ज्योतिष्मती' का वार्षिक मूल्य ८·५० ही रखा है। यदि परिस्थिति अधिक विषम हुई तो वाध्य होकर आगामी सोलहवें वर्षमें वार्षिक मूल्यमें वृद्धि करनी पड़ेगी।

इस पन्द्रहवें वर्षके चौथे अङ्क (श्रावण २०२९ वि०) में जिनका वार्षिक मूल्य समाप्त हो रहा है उन्हें और नये ग्राहकोंको आगामी १६वें वर्षके लिए वार्षिक मूल्य आठ रुपये ५० पैसे मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेजना चाहिए। इस अंकमें जिनका मूल्य समाप्त है उन सब सज्जनोंको छपा हुआ मनीआर्डर-फार्म साथ भेजा जा रहा है। जिस अंकमें मनीआर्डरफार्म नहीं है उनको आगामी अंक यथा-समय उसी मूल्यमें पहुंचेगा।

'ज्योतिष्मती' के नये आकर्षण

'ज्योतिष्मती' को विशेष उपयोगी और आकर्षक बनानेके लिए सर्वसाधारण जनता और विद्यार्थी-वर्ग ज्योतिर्विज्ञानसे परिचित हो सकें इस उद्देश्यसे 'ज्योतिषका प्रारम्भिक शिक्षण' 'सामुद्रिक-विज्ञान' राशिभविष्य' और 'मन्त्रयन्त्र प्रयोग' शीर्षकोंसे विशेष लेखमाला प्रारम्भ की जा चुकी है। संसारमें घटित होने वाली आगामी वर्षोंकी सामाजिक, राजनैतिक, व्यापारिक घटनाओंकी महत्वपूर्ण भविष्यवाणियां और भारतके गण्यमान्य विद्वानोंके गवेषणात्मक लेख तथा प्रत्येक वस्तुकी तेजी मन्दीके लेख, शेयरमार्केट, हाजिर और वायदा बाजार-भविष्य विशेषरूपमें प्रकाशित किये जाते हैं। आगामी नववर्षाङ्कमें मंत्र रहस्य, भूत भविष्य और वर्तमानकी समस्त घटनाओंको वताने वाली शुद्ध कर्ण पिशाचिनीका अनुभूत सरल सिद्ध मंत्र प्रयोग, मंगली-योग, पहले स्त्रीकी मृत्यु होगी या पुरुषकी ? विधाता के विचित्र योग, धनुर्लग्नका फल विवेचन, आपकी पत्नी कैसी होगी ? कुछ खट्टे मीठे अनुभव, आचार्य वराहमिहिर—समय निर्धारण, लाल हवेली, सचित्र सामुद्रिक विज्ञान, रमलकी उपयोगिता, आयुर्वेद और ज्योतिषके अनुभूत योग, इन्द्रादि देवकृत भगवती स्तुतिका हिन्दी पद्यानुवाद आदि अनेक महत्वपूर्ण लेख और रोचक कथा कहानी, कविता प्रकाशित होंगी। विलम्ब करने पर अङ्क नहीं मिलेगा।

व्यवस्थापक—ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल-प्रदेश)

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिःशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे।

(३) जो सज्जन २१) से १००) रुपये तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सम्मानित सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ल १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य ८.५० साढ़े आठ रुपये और एक प्रतिके दो रुपये पचास पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरदपूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथि से १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना मिलनी चाहिए।

व्यवस्थापक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

श्रावण भाद्रपद आश्विन मास (दि० २७ जुलाई से २२ अक्टूबर १९७२ तक))

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले॥

वर्ष	सोलन, आषाढ़ शु० १५ बुधवार, सं० २०२९ वि०	संख्या
१५	४ श्रावण, शाके १८९४ (२६ जुलाई १९७२ ई०)	४

यज्ञ द्वारा समुन्नत हों

रयिश्च मे रायश्च मे, पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे।
विभू च मे प्रभु च मे, पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे।
कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च, मेऽक्षुच्च मे
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

यज्ञ है मूल उन्नतिका, यज्ञसे सम्भव है समृद्धि व पुष्टि। वैभव व प्रभुताका आधार भी यज्ञ है पूर्णता यज्ञ है प्रदान करता। प्रचुरता, अक्षीणता भी यज्ञका समुन्नत फल है। यज्ञ ही तृप्ति सन्तोष धन-धान्य दे समुन्नत बनाता है।

विचार-कण

निज परता हो नष्ट स्वार्थका क्षय हो,
मानवताका अनुपम आदर्श उदय हो।
जग आधि-व्याधि संकटसे नित निर्भय हो।
हो विश्व-शान्ति माँ मातृ-भूमिकी जय हो।

सदाचार सम्पन्न रहे सब
नैतिकता अपनाएं हम।
भारतको पुनि पहला सा
गौरवशील बनाए हम॥
समता, स्नेह, सुभक्ति भावका
जन-मनमें उजियाला हो।
अपने जीवनको शुचिता-
रिजुतासे खूब सम्भाला हो॥

सम्पादकीय विचार

भारत प्रायःद्वीप एक देश है एक राष्ट्र है

वित्तं च मे वेद्यं च मे, भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथ्यं च मे, ऋद्धं च मे ऋद्धिश्च मे। क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे, मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

ब्रीहयश्च मे यवाश्च मे
माषाश्च मे तिलाश्च मे
मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे,
प्रियङ्गवश्च मे ऽणवश्च मे।
श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे
गोधूमाश्चमे मसूराश्च मे
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

यजुर्वेदके दूसरे मंत्रके रेखांकित शब्दों–माष तिल, मसूर–पर ध्यान दीजिए। माष (उड़द) तिल और मसूर, भारतीय आहारकी ये तीनों चीजें तमिलनाडमें भी प्रचलित हैं। नाम भी यही है। यजुर्वेद जितना पुराना उतने ही ये शब्द पुराने हैं। इन शब्दोंका व्यवहार करने वाली हिन्दू (आर्य) जाति भी उतनी प्राचीन है। ये तीनों शब्द निरक्षर जनता इसी रूपमें बोलती है, यह बात ध्यान देनेकी हैं। ये शब्द तण्डुल न्यायसे चुन लिए गए हैं।

निरक्षर जनताके दैनिक व्यवहारके सैकड़ों शब्द हूबहू रूपमें वेदमें विद्यमान है। एक दो और उदाहरण लीजिए।

"आयुर्यज्ञेन कल्पताम्।"

नागालैंडके एक गांवमें १५६ वर्ष आयुकी एक स्त्री जीवित है। यह गाँव पहाड़की तलहटी में बसा हुआ है। इस पहाड़ पर एक वृक्ष है। इसका नाम आम्र है। आम्र पेड़की पूजा की जाती है। भक्तगण दीर्घजीवी होनेके लिए इस के पत्ते ले जाते हैं। ईसाई मिशनरी भी आयु की महिमा नहीं घटा सकी हैं। यह है वेदकी महिमा और भारत देशके प्राचीनतम होनेका प्रमाण। एक अन्य उदाहरण लीजिए।

"यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं"
"तन्नेजति तद् दूरे तदन्तिके"

'दूर' शब्द कितना पुराना है। यह अपढ़ निरक्षर जनताके व्यवहारका शब्द है। तमिल भी दूर शब्द बोलता है। क्या यह इस बातका प्रमाण नहीं है कि भारत एक देश है, एक राष्ट्र है और हिन्दी एक मात्र इसकी राष्ट्रभाषा है। अंग्रेज़ीने भारतीयताको नष्ट किया है। अंग्रेज़ी ने भारतको ज्ञानवान् नहीं बनाया है। इसने भारतको मूढ़ बनाया है। भारतकी बुद्धिका नाश किया है। गुजराती कवि नरसी मेहताकी प्रार्थना है :–

'प्रभो ! यदि मुझे फिर जन्म दे तो भारत भूमिमें दे और अपने चरणोंमें भक्ति दे।' प्रान्तिकता अंग्रेज़ीने उत्पन्न की है और भारतीयताकी भावनाको नष्ट किया है। १५ अगस्तको कृपापूर्वक (ग्रेसफुली) शान्तिपूर्ण रीतिसे (पीसफुली) और अहिंसात्मक रीतिसे (नन-वायलेंटली) ब्रिटिश सत्ताका स्थान अंग्रेज़ी सत्ताने लिया। सत्ताहस्तान्तरणको १५ अगस्त १९७२ को पच्चीस वर्ष पूरे हो जायेंगे। इस

अंग्रेजी राजकी रजत जयन्ती मनाई जायगी, अंग्रेजी राज जीवित रहा, इस सफलता पर अंग्रेजी राजका प्रसन्न होना स्वाभाविक है। पर एक सामान्य भारतीयके लिए विशेष प्रसन्नताका कोई कारण नहीं । इस देशका नाम 'इण्डिया' है भारत नहीं । रोमन अंक बरते जा रहे हैं । ब्रिटिश कानून प्रचलित है । इनकी जगह भारतीय विधि-संहिताके प्रचलन होनेका कोई लक्षण दिखाई नहीं देता । यही एक दुर्भाग्य देश है ; जिसके प्रधानमंत्री और मंत्रीगण संसारमें सात समुद्र पार की विदेशी भाषामें बोलते हैं । इस पर शाशक पार्टी गरीबी दूर करनेका नाटक करती है। यज्ञोंका तिरस्कार करने वाले शासकोंका जीवन यज्ञमय नहीं है। भारतीय परम्पराका पिछले पच्चीस वर्षोंमें यत्न पूर्वक विनाश किया गया है । भारत-विखण्डित किया गया है। भारत-अभक्तोंको बढ़ाया गया है, प्रोत्साहन दिया गया है । भारत द्वेषी मुस्लिमलीगको शासक पार्टीने गले गलाया है। अलीगढ़-मुस्लिम-यूनिवर्सिटी विषयक नये कानूनके विरोधमें किये गए प्रदर्शनने स्पष्ट कर दिया है कि इस्लाम भारत-भक्त नहीं है, और न वह भारतीय होनेको तैयार है । वह इस्लामी होनेके नाते विशेषाधिकार चाहता है। विशेष स्थिति चाहता है । वह भारत-भूमिके प्रति भक्ति नहीं रखता ।

काल्पनिक :—भारतको विखण्डित करके और भारतके प्रति भक्ति जगाये बिना, भारतीय जनमें भारतीय होनेका गौरव उत्पन्न करनेके अभावमें भारत प्राय-द्वीपमें (शासक पार्टी और उसके अनुवर्ती दल भारत उपमहाद्वीप इण्डिया सब कांटीनेंट कहते हैं) शान्ति स्थापित नहीं हो सकती । अंग्रेजी बुद्धि-विनाशक है, इसका यही एक प्रमाण है कि प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागान्धी, प्रेजीडैंट भुट्टो, प्रधाममंत्री मुजीबुर रहमान, ये तीनों 'इण्डिया सबकॉण्टीनेंट' में स्थायी शान्ति चाहते हैं। भारत से अमेरिका पांच गुणा बड़ा है, और रूस भारत से बीस गुणा बड़ा है। परन्तु अमेरिका और रूसको कोई उपमहाद्वीप नहीं कहता । परन्तु ये तीनों बृटिश शासकोंकी नकलमें भारतको उपमहाद्वीप कह सकते हैं । क्योंकि भारत-भक्ति पर पर्दा डालनेका यह एक उपाय है । 'इन्दिरा-भुट्टो' शिखर-सम्मेलन भारत-प्रायद्वीप में शान्ति स्थापित नहीं कर सकता । भारतीय राष्ट्रीयताकी हत्याका परिणाम शान्ति नहीं, युद्ध ही हो सकता है। यदि शान्ति अभीष्ट होती तो भारत खण्डित ही क्यों किया जाता ? मेघालय, त्रिपुरा, नागालैण्ड मणिपुर राज्य क्यों बनाये जाते ? इनका निर्माण क्या गरीबी दूर करनेके लिए किया गया ? शासन व्यय घटानेकी आवश्यकता है, या बढ़ानेकी ? भारतको विखण्डित रखते हुए भारतकी गरीबी दूर नहीं हो सकती । भारतके विभक्त रहते हुए सैनिक-व्यय कम नहीं हो सकता। एक देशमें चार सेनाओंके होते हुए क्या सैनिक व्यय कम हो सकता है ? एक ही जगह तीन राष्ट्रपति हों, तीन केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल हों तो यह गरीबी बढ़ायगा या कम करेगा ? यह मामूली बात समझनेमें असमर्थ हैं ।

नासमझ नेतृमण्डल क्या कभी भारतको समृद्धि पथ पर भूल कर भी ले जा सकता है ? वर्तमान नेतृमण्डलके रहते हुए भारत, उज्वल भविष्यकी आशा भूलकर भी नहीं कर सकता । श्रीमती

गांधीका यह कथन कि "दो राष्ट्रोंका सिद्धान्त रद्द हो गया" सर्वथा गलत है। अलीगढ़ मुस्लिम-यूनिवर्सीटीका वर्तमान और नया रूप ही इस को असत्य सिद्ध करता है। भुट्टोंने ठीक ही कहा है कि यदि दो राष्ट्रोंका सिद्धान्त समाप्त हो गया होता, तो भारत एक राष्ट्र हो गया होता। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधीने भुट्टोकी इस बातका जवाब देनेका साहस तक नहीं किया। दो राष्ट्रोंका सिद्धान्त गलत हो गया होता, तो क्या बंगला देश १९४६ के समय भारतका एक प्रान्त होनेके बदले स्वतन्त्र देश होता और भारतका प्रधानमंत्री सबसे पहले उसको मान्यता देनेमें गर्व अनुभव करता ? बंगलादेशको मुस्लिम कहलानेका गर्व है और मुस्लिम देशोंसे मान्यता प्राप्त करनेके लिए छटपटा रहा है। भूमि-भक्ति और देशभक्तिका अभाव है। बंगलादेशमें भारत विरोधी वातावरणका उत्पन्न होना क्या सूचित करता है ? भाषाभेद देशभक्तिमें बाधक नहीं हो सकता। बंगलादेशकी वर्तमान स्थिति भारत-अभक्तिका प्रमाण है। इस दशामें क्या अपनी प्रभुताको अक्षुण्ण रखनेको व्यग्र तीनों नेता—श्रीमती गांधी, मुजीब-भुट्टो, भारत प्राय-द्वीपमें स्थायी शान्ति स्थापित करनेका कोई सूत्र ढूंढ सकते हैं ?

भ्रम मिटा :—महात्मा गांधीजीने एक बार कहा था—भारतका विभाजन कृत्रिम है। यह टिकने वाला नहीं। परन्तु उनके भक्तोंने विभाजनको स्थायी बना दिया। दार्शनिक सुकरातका कहना है, सुखकी नहीं सत्यकी खोज करो। परन्तु भारतकी शासक पार्टी सत्ता पानेके लिए सतत प्रयत्नशील रहती है। मुस्लिमलीगको छातीसे लगा सकती है। रुपया पानीके समान बहा सकती है। दंगा करवा सकती है। श्रीमती गांधी १९५८ में कांग्रेसकी अध्यक्षा थीं। नम्बुद्री-पादके पहले कम्युनिस्ट मंत्रीमण्डलको गिरानेके लिए श्रीमती गांधीने दंगे करवाये। फिर यह कह कर कि मन्त्रिमण्डल शान्ति और व्यवस्था कायम रखनेमें असमर्थ है, अतः मंत्रिमण्डल भंग कर दिया जाय और राष्ट्रपतिका शासन स्थापित किया जाय। श्रीमती गांधी लोकतंत्र की उपासक नहीं हैं। रूसकी अनुवर्ती हैं। उड़ीसामें १४ मास मंत्रीमण्डल टिका रहा। १९७२ के प्रारम्भमें उड़ीसामें कांग्रेसने पहले हमला किया, उपद्रव किया, और जब शासन ने रियायत दिखानेसे इन्कार किया, तब जांच की मांग की। अब सत्ता हाथमें आ जाने पर कम्युनिस्ट मुख्यमंत्री श्रीमती नन्दिनी सत्पथीने जांच समाप्त कर दी। क्योंकि शासक पार्टी दंगाई सिद्ध होती। पांचों उपचुनाव हारने पर शासक पार्टीने स्वतंत्र पार्टीके कई सदस्योंको हरयागा-भवनमें कई दिन रखा। जब वह स्वतन्त्र पार्टी से अलग होनेको तैयार हो गए, तब वह भुवने-श्वर जाने पाये। परन्तु, इस पर भी ८३ वर्षीय वयोवृद्ध मुख्यमंत्रीको गिराना सम्भव नहीं हुआ। १४० विधानसभाके सदस्योंमें मुख्य मंत्रीके समर्थक ६९ थे। श्रीमती नन्दिनी इस समय रूरकेला अपने लिए निर्वाचन क्षेत्र ढूंढ रही थीं। यह स्थिति देख वह घबराई। उत्कल कांग्रेसके उन्होंने पैर पकड़े। ६ वर्षके लिए कांग्रेससे बहिष्कृत श्री नीलमणि रतूड़ीको अपना मंत्री बनानेका विश्वास दिलाया और उत्कल कांग्रेसके २७ सदस्य कांग्रेस पार्टीमें ले लिए गए। श्री नीलमणि रतूड़ी कम्युनिस्ट मंत्रीमण्डलमें हैं। श्रीमती गांधीने श्रीमती

नन्दिनी सत्पथीको मुख्यमंत्री चुना है, क्योंकि वह सोवियत रूसकी पुरानी परखी भक्त है। श्री चन्द्रजीत यादव भुवनेश्वर भेजे गए। फिर भी मुख्यमंत्रीका चुनाव सर्व सम्मतिसे न हो सका। युवकवर्गके नेता श्री कानूनगोने चुनावके समय ही अपना वोट विरोधमें लिखाया। यह लक्षण कांग्रेसी मंत्रीमण्डलके दीर्घायु होनेके नहीं। श्रीमती गांधी अधिकाधिक मात्रामें रूसी कम्युनिस्ट पार्टीकी ओर झुकती जा रही हैं यह शिकायत 'यंगतुर्क' के नेता श्री चन्द्रशेखरको भी है। प्रधानमंत्रीने इनको नोटिस दे दिया है, ठीक तरह रहो, वरना कांग्रेस छोड़ दो। यंग-तुर्क कांग्रेसको छोड़कर मालपुवा-खीर फिर कहां पायगा ? पर वह चुप भी नहीं रह सकता। चुप रहनेका अर्थ है, जीवन समाप्त। 'यंगतुर्क' सर्वत्र कम्युनिस्टोंकी पूछ होते देख परेशान है।

सिंडीकेट कांग्रेसको धक्का-देनेके समय उसकी जरूरत थी। अब उसकी क्या जरूरत है ? अब तो मास्कोके प्रति भक्ति दिखानेकी आवश्यकता है। परराष्ट्रमंत्री सरदार स्वर्णसिंह और धरका कलकत्ता जाकर सोवियत रूसके अध्यक्ष म० पोडगोरनीसे १७ घण्टे बात करना क्या प्रमाणित करता है ? यही न कि भारत भी पूर्वी यूरोपके देशोंके समान रूसका एक अनुवर्ती राष्ट्र है।

भारी मति विभ्रम—वर्साई सन्धिसे उत्पन्न चेकोस्लोवाकियासे जर्मन बहुल 'सूडेटन' प्रान्त छीननेके कारण हिटलर और नाजी पार्टीकी निन्दा की गई। पर वर्साई सन्धिके फलस्वरूप लेटविया, इस्टीनिया और लिथूनिया, इन तीन स्वतंत्र देशोंको उदरस्थ करने वाला कम्युनिस्ट रूस साम्राज्यवादी देश नहीं माना जाता और भारत सरकार उसकी वशंवदता मानमेमें अपना गौरव मानती है। किस वास्ते ? क्योंकि रूस भी भारतको विभक्त रखना चाहता है। सुरक्षा परिषदमें यह प्रस्ताव आने पर कि भारतीय सेना युद्ध पूर्वकी सीमा पर लौट जाय, रूस और पोलैण्ड तटस्थ रहे। क्योंकि रूस चाहता है कि ताशकन्द पैक्ट कायम रहे। भारत-विभाजनका समर्थक रूस क्या भारतका सच्चा मित्र हो सकता है ? हां, शासक पार्टीका हो सकता है, पर भारत राष्ट्रका नहीं।

नया स्वर—योग दर्शनमें कहा गया है, "निराशा सुखी पिंगलावत्" निराश व्यक्ति पिंगलाके समान सुखी होता है। नक्सलाइट नेता तारक अली माओत्सेतुंगकी 'रेडबुक' से निराश हो गया है। क्योंकि बंगला देशमें चीन नक्सलाइटोंकी मददके लिए नहीं आया। सत्ता नसक्सलाइट नहीं पा सके। यह भारी निराशा तारिकअलीको सत्यका दर्शन करानेमें सफल हुई। इस नक्सलाइट नेताने भारतीय राष्ट्रवाद का दर्शन किया। तारिक अलीका यह वक्तव्य एक ऐतिहासिक सचाईको प्रकट करता है। इसका ऐतिहासिक वक्तव्य प्रारम्भ होता है :—

दुनियाके लोगो सुनो, भारत एक देश है। एक राष्ट्र है। हम पटेल-नेहरू-जिन्ना और सर स्टेफर्ड क्रिप्सकी बनाई कृत्रिम अन्तर-राष्ट्रीय सीमाओंको नहीं मानते। माओसे पूछता हूं। तुम्हारी "रेड-बुक" क्या करे ? इसका क्या उपयोग ? अन्तरराष्ट्रीयताका ढोंग राष्ट्रीय-भावनाको कुचलनेके लिये किया जाता है। तारिक अलीका स्वर क्षीण है, मन्द है, यह सत्य है। पर पच्चीस वर्ष बाद पहली बार यह

सत्य उजागर हुआ है, क्या यह महत्वकी बात नहीं है। फिर नक्सलाइटने भारत राष्ट्र का झण्डा ऊंचा किया है, क्या यह एक नई बात नहीं है? क्या यह भविष्यका संकेत नहीं कर रहा? क्या यह विश्वास उत्पन्न करनेमें समर्थ नहीं कि भारत पुनः संयुक्त होगा? पच्चीस वर्षोंमें अन्धकार युग रहा, यह आशाकी किरण तो फूटी? एक स्वर तो निकला, जो भारत विभाजनकी कृत्रिमताको प्रकट करता है और नई पीढ़ीको एक नई दिशा दिखाता है। भारत की शासक पार्टियोंका भारत-द्रोह तारिक अली ने प्रकट कर दिया है। क्या इस सचाईसे अब इन्कार किया जा सकता है? 'इस नये स्वरका महत्व कम करनेसे कोई लाभ नहीं। इसकी उपेक्षा करनेसे हानि ही होगी। क्या इस सत्य को हम शीघ्र अनुभव करेंगे? भारत अमर है, तारिकअली इस सत्यको पुष्ट करता है।

<u>क्या पाया ?</u> रजतजयन्तीका उत्सव मनाने से क्या गरीबी दूर होगी? शासक पार्टी १॥ करोड़ रुपया जमा कर कांग्रेस भवन (१३ मंजिला) बना रही है। किराया खानेके लिए। कम्युनिस्ट पार्टीने ५५ लाख रु० व्यय कर पांच मंजिला आलीशान भवन बनाया है। कोटला रोड़ पर बनी यह इमारत शहरी सम्पत्तिका परिसीमन करनेका एक उदाहरण है। कांग्रेस-भवन इसका दूसरा उदाहरण होगा। सत्ता-हस्तान्तरणका यह पहला फल है। त्यागका स्थान संग्रहने लिया है। इस सिद्धिकी प्राप्ति पर भारत क्या गर्व कर सकता है? सड़कों पर रात बिताने वालोंको यह कम्युनिज्म छत दे सकेगा? कम्युनिज्म गरीबीका रास्ता है। इस सत्यको चीनी कम्युनिस्ट नेता और सिंगापुरके प्रधान-मन्त्री लीकवान वर्पेने उद्घाटित किया है। आपने एशियाई सोशलिस्ट कानफ्रेंसका उद्घाटन करते हुए कहा—"कम्युनिस्ट अपनेको कहने वाले एशियाई देश अपना औद्योगीकरण नहीं कर सके। एशियाके सोशलिस्ट देशोंने साधन-सम्पत्ति न होते हुए भी पश्चिमी यूरोपके देशोंके समान कल्याण राज्यकी स्थापनाको अपना ध्येय बनाया। पर ये हरएकको मुफ्त चिकित्साकी सुविधा भी अभी तक दे नहीं सके।"

कम्युनिज्मकी दीवारें ढह रही हैं। पोलेण्ड ने माना है कि वह प्रत्येकको रहनेके लिए फ्लेट नहीं दे सकता। कम्युनिस्ट पार्टीके नये सेक्रेटरी ग्रेकका कहना है 'सरकारी इमारतें पत्थरी रेगिस्तान है। इनमें एकान्तका अभाव है। हवा भी नहीं आती। शोर-गुल बहुत है। वातावरण दूषित होता है। सामूहिक निवासकी कम्युनिस्ट कल्पना स्वास्थ्य विनाशक है। प्रत्येक व्यक्तिका अपना घर हो। यह बुर्जुवा सिद्धान्त है। इसको मानना कम्युनिस्ट पथसे विच्युति है। पोलैण्डने कम्युनिज्मका पथ छोड़ दिया है। मजदूरोंको उत्साहित किया जा रहा है कि कमाईसे बचा कर अपना घर बनाओ। अपना घर बनाने वालों को सरकार सब प्रकारकी सुविधा देनेको तैयार है। इसके कारण नये-नये इमारती उद्योगोंका प्रारम्भ होगा। कम्युनिस्ट पथ मूर्खताका मार्ग है, यह इससे स्पष्ट है। भारतमें शासक पार्टी यही वरत रही है। पच्चीस सालके बाद भी ७० प्रतिशत लोग निरक्षर हैं। भारतमें ऐसे भी सात जिले हैं जहां स्त्रियां ५ प्रतिशत साक्षर हैं। सोवियत रूसने १९३९ तक रूसी राज्य-क्रान्तिके बीस साल बाद ९३ प्रतिशतको साक्षर बना दिया था। भारतमें १९५१ में ७६ प्रतिशत

निरक्षर थे । १९६१ में ७० प्रतिशत निरक्षर थे । यह है शासक पार्टीकी जनसेवाका प्रमाण ।

पेट भर खानेको नहीं मिलता :—प्रति व्यक्तिको प्रति दिन अन्यून आधसेर अनाज मिलना चाहिए । क्या कांग्रेस शासन यह दे सका ? आर्थिक समीक्षा १९७२ की रिपोर्ट इस प्रश्नका क्या उत्तर देती है ? अकेले बिहार में लू लगनेसे ५०९ व्यक्ति मर गए । प्रधानमंत्री ने सूखाके क्षेत्रोंका दौरा करनेके बदले यूरोपके कम्युनिस्ट देशोंकी सद्‌भावना-यात्रा करना अधिक उचित समझा, वह भी जब ५ जुलाई को राष्ट्रपति यूगोस्लेविया जा रहे हैं । क्या राष्ट्रपति चेकोस्लोवाकिया और स्वीडन नहीं जा सकते थे ? श्रीमती इन्दिरा गांधीके शासन में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन अनाजकी उपलब्धि बढ़नेके बदले घटी है । यह सरकारी रिपोर्टके आंकड़ोंसे सिद्ध है ।

भारतीय प्रणालीका त्याग :- क्योंकि भारतीय कृषि प्रणालीका त्याग कर दिया गया । पशु-पालन और गो सेवाको खेतीसे अलग कर दिया गया । बकरी दूध देती थी, भेड़ ऊन देती थी । इनकी मेंगनी तीन साल खादका काम देती थी । गोबरकी नैसर्गिक खाद कम हो गई । ढोर पालना बन्द हो गया । कम्पोस्ट तैयार किया नहीं गया । फर्टीलाइजरके उपयुक्त बीज ढूंढे गए । ये नि.सत्व और विषयुक्त हैं । फर्टीलाइजर व्यवहार करने पर कीट विनाशकोंका उपयोग करना आवश्यक है । यह विषाक्त अन्न उत्पन्न करता है । अत: अमेरिका और कनाडा ने डी डी.टी.का व्यवहार सर्वथा बन्द कर दिया है । भारतीय खेतीकी प्रणालीको अवैज्ञानिक बताने वालोंने भारतीय खेतीका नाश कर दिया है । फरटीलाइजर-मुखी खेती कर भ रतीय खेतीको परावलम्बी और पराश्रयी बना दिया है । परावलम्बन अमेरिकाका हो, या सोवियत रूसका हो, दोनों ही खराब है । जो रूस ५५ साल बाद भी सोना देकर अमेरिकासे गेहूँ लेता है, वह क्या भारतकी सहायता करेगा ? रूस स्वयं भूखा है । श्रीमती गांधीने रूसके साथ भारतको बांधकर भारतीय प्रगतिका मार्ग रोक दिया है । अमेरिका और कनाडाने डी.डी.टी. का व्यवहार बन्द कर बता दिया कि भारतका अंग्रेजी राज नकल करना ही जानता है । स्वतः बुद्धि शून्य है ।

योग्यता घटी है : –पच्चीस सालोंमें ज्ञान का विस्तार नहीं हुआ है । इसके विपरीत ज्ञान का प्रसार घटा है । राजस्थान-विधानसभाके सदस्योंकी शैक्षणिक योग्यताका दिग्दर्शन इस प्रश्नका सही उत्तर दे देगा ।

सरकारी आंकड़ोंसे स्पष्ट है कि राजस्थान विधानसभाके शासक पार्टीके सदस्य १९५७ की तुलनामें बौद्धिक योग्यता और शिक्षाकी दृष्टि से हीन दर्जेके हैं । इस योग्यताके विधायक जनताके लिए उपयोगी विधि-विधान क्या कभी बनानेमें समर्थ हो सकते हैं ? इससे स्पष्ट है कि इन्दिरा-शासनमें ज्ञानका कोई सम्मान नहीं । पच्चीस सालके बाद यह अवस्था है । क्या यह खुशी मनानेकी वस्तु है ?

कुँआ चोरी चला गया :—विष्णु शर्माने एक कथा लिखी है । एक व्यापारीने विदेश जाते हुए सोनेकी तराजू अपने मित्रके पास रख दी । विदेश गये यात्रीको स्वदेश लौटनेमें कई

वर्ष लग गए। इधर मित्रका लोभ बढ़ता गया। मित्रने तराजू न लौटानेका उपाय सोच लिया। मित्र भी वापिस आ गया। मित्रने तराजू वापस मांगी। लोभी मित्रने कहा 'मित्र ! वह चूहा खा गया।' परदेशसे लौटे व्यापारीके पास मित्रकी बात पर अविश्वास करनेका कोई कारण न था। वह आजन्मके मित्रसे मैत्री भी तोड़ना नहीं चाहता था। अतः अदालतमें जानेका प्रश्न ही नहीं उठता। पर तराजू उसको वापस लेनी थी। परदेशसे लौटा व्यापारी नदी पर स्नान करने गया। साथमें गया मित्रका पुत्र। व्यापारीने लड़केको एक गुफामें छिपा दिया, स्वतः नहा धोकर वह लौट आया। मित्रको अकेला लौटा देखकर शहरी व्यापारीने पूछा 'लड़का कहां रह गया ?' परदेशी यात्रीने कहा, लड़केको चील उड़ा ले गई।

यह सुनकर लोभी व्यापारीकी बुद्धि ठीक हो गई। तराजू निकल आई। लड़का भी खेलता हुआ आ गया। विष्णु शर्मा यदि आज 'पंचतंत्र' लिखता तो वह इस शीर्षकसे कहानी लिखता—"कुआं चोरी हो गया।"

बात पूना शहरके नजदीककी है। पूनासे ३० मील दूरके गाँवकी बात है। ८-९ वर्ष हुए, एक दम्पतिने मिलकर गाँवमें कुंआ खोदा। उसमें पानी भी निकला। पानी भी मीठा निकला। गांव वालोंने दम्पतिके पुरुषार्थ पर विस्मय प्रकट किया। यह कुँआ 'नवरा-वायका चा विहिर' (पति-पत्नीका कुंआ) नामसे आज भी प्रसिद्ध है। इसी गांवके एक किसानको कुँआ बनानेकी इच्छा हुई। कुँआ बनानेके लिए सरकारसे उसको तकावी भी मिली। अन्य लोगोंसे भी मदद मिली। एक दिन सरकारी आदमी देखने आया, कुँआ कहाँ बनाया गया है, और उसकी क्या हालत है। सरकारी आदमी गाँव देख आया। उसको कुँआ कहीं दिखाई नहीं दिया। वह उस किसानके पास पहुंचा। धूर्त किसानने बड़ी गम्भीरतासे कहा– "साहब ! कर्जका मैंने दुरुपयोग किया नहीं। मैंने कुँआ खोदा था। पानी भी निकला। परन्तु वह कुँआ चोरी चला गया।"

किसानके ढोर चोरी चले जाँय, फसल काट ले, अनाज चोरी चला जाय, यह तो बात सुनी थी। पर कुँआके चोरी जानेकी बात सरकारी व्यक्तिने पहली बार ही सुनी थी। उसको अपने ऊपरके अफसरको रिपोर्ट देनी थी। सरकारी कर्मचारी अवाक् खड़ा रह गया। वह क्या उपाय करता ?

मालवण ताल्लुका में म० गांधीकी शताब्दी की स्मृतिमें गांव-गांव नये कुंए खोदनेका प्रोग्राम बनाया गया। सरकारने भी मदद की। इनमेंसे कुछ कुँए खोदे गए। कुछ कुँओंमें पानी भी निकला। कुछ कुओंमें पानी ही नहीं निकला। कुछका बांध काम अधूरा रह गया। कुछ गाँवोंमें कुँएका बांध काम पूर्ण हो गया। पानी भी निकला। पर, योग्य व्यक्ति न- मिलनेसे इनका उद्घाटन समारम्भ नहीं हुआ। गाँव वालोंने निराश होकर कुँएका पानी बरतना शुरु कर दिया और इस प्रकार उद्घाटन हो गया।

एक गांवके किसानके मनमें आया—वह क्यों न अपने खेतमें कुँआ खोदे ? जब खेतके कुँएसे उसको ही लाभ होगा, तो वह कर्ज क्यों ले। कर्ज सूद सहित देना होगा। यह ऋण भार क्यों उठावे ? इस साहसी किसानने साढ़े तीन

हजार रु० खर्च करके कुँआ बाँध लिया। पर इसमें एक बाधा उपस्थित हो गई। कुँआ किसका है? यह एक नया प्रश्न उठ खड़ा हुआ है।

गाँवकी सीमाके भीतर कुँआ बाँधा जा रहा है, यह ग्राम-पंचायतके चतुर सदस्योंने देखा। ये चतुर सदस्य सरकारके पास पहुंचे। बोले–सरकार कुँए बनानेका बड़ा प्रोग्राम धूम-धामसे चल रहा है। पैसेकी कमीसे यह काम रुकना नहीं चाहिए। सरकारकी भी यही इच्छा है। कुँएके लिए सरकारने कर्ज देना स्वीकार किया।

अब जब सरकारी आदमी यह देखने आता कि कुँआ कहां तैयार हो रहा है, कितना हुआ है, तो उसको वह कुँआ दिखा दिया जाता जिसको एक व्यक्ति अपने पैसेसे बना रहा था। सरकारी आदमी खूब अच्छी रिपोर्ट भेजता। पंचायतके चतुर सदस्योंने पंचायती कुँएके कागज तैयार करके सरकारकी सेवामें भेज दिये। सब प्रसन्न, पंचायती कुँआ बनकर तैयार होने वाला है।

पंचायतने कुँआ बनाने पर तीन हजार रुपये खर्च आनेका हिसाब तैयार कर लिया। हिसाब सरकारके पास भेज दिया गया। 'सार्वजनिक पंचायती कुँआ' नामकी पाटी भी तैयार करा ली गयी। पंचायत अब उस कुँएकी खोजमें है, जिस पर यह पाटी लगाई जाय। उस व्यक्तिने जिसने अपना खर्च कर कुँआ बनाया है, वह अपने कुँएको पंचायती कुँआ बनानेको तैयार नहीं। अभी कुँएकी खोज जारी है। प्रतीक्षा कीजिए, कोई मंत्री-उपमंत्री भी उद्घाटन करनेके लिए आने वाले हैं। हि०प्र०

शिक्षाविभागकी ओरसे ग्रामीण क्षेत्रमें एक माध्यमिक स्कूलकी बिल्डिग बनी। ३ वर्ष तक अध्यापकोंका वेतन आदि चुकानेमें कांग्रेस सरकारके सहस्रों रुपये भाई लोगोंने ऐंठे और जब पोल खुलने लगी तो बता दिया गया कि इस वर्ष नदीकी बाढ़में स्कूलकी बिल्डिग और सब फर्नीचर कागजात बह गये जिसका चिह्न भी नही बचा। यह है हमारे देशकी जनताका चरित्र और २५ वर्षोंमें कांग्रेस राज्यकी इस रजत जयन्ती वर्षको अनुपम देन।

मंत्रीकी स्वीकृति :—भारत सरकारके कृषी-राज्यमंत्री श्री शिंदेने महाराष्ट्रके एक सहकारी चीनी समितिकी रजत जयन्ती उत्सव पर बोलते हुए कहा "उनका माथा लज्जासे झुका हुआ है। सहकारी समितियोंने यदि अपनेको जल्दी नहीं सुधारा तो वह इनके सुधारका आन्दोलन उठायेंगे। निर्बल वर्गका सताया जाना सहन नहीं किया जा सकता।" एक साल पहले यही राज्यमंत्री सहकारी समितियोंकी शिकायत सुनकर कहते थे—यह तो मानवीय दुर्बलता है। पर अब वह आन्दोलनका नेतृत्व करनेको तैयार हैं। क्योंकि अनेक सहकार-सम्राट् विधान सभाके चुनावमें इन्दिरा कांग्रेसको हराकर चुने गए। जिला परिषदोंके चुनावमें भी इन्होंने इन्दिरा कांग्रेसको अनेक जगह हराया। श्री शिंदेके कोपका तो कारण यह है। सहकारी चीनी कारखानों पर अब इन्दिरा-कांग्रेसका झण्डा नहीं फहरा रहा। श्री शिंदेके लिए यह स्थिति अकल्पनीय है।

जर्मनीमें राष्ट्र भक्ति :—उड़ीसाके भूतपूर्व गवर्नर श्रीखोसलाका यह निजी अनुभव है:—

श्री खोसला अपने एक मित्रके साथ प०

जर्मनीकी यात्रा पर गए। उन्होंने एक जर्मन युवकको अपनी यात्रामें दुभाषिया रखा था। यात्रा समाप्त होने पर उन्होंने दुभाषियाका हिसाब कर दिया। जर्मन युवकने प्राप्त रकमकी रसीद काट कर दे दी। खोसला साहबके लिए यह नया अनुभव था। पर दोनों मित्र कुछ बोले नहीं। उनके पास अब भी कुछ 'मार्क' बचे रह गए थे। ये उनके लिए सर्वथा निरुपयोगी थे। दोनोंने सलाहकर बचे मार्क भी उसी जर्मन युवकको दे दिये। जर्मन युवकने फिर अपनी रसीदबुक निकाली। यह देखकर दोनों भारतियोंने कहा—"यह क्या कर रहे हो। यह तो हमने तुमको 'टिप' दी है।"

जर्मन युवकने रसीद आगे बढ़ाते हुए उत्तर दिया—ठीक है आपने टिप दी है। पर यह है तो मेरी आमदनीका एक भाग ही। क्या आप चाहते हैं कि मैं अपने देशकी सरकारको धोखा दूं और अपने देशके आर्थिक विकासके मार्गमें बाधक सिद्ध होऊं ?

यह है राष्ट्र भक्ति ! क्या इसमें काला पैसा ठहर सकता है ? यहां काला धन १३ अरब रुपयेसे अधिक है। यह इस बातका प्रमाण है, भारत-भक्ति शून्य है यह देश। क्या इसी देशकी रजत जयन्ती मनानेकी तैयारी हो रही है ?

कम्प्युटर और ज्योतिष :—प० जर्मनीकी एक एलेक्ट्रोनिक कम्पनीने एक ऐसा कम्प्यूटर बनाया है, जो दो सेकेंडोंमें ज्योतिषके प्रश्नका उत्तर बताता है। प्रश्नकर्त्ताको अपना नाम लिंग, जन्मतिथि समय लिखकर बताना होगा। इसके बाद कम्प्यूटर भविष्य बता देगा। भारत के ज्योतिषियोंको यह एक नई चुनौती है। क्या मानव-बुद्धि पर मशीन विजयी होगी ?

सामान्य ज्ञानका स्तर :—साक्षरतामें केरल भारतमें सबसे आगे है। यहींका किस्सा है। कम्युनिस्ट शासन है। पाठ्य पुस्तकोंका प्रकाशन सरकार करती है। सामान्य ज्ञानकी पुस्तकमें गांधीजीकी जन्मभूमि राजघाट बतायी गयी है। राजघाट गुजरात प्रान्तमें बताया गया है। राजघाटमें गांधीजीका शव जलाया गया था। बाईबलके अनुसार 'मिट्टीसे पैदा हुआ मानव उसी मिट्टीमें मिल गया।' अतः राजघाटको जन्म स्थान माननेमें आपत्ति क्यों ? पर केरल सरकारको ये छपी तीन लाख पुस्तकें बेचना रोक देना पड़ा। पाठ्य पुस्तकोंके प्रकाशन-कार्यको सरकारी हाथमें लेनेका यह है दुष्परिणाम। यदि प्रकाशक कोई व्यक्ति या कम्पनी होती तो इस गलतीका फल भोगती और दण्ड पाती, पर अब जो हानि हुई है, वह दरिद्र जनताको उठानी पड़ेगी। कम्युनिज्म और सोशलिज्म जनताको गरीब बनानेका एक तरीका है।

बचने कि दरिद्रता :—सरकारी हिसाबसे २२ करोड़ लोग गरीबी रेखासे नीचेके हैं। अर्थात् इनकी मासिक आय १५ रुपयेसे भी कम है। प्रधान मंत्री और श्री सुब्रह्मण्यम् कागजी योजनायें पेश करके जनताको फुसलाना चाहते हैं। पंचम नियोजनका लक्ष्य इन २२ करोड़ लोगोंका जीवन मान ऊंचा करना बताया गया है। क्या यह सम्भव है ? एक उदाहरण लीजिए।

कल्पना कीजिए २० करोड़ लोगोंको ५ मीटर प्रति व्यक्ति कपड़ा देनेकी योजना बनाई जाती है। इसका अर्थ हुआ कि १०० करोड़ मीटर कपड़ा तैयार करना होगा। इतना कपड़ा साल भरमें तैयार करनेके लिए ३८० करोड़

रुपये पूंजीकी आवश्यकता होगी। सोचनेकी बात यह है कि क्या सरकारकी शक्तिमें यह करना सम्भव है ? यह हुआ न जनताके साथ वाक्-छल।

'विलासिता चीजें तैयार न की जायगी।' यह बात भी कोई अर्थ नहीं रखती। टेलीविजन रेडियो मोटर क्या विलासिताकी चीज न मानी जायगी ? क्या इनका निर्माण सरकार रोक देगी ? फिर प्रधानमंत्रीका प्रचार कैसे होगा ? किसी दृष्टिसे देखिए सरकारकी पंचम पंच-वर्षीय योजना कागजी है। यह गरीबी दूर करनेके लिए न होगी। गरीबोंको पीसनेकी योजना होगी। सुब्रह्मण्यम्की डी.डी.टी कृषि-नीतिने देश का स्वास्थ्य नष्ट कर दिया है। पंचम नियोजन भी इसी तरहका एक शाब्दिक चमत्कार होगा।

महायुद्ध टला :—प्रेजीडेण्ट निक्सन शान्ति-दूत सिद्ध हुए। रूस और अमेरिकाने माना कि वे एक दूसरेको नष्ट नहीं कर सकते। दोनों एक दूसरेको मार नहीं सकते। अतः अच्छा यही होगा कि दोनों "सहजीवन"का सिद्धान्त मानें। कम्युनिज्मको 'विश्व-क्रान्ति' का विचार छोड़ना चाहिए, चाहे चीन कुछ भी कहे। ब्रेजनेव-निक्सनका १२ सूत्री वक्तव्य विश्व-युद्धकी संभावनाको दूर १९९० से परे ले जाता है। सम्भव तो यह है कि बीसवीं शतीमें विश्व-महायुद्ध अब हो ही नहीं। क्योंकि—

(१) माओत्से तुंगके बाद क्या चीनमें कम्यून बने रहेंगे ? चीनी जनताको क्या माओ दो कोटोंसे और एक अधिक कोट दे सकता है ? यदि नहीं तो माओका क्या मूल्य ?

(२) साधारणजनोंका जीवन-मान ऊंचा करनेके लिए पूंजी चाहिए। यह पूंजी जापान और अमेरिका दे सकते हैं। अमेरिकाको बाजार चाहिए। पर जब तक चीन विश्व-क्रान्तिकी बात कहता है, तबतक चीनी जनता प्रगति नहीं कर सकती। वह अन्तरराष्ट्रीयताका पथ छोड़े। अमेरिका जापानके समान राष्ट्रवादका पथ पकड़े।

डा० किसींजरका पुनः पैकिंग जाना इस बातका सूचक है कि चीन विश्व-क्रान्तिका मार्ग छोड़नेके लिए विचार बना रहा है। उत्तरीय वियतनाममें जहां ४०-५० हजार चीनी थे, आज वहां एक भी नहीं है। अतः टूटे पुलों, रेलवे सड़कोंको बनाने वाला या मरम्मत करने वाला कोई नहीं।

(३) सोवियत रूसमें कम्युनिज्म समाप्त हो गया है। जो है, वह सैनिक शक्तिके बल पर है। लेज़िसविले सदृश करोड़पति रूसमें उत्पन्न होने लगे हैं। इसकी एक कपड़ेकी फैक्टरीमें काम करने वाले मजदूर अपनी मोटर में बैठकर आते थे। फैक्टरी काकेशियाके पहाड़ोंमें थी। यह इस बातका प्रमाण है कि कम्युनिज्मकी आत्मा देह छोड़ गई है।

(४) इस दशामें रूसके लिए अमेरिकासे लड़नेकी बात सोचना पागलपन है। ब्रेजनेवने इस सत्य को मान लिया है। इसके वास्ते जनरल ग्रेचकोकी बात तक नहीं मानी गई। निक्सनका शाही स्वागत किया गया। यूक्रेनकी कम्युनिस्ट पार्टीके सेक्रेटरीको पार्टीके सेक्रेटरी पदसे हटा दिया गया।

(५ टेक्नालोजी (यंत्रतंत्र-विज्ञान) में रूस अमेरिकासे पिछड़ गया है। निक्सन कीव दो घंटे देरसे पहुंचे। क्योंकि रूसी विमान

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

स्वतन्त्र भारतका २६वां (रजतजयन्ती) वर्ष लग्न

शिमला-शिखर-सम्मेलनकी ग्रहस्थितिका दिग्दर्शन

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

गत वर्ष इन्हीं दिनों 'ज्योतिष्मती' वर्ष १८ संख्या ४ श्रावण मासके अङ्कमें पृष्ठ १४ पर स्वतन्त्र भारतके २५वें वर्ष लग्न कुण्डली के नीचे इक्कबाल योगका फल हमने इस प्रकार लिखा था—

"भाग्येश गुरु पंचमस्थ होकर भाग्य लाभ और लग्नको देख रहा है और इस वर्षमें 'इक्कबाल योग' बन रहा है, अतः सभी अप्रत्याशित संकटोंको पार करके भारत अपने अतुल पराक्रमका परिचय देगा । संगठन और सैन्य शक्ति दृढ़ बनेगी । उद्योग पनपेगा । भूगर्भसे मूल्यवान् पदार्थ प्राप्त होंगे और भारत अधिकांशमें आत्मनिर्भर होगा ।"

पाठकोंने इस समाप्त होने वाले २५वें वर्षमें भारतका अतुल पराक्रम, पाकिस्तानसे अप्रत्याशित युद्ध-संकट पर विजयके रूपमें प्रत्यक्ष देखा है । इक्कबालयोगके फलस्वरूप भारतका इकबाल (गौरव) संसारमें बढ़ा है । गत वर्ष इन्हीं दिनों 'श्रीविश्वविजयपंचांग' सं० २०२९ वि०की दैवज्ञकी दृष्टिके अन्तमें पृष्ठ २१ पर स्पष्ट लिखा था—"...... २७ नवम्बरसे २३ दिसम्बर ७१ तक गुरु निर्बल (अस्त) रहेगा, यहां भारत पाकमें जमकर टक्कर हो जावे तो आश्चर्य नहीं ।........"

अन्ततोगत्वा उक्त अवधिमें यह होकर रहा । संसार जानता है, ३ दिसम्बरको भारत पाक युद्ध प्रारम्भ हुआ और २३ से पहले समाप्त हो गया । इस वर्षका राजा मंत्री गुरु है और स्वतन्त्र भारतके २५वें वर्षमें भाग्येश होकर त्रिकोणमें बलवान् बन गया था । देवगुरु अध्यात्म शक्ति-सम्पन्न शान्तिप्रिय ग्रह है, अतः इसने भारतका गौरव बढ़ाया । शुभग्रह गुरु शुक्र वक्री होने पर विशेष शुभप्रद बन जाते हैं । गत २५ अप्रैल ७२ से गुरु वक्री चल रहा है, २४ अगस्तको यह मार्गी होगा । ग्रह संयोग की बात देखिये कि २५ अप्रैलके बाद ही शिखर सम्मेलनका विशेष प्रयत्न होने लगा । २६ मई ७२ से दूसरा शुभ ग्रह शुक्र भी वक्री हो गया, यह ९ जुलाईको मार्गी हो जावेगा ।

(शेष पृष्ठ ७३-७४-७५ पर देखें)

बिगड़ गया था ! म० कोसीजिनको क्षमा मांगनी पड़ी । रूस कितना पीछे है, इसका सहजमें इससे अनुमान किया जा सकता है । अतः बीसवीं सदीमें महायुद्धका होना प्रेजीडेंट निक्सनने कठिन कर दिया है । इस एक कारण से निक्सनका नवम्बर १९७२ में पुनः प्रेजीडेण्ट चुने जाना सम्भव है ।

विचार-धाराओंकी टक्करका अगले पच्चीस वर्षोंमें महत्व बढ़ेगा नहीं । इस दशामें आदर्शोंकी रक्षाके लिए महायुद्ध भी न होगा । राष्ट्रवादके पुनरुत्थानका भारत अभिनन्दन करनेको तैयार है ।

पाश्चात्य ज्योतिषकी आधारशिला पर ग्रहों तथा विद्याका पारस्परिक सम्बन्ध

[लेखक : श्री पशुपतिनाथप्रसाद गुप्त ज्योतिषी सुगौली, चम्पारण, विहार]

अत्यधिक लोक-प्रिय "ज्योतिष्मती" नामक त्रैमासिक पत्रिकाके वर्ष —१५ की संख्या २ (माघ) वाले अंकमें प्रकाशित "जन्माङ्ग-ज्योतिष" नामक निबन्धके प्रणेता श्री पं० कालीचरण शर्मा ज्यो० सनावद (म०प्र०) की इच्छा की पूर्तिके लिए मैं अपना प्रस्तुत लेख उनके तथा अन्य अभिरुचि पूर्ण पाठक-वृन्दके समक्ष समर्पित कर रहा हूँ।

पाश्चात्य ज्योतिषके ज्ञाताओंके मतानुसार किस-किस ग्रहका सम्बन्ध किस-किस विद्या अथवा शास्त्र, अथवा विज्ञान अथवा विषम-शृंखलासे होता है उसका विशद वर्णन किया जा रहा है।

सूर्यका सम्बन्घ राजनीति-शास्त्र तथा चिकित्सा शास्त्रसे होता है। यदि सूर्यकी युति बृहस्पतिके साथ किसीके जन्म-पत्रके जन्म-चक्र में हुआ हो तो यह प्रकट है कि सुयोग्य चिकित्सकों तथा वैद्योंके रूपमें ऐसे जातक यश पानेमें सफल होंगे।

यदि सूर्यका सम्बन्ध बुधसे हुआ हो तो यह स्पष्ट है कि जीवनमें ऐसा जातक रोगाका निदान करनेमें यथाशीघ्र सफल होता है। रोगों का उचित निदान करनेमें सफल होकर ऐसा जातक निकट-भविष्यमें प्रवीण तथा अनुभवी चिकित्सक (डाक्टर) के रूपमें लोक-प्रिय तथा यशस्वी बन जाता है।

मंगल (भौम) शल्य-क्रियात्मक यंत्रों तथा उपादान-उपकरणसे साक्षात् सम्बन्ध रखता है। इसलिए, यदि सूर्य पर मंगलकी शुभ दृष्टि पड़ती हो तो यह निर्विवाद-सा है कि ऐसा जातक सुयोग्य तथा प्रख्यात शल्य-चिकित्सक (सर्जन) सिद्ध होता है।

सूर्यका सम्बन्ध जहां औषधिसे है वहां शुक्रका सम्बन्ध नारी-जगत्से तथा बृहस्पतिका सम्बन्ध शिशु-जगत्से है। इसलिए, यदि इन तीनों ग्रहोंका सम्बन्ध युति अथवा दृष्टिसे हो तो मातृ-शिशु कल्याण-शिविर तथा प्रसव-गृहमें प्रतिष्टा-प्राप्त चिकित्सक तथा विशेषज्ञ दृष्टिगत होते हैं। प्रसूति-गृहमें काम करने वाली सेविकाओं तथा धाइयोंमें भी ऐसा संयोग मिलता है।

यदि मंगल सरीखे प्रबल तथा साहसी ग्रह की दृष्टि शुक्र पर पड़ती हो तो इसका यह परिणाम होता है कि ऐसा जातक यौन-रोग-विशेषज्ञ हो जाता है। यदि सूर्य तथा शनिका योग हो जाय तो ऐसे यौन-रोग-विशेषज्ञको यथाशीघ्र ही प्रख्याति तथा लोक-प्रियता उपलब्ध हो जाती है।

अपरंच, यदि सूर्य तथा शनिमें प्रत्यक्ष पारस्परिक सम्बन्ध हो गया हो तो यह अकाट्य निष्कर्ष है कि ऐसा जातक चर्म-रोग-विशेषज्ञके रूपमें निकट-भविष्यमें सुप्रसिद्ध तथा अनुभवी माना जाता है।

अन्य ग्रहोंके प्रभावसे सर्वथा मुक्त-विमुक्त होकर यदि सूर्य तथा शुक्र किसीकी कुण्डलीमें छठे अथवा आठवें भावमें अवस्थित हों तो इस अवस्थितिके परिणामरूपमें वह जातक सुयोग्य तथा सुश्रुत नेत्र-रोग-विकासका विशेषज्ञ बन जाता है।

यदि किसी जातकके लग्न-चक्रमें लग्न-भाव अथवा आठवें भावमें सूर्य तथा शनिकी सङ्गति हो तो यह निश्चित है कि वह अपने जीवनमें एक दन्त-रोग विशेषज्ञ तथा चिकित्सक होगा ही।

नवें अथवा पांचवें भावमें सूर्य तथा बुध का संयोग यह अभिव्यक्त करता है कि ऐसा जातक एक दिन कर्ण-नासिका कंठ सम्बन्धी रोगोंका निदान करनेमें पटु होगा तथा इन रोगोंकी चिकित्सा करनेमें सदा सफल सिद्ध होगा।

यदि नवें भावसे प्रत्यक्षतः अथवा अप्रत्यक्षतः सूर्य, शुक्र, राहु तथा प्रजापति (यूरेनस) का सम्बन्ध हो तो जातक "एक्सरे विज्ञान" के आधार पर रोग-निदान करनेमें सफल तथा अनुभवी प्रमाणित होता है। यदि यूरेनसका अन्योन्याश्रय सम्बन्ध सूर्यके साथ हो तो जातक चिकित्सा-विभागमें शोध-कार्य(रिसर्च-वर्क) करनेका अधिकारी होता है।

चन्द्रमा यदि स्थिर-राशिमें अवस्थित है तथा मंगल-बुध तथा शुक्रसे किसी प्रकार भी सम्बन्ध है तो ऐसा जातक मेकैनिकल इन्जि-नियरिङ्गमें प्रवीण होता है। चर-राशिमें चन्द्रमाकी संस्थिति होनेसे (यदा-कदा द्विस्व-भाव राशिमें होनेसे भी) जातक स्टीमर अथवा जहाज चलानेके शास्त्र तथा कलामें प्रवीण होता है। चन्द्रमाके अनुकूल तथा बली होने पर कल्पनाशील होकर व्यक्ति उपन्यास-नाटक कथा गल्प-शास्त्र एवं मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र तथा तर्क-शास्त्र (नीति शास्त्र में भी प्रवीण-कुशल सिद्ध होता है।

मंगल (भौम) के जन्म-कुण्डलीमें प्रबल तथा अनुकूल होनेसे जातक रसायनशास्त्र, हत्या-शास्त्र, रण-मल्ल विद्या तथा क्षौर क्रिया-शास्त्रमें पटुता प्राप्त करता है। राहु तथा केतुका सम्बन्ध गुप्त-विद्या तथा रहस्य-विद्यासे होता है।

बुधके कारण ही जातक सुयोग्य गणितज्ञ (गणित-शास्त्रवेत्ता), वाग्शास्त्रपटु, कूटनीतिज्ञ तथा तर्कशास्त्रप्रवीण होता है। सम्पादन-कला, प्रकाशन-कला, पत्रकारिता-कला, नियम-कला, वाणिज्य-शास्त्र, लेखन-कला, लेखा-शास्त्र, कर-शास्त्र तथा प्रशासन-शास्त्रमें बुध ग्रहके अनुकूल तथा प्रबल होनेके कारण ही निष्कर्ष निकलता है।

बृहस्पतिका सम्बन्ध है धर्म-शास्त्र, नीति-शास्त्र, राजनीति शास्त्र तथा न्याय-नियम शास्त्र से। शुक्रका सम्बन्ध है गृह-विज्ञान, यौन शास्त्र, ललितकला, संगीत-गान, नृत्य-कला, शिशु-पालन कला, पशु-पक्षी-पालन-विज्ञान, उद्यान-कला तथा चित्रकलासे।

शनिका सम्बन्ध हैं दर्शनशास्त्र, तप-विद्या, योग-विद्या, गुप्त-विद्या, यंत्र-तंत्र-मंत्र-विज्ञान तथा मनोविज्ञानसे।

मनचाही सन्तान प्राप्तिके उपाय

[लेखक :—ओंकार नाथ त्रिवेदी, कटरा, बाराबंकी, उ०प्र०]

मन चाहे रूपमें पुत्र या पुत्री प्राप्त करनेके लिए कुछ सिद्धान्तों पर मैंने विचार किया है। प्रथम सन्तान, इच्छानुसार पुत्र या पुत्री हो इस सम्बन्धमें मेरा शोध कार्य चल रहा है। परन्तु प्रथम सन्तानके बाद होने वाली सन्तानों पर नियन्त्रण किया जा सकता है। यदि एकसे अधिक सन्तानें हों तो वह कार्य और भी सरलता से किया जा सकेगा। इसके लिए आपको यह पता लगाना होगा कि जो बच्चा उत्पन्न हुआ है वह किस मासकी किस तारीखको गर्भमें आया था। सर्वप्रथम बच्चेकी जन्म तारीख (महीना और सन् समेत) और जन्मसमय कागज पर लिखें। फिर जिस अक्षांश पर बालकका जन्म हुआ हो उस अक्षांशकी लग्नसारिणी देख कर यह ज्ञात करें कि किस लग्नमें बालक या बालिकाका जन्म हुआ। आसपासकी अक्षांश सारिणीसे भी काम चल सकता है। प्राय: सभी बड़े पंचांगोंमें प्रतिदिन किस समय किस लग्न का उदय होता है यह देखा जा सकता है। कागज पर जन्म-तारीखके बाद जन्म लग्न नोट करें। अब आपको बच्चेके गर्भमें आनेकी अर्थात् आधान तारीखका पता लगाना है।

बच्चा प्राय: ९ मास ३ दिनसे लेकर ९ मास १९ दिन तक गर्भमें रहता है। अतः जन्म तारीखमें पहले ९ मास ३ दिन और फिर ९ मास १९ दिन घटा दें। इस भांति जो तारीखें प्राप्त होंगी उन्हींके बीचमें (अर्थात् उन्हीं १६ दिनोंमें) आधानकी तारीख होगी।

इसे और भी सुगम बनानेके लिए यह नियम भी ध्यानमें रक्खा जा सकता है। यदि जन्म समयका चन्द्र—चर राशिमें हो तो ९ मास ३ दिनसे ९ मास ८ दिनके बीच, स्थिर राशिमें हो तो ९ मास ९ दिनसे ९ मास १३ दिनके बीच, द्विस्वभाव राशिमें हो तो ९ मास १४ दिनसे ९ मास १९ दिनके बीच आधान काल होगा।

अब आपको ६ दिनका समय प्राप्त हो जायगा जिनमें आधानकी तारीख होगी। यह ध्यान रखना चाहिए कि कृष्णपक्षोत्पन्न बालकों की आधान तारीख शुक्ल पक्षमें और शुक्ल-पक्षोत्पन्न बालकोंकी जन्म तारीख कृष्णपक्षमें पड़ती हैं। जिस लग्नमें जन्म हुआ है उसी राशि में, इन छह दिनोंमें, जब चन्द्रमा रहेगा वे ही दिन आधानके होंगे। चन्द्रमा एक राशिमें प्राय: दो दिन (सवा दो से ढाई दिन तक) रहता है। अत: आपको दो दिनोंका समय प्राप्त हो जायगा। ज्योतिष न जानने वाले इन्हीं दो दिनों मेंसे कोई एक दिन आधानकी तारीख मानकर काम चला सकते हैं। ज्योतिष जानने वाले लग्न स्पष्ट करके देखें कि किस नक्षत्रके किस चरणमें जन्म है, उसी नक्षत्रके उसी चरणमें जिस दिन चन्द्रमा होगा वही आधानका दिन होगा। यह तारीख नोट करलें। यही आधार है। उदाहरणार्थ १५ मार्च १९७१ आधानकी तारीख प्राप्त हुई। अब यह ज्ञात हुआ कि मार्च ७१में जो गर्भ आया था वह पुत्र था। अत: मार्च ७१ पुत्रका महीना है। यदि कन्या का जन्म हुआ है, तो उक्त मार्च ७१ कन्याका

महीना है। मार्च यदि पुत्रका है तो अप्रैल कन्याका होगा, मई पुत्रका, जून कन्याका, जुलाई पुत्रका, अगस्त कन्या, सितम्बर पुत्रका, अक्टूबर कन्याका, नवम्बर पुत्रका, दिसम्बर कन्याका, जनवरी–फरवरी ७२ पुत्रका और मार्च ७२ कन्याके महीने होंगे। इसी भांति हिसाब लगाते जाएं। यह स्मरण रक्खें कि जनवरी–फरवरीको एक महीना माना है, अतः सन् ७१में मार्च यदि पुत्रका महीना है तो सन्७२ में मार्च कन्याका महीना होगा। इसके साथ ही एक प्रसिद्ध प्राचीन सिद्धान्तका भी ध्यान रखना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि मासिक धर्मके चौथे, छठे–आठवें दसवें—बारहवें—चौदहवें–सोलहवें दिनोंमें पुत्र और शेष दिनोंमें कन्याका गर्भ आता है। इनमें भी ५-६-८-९-१०-१२-१४-१५-१६व दिन सुयोग्य सन्तान देने वाले हैं।

× × ×

इस प्रकार जनसाधारणकी सुविधाके लिए, जिस उपायका वर्णन हमने ऊपर किया है, उसका रहस्य यह है कि नारीका एक मासिक धर्म पुत्र देने वाला और दूसरा कन्या देने वाला होता है। सभी नारियोंमें यह क्रम स्थायी रूपसे आजीवन चला करता है। इसकी जानकारी कर लेने पर आप जब चाहें तब पुत्र और जब चाहें तब कन्याकी प्राप्ति कर सकते हैं। इस गणनाके लिए हमने जनवरी और फरवरीको एक मास मान लेनेकी बात कही है। इस भाँति वर्षमें केवल ग्यारह मासिक धर्म पड़ेंगे। किन्तु वास्तविकता यह है कि मासिक धर्म चान्द्र मासानुसार होता है। और इसलिए, यदि ठीक समय पर हो तो ८८वें दिन (साढ़े सताइस दिन पर) मासिकका समय माना गया है। अतः वर्षमें तेरह मासिक पड़ेंगे। और जनवरी फरवरीको एक मास मान लेनेकी बात इसलिए कही गयी है। अतः यदि वर्षमें ग्यारहके स्थान पर तेरह मासिक धर्म कहे जायं तो अधिक उपयुक्त होगा और उपर्युक्त सिद्धान्तको और अच्छी तरह प्रयोगमें लाया जा सकेगा।

सबसे पहले मासिक धर्मकी तारीखें किसी डायरी पर नोट करते जायें। आपको यह पता लग जायगा कि आपकी पत्नीको कितने दिनों पर मासिक होता है। प्रायः सभी स्त्रियोंको इसका सहज ज्ञान होता है। गर्भ धारण (के पूर्व) वाले मासिककी तारीख विशेष रूपसे स्मरण रक्खें। फिर सन्तानोत्पत्तिके बाद जब प्रथम बार मासिक हो तो उस तारीख में, गर्भ धारणके पूर्व वाली तारीख घटा दें। जो भी मास दिन आवें उन सब के दिन बना लें। अब जितने दिनोंमें आपकी पत्नी को मासिक होता हो उन दिनोंकी संख्यासे पूर्व प्राप्त दिनों को भाग दें। जो भाज्यफल आवे उससे आप यह सहजही जान सकेंगे कि बीच में कितने मासिकों का समय निकल गया है। पुत्र या कन्या सन्तानसे आप जान चुके होंगे कि अमुक तारीख वाला मासिक पुत्रप्रद था, दूसरा कन्याप्रद तीसरा पुत्रप्रद और इसी क्रमसे होना चाहिए। उक्त भाज्यफलमें इसी प्रकार हिसाब लगाने पर आपको ज्ञात हो जायेगा कि सन्तान प्राप्तिके बादका मासिक धर्म पुत्रप्रद है ? अथवा कन्या प्रद ? सभी लोग इस सिद्धान्तका सदुपयोग कर सकते हैं।

जो लोग सुन्दर-स्वस्थ-दीर्घायु सन्तान चाहते हैं उन्हें गण्डान्त, निधन नक्षत्र, सूर्योदय – सूर्यास्त, दिनका समय, भद्रा, रिक्ता-तिथि, पर्वकाल, श्राद्धके दिन आदिका त्याग करके, शुभ मुहूर्त्तमें सुगन्धित वातावरणमें, पवित्रता और प्रसन्नताके साथ गर्भाधान करना चाहिए।

एक आत्मकथ्यः (उतरार्द्ध)

सांसारिक-सुख, कला, चतुराईका प्रतीक ग्रह शुक्र (२)

[ले०—श्री बालकृष्ण इन्दोरिया]

और महर्षि गर्गकी 'गर्ग संहिता' के अध्यन अनुशीलनमें व्यस्त होकर इन पंक्तियोंका लेखक यजुर्वेदके अध्ययनमें लीन था। शुक्रके विभिन्न फलोंके पारस्परिक विरोधात्मक तथ्योंके ऊहा-पोहमें मैं परेशान था। न जाने कब निद्रादेवीने मुझे अंकशायी बना दिया। मैंने देखा कि आचार्य शुक्रदेव स्वयं उपस्थित होकर आशीर्वाद देते हुए मुस्करा रहे हैं। आचार्यवर बोले—'बालक ! तुम क्यों ऐसी दुष्कर साधनामें लगे हो ? तुम्हारी क्या कामना है ?' मैंने अनुनय निवेदन किया कि—'आचार्यवर शुक्रदेव ! मेरे कोई कामना-भावनाका लक्ष्य नहीं है। मैंने आपके स्वरूपकी जानकारी महर्षि गर्गके माध्यम से आपकी आत्मकथाके रूपमें प्राप्त की है। आप मेरे परम पूज्य हैं अतः निवेदन करता हूँ कि मुझ पर भी कृपा करके अपने फलित तथ्यों से अवगत करावें। मैं सदैव आपका कृतज्ञ रहूँगा।' आचार्यवर अपनी एकाक्षी दृष्टिको केन्द्रित करते हुए बोले—'भट्ट ! मैं तेरी उपासना पर प्रसन्न हूँ अतः भोला-सत्पात्र समझकर मेरी आत्मकथाके फलाचार अध्यायको संक्षिप्त रूपमें सुनाउंगा। एक बातका ध्यान रखना कि मेरे फल स्वतन्त्र स्थितिके होंगे, क्योंकि अन्य ग्रहोंकी संगति, दृष्टिसे मैं इनमें आंशिक परिवर्तन कर लिया करता हूं। कलियुग प्रसिद्ध व्यक्तियोंके उद्धरण देकर फलोंको स्पष्ट करूंगा। मैं अपनी पूर्व दिशाकी स्थिति एवम् पश्चिम दिशाकी स्थितिके फलोंमें भी आंशिक अन्तर रखता हूं। क्योंकि मैं पूर्वमें सूर्यका अग्रभागी, पश्चिममें सूर्यका अनुगामी होता हूँ। मेरे फलों को ध्यानपूर्वक हृदयंगम करना'......

प्रथम भावमें स्थिति :

'मैं लग्न भावमें होकर सुख पूर्वक जीवन बितानेके लिये पर्याप्त धनका दाता होता हूं। मैं मेष सिंह धनुमें होकर देरसे विवाह कराता हूँ। ऐसे जातक अविवाहित रहनेकी प्रवृति वाले या द्विभार्या योग वाले होते है। मैं वृष लग्नमें होने पर जातककी पत्नीको व्यभिचारी वृति देता हूँ। कन्यामें होकर अविवाहित रहनेकी वृत्ति, स्त्रियोंके प्रति अत्यल्प आकर्षण वाला बना देता हूँ। मकरमें होकर मैं विवाहसे पूर्व बहुत लड़कियोंको नापसंद कराके साधारण लड़की से विवाह सम्पन्न कराता हूं। मैं मिथुन तुला कुंभमें होकर सुशिक्षित, बुद्धिमान् पत्नीका पति बनाकर द्विभार्या योग भी संभव कराता हूँ। कर्क वृश्चिकमें होने पर स्त्री द्वारा सुखी, मीनमें एकाधिक शादियों वाला बनाता हूँ। मैं लग्नमें होकर धनसंचयी नहीं रहने देता। ऐसे जातकोंको घरमें मैं तीसरे-पन्द्रहवें वर्ष मृत्यु कराकर शोकातुर बनाता हूं। मैं कवि, नाटककार, उपन्यासकार गायक, चित्रकार बनाता हूँ। मेरी लग्नस्थिति गुप्तरोगी बनाती है। स्त्रियोंकी कुण्डलीके लग्नमें होकर मैं वन्ध्या योग बना दिया करता हूँ। महामना तिलकके कर्क लग्नमें, माओत्सेतुंगके मकर लग्नमें, स्टालिन,

सम्राट अकबर, महात्मा गांधीके तुला लग्नमें स्थित था।'

द्वितीय भावमें स्थिति :

'मैं धन भावमें पुरुष राशियोंमें शुभ एवम् स्त्री राशियोंमें अशुभ फल देता हूँ। मेष सिंह धनुःमें होकर नौकरीसे धनार्जन कराता हूँ। मेरे ऐसे जातकोंको सट्टा, लाटरी, रेसका शौक होता है। मैं इनको आकस्मिक धनकी प्राप्तिसे वंचित करता हूं। मैं वृष कन्या मकरमें होकर पैतृक सम्पत्तिको नष्ट कराके व्यभिचारीवृत्ति, सरकारी नौकरीमें प्रगति, पत्नी सर्वदा बिमार आदि फल देकर दुःखी बनाता हूं। मिथुन तुला कुंभमें होकर व्यापारमें प्रगति, पूर्वार्जित इस्टेटकी प्राप्ति किन्तु सन्तान चिन्तातुर बनाता हूं। कर्क वश्चिक मीनमें होकर मैं लेखनमें यश, स्त्री सुखमें कमी, बत्तीसवें वर्ष आकस्मिक हानि, अड़तीसवें वर्ष आकस्मिक लाभ प्रदान करता हूँ। इस भावमें रवि बुधके योगसे ज्योतिषमें पूर्ण सफलता देता हूँ। मैं अरविंद घोषके कर्क लग्नके सिंहमें बादशाह नीरोके धनुः लग्नके मकरमें, महाराणा प्रतापके मकर लग्नके कुंभ में, रामकृष्ण परमहंसके कुंभ लग्नके मीनमें रवीन्द्रनाथ टैगोरके मीन लग्नके मेषमें धन भावमें स्थित था।'

तृतीय भावमें स्थिति :

'मैं सहज भावमें होकर गुरुवत् फल देता हूँ। इस भावमें अकेला होकर मैं अशुभ फल देता हूं। मैं ३-६-८-१२ भावमें अशुभ ही होता हूँ। मेरे ऐसे जातक कामुक, व्ययी, एकाधिक विवाह करने वाले होते हैं। मैं विवाहमें विघ्न, पत्नीसे वियोग, विजातीय पत्नी एवम् अधिक आयुकी गंभीर स्त्रीको पसंद कराके दाम्पत्य जीवनमें बाधा देता हूं। यदि मैं पुरुष राशिमें होता हूं तो अच्छी स्त्री एवम् स्त्री राशिमें होता हूँ तो अव्यवहारिक स्त्रीसे विवाह कराता हूँ। मैं इस भावमें मंगलसे दूषित होने पर हाथमें मेरा प्रतीक कंकण चिन्ह देता हूँ जो मुष्टि-मैथुनकी वृत्तिका प्रतीक है। इस भावमें होकर मैं भोजनके बाद स्त्रीसंगकी इच्छा देता हूं जिससे पाचनशक्तिमें क्षीणता देकर प्रकृति बिगाड़ देता हूँ। मैं जार्ज बर्नाडशाके वृष लग्नकी कर्कमें गुरु नानकदेवके सिंह लग्नकी तुलामें, रानी एलिजाबेथके धनु लग्नकी कुंभमें, महारानी लक्ष्मी बाई एवम् वि० चर्चिलके तुला लग्नकी धनुमें था।'

चतुर्थ भावमें स्थिति :

'मैं सुख भावमें भी गुरुवत् फल देता हूँ। साधारणतः केन्द्रभावमें शुभप्रद कहा जाता हूँ। इस भावमें मातृसुखका क्षय करता हूँ। इस भावमें स्त्री राशिमें होकर मैं पितृ सुखका बिगाड़ करता हूँ। मैं व्यापारमें यश देता हूं किन्तु अस्थिरता बनाये रखता हूं। ऐसी स्थिति में आयुके अंतिम भागमें स्त्रीके अधीन कर देता हूं। मेरे ऐसे जातक प्रथम सन्तानके रूपमें पुत्र पाते हैं। ऐसे जातक जिनके सुख भावमें मैं होता हूँ तो तीसरे-छठे वर्ष ज्येष्ठ व्यक्तिकी मृत्यु देकर मैं शोकातुर बना देता हूं। बचपनमें माता या पिताकी मृत्यु कराता हूँ। मैं सुख भावका पूर्ण कारक नहीं हूँ। व्यवसाय व नौकरीमें लाभ दिलाता हूँ ! यदि मेरा जातक अन्य ग्रहके प्रभाव से गलत व्यवसायमें नहीं पड़े। मैं प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, नेता सरदार पटेलके कर्क लग्नकी तुलामें, हैदरअली, ईशामसीहके तुला लग्नकी मकरमें, निकिता खुरश्चेवके तुला लग्न की मकरमें स्थित था।'

पंचम भावमें स्थिति :

'मैं पंचम भावमें पुरुष राशिमें होकर पुत्र संतति देता हूँ, केवल एक पुत्री देता हूं। मेष-सिंह-धनुमें होने पर मैं शिक्षामें बाधा देकर भी विद्वान् बना देता हूँ। चैनकी वृत्ति होने पर भी पैसेकी बचत नहीं होने देता। नाटक सिनेमा थियेटरमें नटके रूपमें प्रसिद्धि देता हूं। मैं ऐसे जातकको छत्तीसवें वर्षकी आयु तक स्थिरता देता हूँ। अत्यधिक कामुक बनाता हूँ। मिथुन तुला कुम्भमें होकर पूर्ण शिक्षा देकर मैं ऐसे जातकको सफल बनाता हूँ। अति कामुक बना कर शिक्षक, प्राध्यापक, लेखक बनाता हूं। संततिका अभाव देकर ग्रन्थोंके द्वारा मैं प्रसिद्धि देता हूं। ऐसे जातकोंकी स्त्रियोंको मासिक स्राव, प्रदर व वन्ध्यत्व रोगोंको देता हूं। कर्क-वृश्चिक-मीन एवम् वृष-कन्या-मकरमें होकर मैं विज्ञान विषयका स्नातक बनाता हूं। मैं कन्या सन्तति देकर एकाधिक विवाह कराता हूँ। स्त्रीराशिमें होकर मैं विवाहको सफल बना देता हूँ। पुरुष राशिमें होकर सात्विक आहार, उदात्त प्रेम देता हूँ। स्त्री राशिमें होकर स्त्री सुखको क्षय करता हूं। मैं बादशाह सिकन्दरके मेष लग्नकी सिंहमें, नवाब हैदराबादके तुला लग्नकी कुंभमें, वीर सावरकरके धनुः लग्नकी मेषमें, जार्ज पंचमके पुत्र एवम् महावीर स्वामी के मकर लग्नकी वृष राशिमें पंचम भावमें था।'

षष्ठ भावमें स्थिति :

'मैं इस भावमें पुरुष राशिमें शुभ, स्त्री राशिमें अशुभ होता हूँ। मैं तीसरे वर्षके बाद व्याधि देता हूँ। मैं हमेशा कर्जदार बना ये रखना चाहता हूं और मृत्यु पर्यन्त कर्ज मुक्त नहीं होने देता। मेरे ऐसे जातककी पुत्री विधवा होकर उसीके संरक्षणमें रहती है। मेरे ऐसे जातक गरीब परिवारकी पत्नी पाते हैं। मैं अत्यल्प संतति देकर अतिभोजी वनाते हुए रोगी बनाता हूँ। कर्क वृश्चिक मीनमें षष्ठस्थ होकर मैं व्यभिचारी प्रवृति देता हूं। मैं अठाइसवें वर्षमें हानि देकर चालीसवें वर्ष पत्नीको अस्वस्थ बनाता हूँ। स्वपूंजीके सब व्यवसायोंमें व्यवधान देकर पूंजीविहीन धन्धोंमें सफलता देता हूं। मैं अरिस्टाटल ओनासिसके मेष लग्नकी कन्यामें, रूजवेल्टके सिंह लग्नकी मकरमें, शेक्शपियरके धनुः लग्नकी वृषमें, महात्मा गांधी, बादशाह शाहजहांके कर्क लग्नकी धनुः राशिमें छठे भावमें स्थित था।'

सप्तम भावमें स्थिति :

'मैं सप्तम भावमें होकर मेष-मिथुन-तुला में स्त्रीका सौन्दर्य पुरुष जैसा बनाता हूं। मेरे जातक पत्नि-भक्त व कामुक एवम् निःसन्तान होते हैं। मैं सिंह कुंभमें होकर शरीरसे मोटी, गंभीर, मंझले कदकी स्त्री देता हूं। धनुः राशि में होकर मैं योग्य पत्नी, किन्तु पतिको अप्रिय पत्नी देता हूं। मेष वृश्चिक मकर कुंभमें होकर मैं विजातीय अथवा प्रौढ़ स्त्री देता हूँ। सिंह-मीनमें सप्तमस्थ होकर मैं विवाहोपरान्त भाग्योदय कराता हूं। स्त्री राशिस्थ होकर मैं नौकरी में यश देता हूँ। मेष मिथुन तुला धनुमें होकर गायन, वादन, अभिनयमें प्रवृत्त कराके ऐसा जातक बनाता हूं जो स्त्रीको तुच्छ व वासना पूर्तिका साधन मात्र मानते हैं। मैं मदनमोहन मालवीयके कर्क लग्नकी मकरमें, अ० हिटलरके तुला लग्नकी मेषमें, राजकुमारी मारग्रेटके मीन लग्नकी कन्यामें, वीर शिवाजी, निक्सनके सिंह

लग्नकी कुंभमें जन्मके समय सप्तमस्थ था।'

अष्टम भावमें स्थिति :

मैं अष्टम भावस्थ होकर मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, स्त्री विषयक सुखोंमें कोई एक सुख पर्याप्त मात्रामें देता हूँ। गायन-वादन कलामें पारंगत बनाकर प्रसिद्धि देता हूँ। मैं विद्वान् सदाचारी बनाकर उन्नति कराता हूँ। कर्क सिंह मीनमें शराबी, वृश्चिक कुंभमें अफीमची बनाता हूँ। मैं जातक अथवा उसकी पत्नीको गुप्त रोग देता हूं। मेरे ऐसे जातक अनैतिक संभोगी होकर व्यभिचारी होते हैं, अतः मैं कारावास भी दिला दिया करता हूँ। मैं अष्टम भावमें मेषमें होकर तृष्णासे, वृषमें मुख रोगसे, मिथुनमें दन्त रोगसे, कर्कमें त्रिदोषसे, सिंहमें विषूचीसे, कन्यामें जंगली जानवरसे, तुलामें सांपसे, वृश्चिकमें विषसे, धनुःमें लूतसे, मकरमें विष प्रयोगसे, कुंभमें अति काम संसर्ग से, मीनमें अति दुःखके कारण मृत्युका दाता होता हूँ। मैं फ्रांसके डिगालके मेष लग्नकी वृश्चिकमें, सूर्यनारायणराव (बंगलोर), जगदीश चन्द्र बसुके वृष लग्नकी धनुमें, क्रिस्टाइनकीलर के मिथुन लग्नकी मकरमें, अभिनेता अशोक कुमारके मकर लग्नकी सिंहमें, जन्मके समय अष्टम भावमें स्थित था।'

नवम भावमें स्थिति :

'मैं भाग्य भावमें स्थित होकर मेष सिंह धनु कर्क वृश्चिक मीनमें शुभ फल देता हूँ। कर्क वृश्चिक मीनमें होने पर मैं अप्राप्य वस्तुकी खोज करानेमें पूर्ण प्रवृत्त करता हूं। मेरे ऐसे जातक असाध्य दवाकी खोज, स्त्रीका पुरुषमें यौन परिवर्तनके दुष्कर कार्यमें लगे रहते हैं। मैं पन्द्रहवें वर्ष वारिस बनाकर धनदाता होता हूँ। मैं मिथुन कर्क धनु मकरमें विवाहके बाद भाग्योदय करता हूं। व्यवसायके हेतु स्त्रियोंसे पूंजीको दिलाता हूँ। स्त्रीकी मृत्युके बादमें सर्वनष्ट करा देता हूँ। कन्या कुंभमें सन्ततिसे पूर्ण भाग्योदय कराता हूँ। मैं शुभ होने पर गायन, वादन, सिनेमा, रेडियो, साहित्य लेखनमें पूर्ण निपुणता देकर यश देता हूँ। मैं इक्कीसवें वर्ष लाभ, तेंतीसवें वर्ष हानि देता हूँ। मैं दूषित होकर त्रिकभावमें होने पर विधवा विवाह, विजातीय पत्नीका दाता होता हूँ। मैं मीनमें होने पर फूफी, मौसी, मामी, काकी, मित्र पत्नी, अधिकारीकी पत्नीसे अनैतिक सम्बन्ध कराकर अपयश दिलाता हूँ। पत्नीके धनसे उपजीविका देकर मैं अशुभ फलोंका दाता होता हूं। मैं डा० सम्पूर्णानंदके मेष लग्नकी धनुःमें, राष्ट्रपति आइजन होवरके मीन लग्नकी वृश्चिक में, मुसोलिनीके वृश्चिक लग्नकी कर्कमें, हैराल्ड विल्सनके सिंह लग्नकी मेषमें, कैनेडीके कन्या लग्नकी वृषमें स्थित था।'

दशम भावमें स्थिति :

'मैं राज्य भावमें पुरुष राशिमें स्थित होकर अविवाहित रहनेकी ओर प्रवृत्त करता हूं। मेरी केन्द्रमें स्थिति लाभप्रद होती है। मेरे जातक धनोपार्जन करके विवाह करनेके इच्छुक होते हैं। मैं मातापितामेंसे एकका सुख क्षय करके द्विभार्या योग बनाता हूं। मैं व्यवसाय अथवा सन्तति परिवारमें एक क्षेत्रमें सुखी बनाता हूँ। इस भावमें मेष मिथुन सिंह तुला धनु कुंभमें होकर विज्ञान प्रेमी, शिक्षित बना कर गणित, ज्योतिष, गायन-वादन, सिनेमा रेकार्डिङ्ग, रसायन-भौतिक शास्त्री, फोटोग्राफी,

मोटर ड्राइविंग आदि क्षेत्रोंमें पारंगत बनाता हूँ। मेरे ऐसे जातक व्यसनी होते हैं।'

'यदि मैं दूषित होकर अशुभफल दाता होता हूँ तो स्त्रियोंसे बेइज्जत कराता हूँ। मेरे प्रभावसे जातक परस्त्रियोंके अधीन होकर अप-व्ययी होते हैं। मंगलसे शुभ योग पाकर मैं शीलवान बनाता हूं । मैं पुरुष राशिमें, कर्म भावमें होकर पितृ सुख, सम्पत्तिसे वंचित करता हूँ। मैं पृथ्वीराज चौहानके मेष लग्नकी मकर में, नाथूराम गोडसेके मिथुन लग्नकी मीनमें, गुरु शंकराचार्य, रामानुजाचार्य व गौतम बुद्धके कर्क लग्नकी मेषमें स्थित था।'

एकादश भावमें स्थिति :

'मैं लाभ भावमें होकर शुभ फल देता हूँ। मेरे जातकोंके पुत्र कम किन्तु कन्या बहुत होती हैं। मैं मेष सिंह धनुमें लाभ भावमें होकर सन्तान प्रतिबन्धक होता हूं। सन्तान होने पर मृत्यु देता हूं। आय अत्यधिक देकर भी मैं व्ययाधिक देता हूँ। मेरे जातक बड़े भाईके व्ययको भी उठाते हैं। स्त्रियोंकी राशिमें पुत्र अधिक व कन्या कम देता हूं। मैं लाभस्थ होने पर आचरण दूषित करता हूँ। मैं ऐसे जातकको पतित स्त्रियोंसे सम्पर्क कराके प्रभाव क्षय कराता हूं। कर्क वृश्चिक मीनमें होने पर मैं पुत्र संततिसे वंचित करके कन्या संततिका दाता होता हूं। मैं नेताजी सुभाषचन्द्र बोसके मेष लग्नकी कुंभ में, डा० राजेन्द्रप्रसादके धनुः लग्नकी तुलामें, गोस्वामी तुलसीदासके तुला लग्नकी सिंहमें, श्रीरामशर्माके तुला लग्नकी सिंहमें, बादशाह औरंगजेबके कुंभ लग्नकी तुलामें, सुल्तान टीपू के धनु लग्नकी तुलामें स्थित था।'

द्वादश भावमें स्थिति :

'मैं व्यय भावमें होकर भी शुभ फल दाता माना जाता हूँ। मैं इस भावमें होकर जातकको समस्त भोगोंका भोग कराता हूं। मकर और कुंभके जातकोंको मैं राजयोग कारक होता हूँ। मेरे जातक विलासी होते हैं। इस भावमें मेष सिंह धनुमें होकर झगड़ालु पत्नी देता हूं। मिथुन तुला कुंभमें होने पर सुन्दर व आकर्षक पत्नी देता हूं। आचरण अच्छा देकर भी धन लाभ साधारण देता हूँ। मेरे ऐसे जातक कवि, लेखक चित्रकार, गायक-नर्तक, अभिनेता, फ्रोटोग्राफर, कलाकार होते हैं। स्त्री राशिमें व्ययस्थ होकर कामुक वृत्ति देकर व्यभिचारी बनाता हूँ। द्विभार्या योग बनाता हूं। शनिसे दूषित होने पर विजातीय स्त्री देकर अशुभ फल देता हूँ। मैं ऐसे जातकोंको अविवाहित भी रख देता हूँ। आर्थिक स्थिति सामान्य रखकर भी कर्जदारी निरंतर बनाये रखता हूं । मैं महारानी विक्टोरियाके वृष लग्नकी मेषमें, लाल बहादुर शास्त्री के वृश्चिक लग्नकी तुलामें, मथुरादास माथुरके सिंह लग्नकी कर्कमें, सी०वी० रमनके तुला लग्नकी कन्यामें, जन्मके समय स्थित था।'

इन्हीं शब्दोंके वाचनके साथ आचार्यवर शुक्रदेव मौन हो कर अन्तर्धान हो गये। मैं अपलक पूर्वक्षितिजकी ओर देखता रह गया। अंशुराजका प्रसन्न मुख मण्डल दृष्टिगोचर होने लगा था, अतः मैं सूर्य नमस्कार हेतु गायत्री मंत्रके उच्चारणमें तल्लीन हो गया। 'गर्ग-संहिता' अब मेरे लिये कठिन ग्रन्थ न था।



बगलामुखी ब्रह्मास्त्र स्तवन

पाठक प्रथम पीताम्बरा परमेश्वरीकी जय कहो।
संसारका सब कर्म करते ध्यानमें उसके रहो।
जीता वही संसारमें जो रत रहे सद्ग्रन्थमें।
रक्षा करे पीताम्बरा प्रियव्रत प्रवर्तित पन्थमें ॥ १ ॥

रक्षा करे वज्रायुधा ऐन्द्री दिशामें सर्वदा।
आग्नेयीमें रक्षा करे माँ पाश धरिणी शर्मदा ॥
अब अवाचीमें करें वह अम्बिका बगलामुखी।
नैॠत्यमें मुद्गरधरा जिससे रहे जनता सुखी ॥ ॥ २ ॥
पश्चिमदिशि जिव्हाधरा वायव्यमें त्रिलोचना।
उत्तरदिशि पीताम्बरा ऐशान्यमें भवमोचना ॥
उर्ध्वमें तेजस्विनी अब निम्नमें सिंहासना।
एवं करो रक्षा मम आरम्भ अंब उपासना ॥ ३ ॥
अमृत-अपांनिधिमध्यमें मणिमण्डपे मणिवेदिका।
स्रग् पीतवरणाभरणभा सिंहस्थसी अरिभेदिका ॥
धृत वैरीजिव्हा एकमें हस्ते अपर मुद्गरधरे।
देवी नमन करता हूँ मैं अयि ! अम्ब ! अब पीताम्बरे ॥ ॥ ४ ॥
जिह्वा पकड़कर सव्यसे अपसव्यसे मुद्गर धरे।
अरित्रासदायिनी द्विभुजे ! पीताम्बरे ! प्रणमन करे ॥
चल कनक कुण्डल शोभिते ! अरु हेमचम्पक छविधरे।
गण्डस्थले चन्द्रानने ! अरिनाशिनि पीताम्बरे ॥ ॥ ५ ॥
गदघातकर विपक्षको अरिकलित चल जिह्वा करे।
करता स्मरण बगले ! तुम्हें स्तम्भन विविध अरिवाक्करे ॥
अमृत अपांनिधिमध्यमें मणिमण्डपे ! मणिवेदिका।
स्थितहेमसिंहक मूलमें रिपु प्रेतपर अरिभेदिका ॥ ॥ ६ ॥
स्वर्णच्छवि जगदीश्वरी करकलितजिह्वावैरीकी।
भ्राम्यद् गदाकी धारिणी उद्धारमें देरी न की ॥
इस रूपका दर्शन करे, आपत्ति माँ तत्क्षण हरे ॥ ७ ॥
देवि ! तुम्हारे पद कमलमें पीतपुष्पाञ्जलि तणे।
रख मुद्रिका अनु वाम करमें मन्त्रके अक्षर भणे ॥

रोककर निजश्वासको कुम्भक अवस्थामें करे।
ध्यान पीले देवका. अनुबीज पार्थिवको स्मरे ॥ ॥ ८ ॥
इस तरह करता रहे जो अम्ब तेरा ध्यान है।
'उसके अरिके मनवचन स्तम्भित न हो' अज्ञान है ॥
मन्त्रस्थ होकर भक्त मुख ही अम्बस्थान पवित्र है।
परपक्ष दलनेमें तुम्हारे स्तोत्रमंत्र स्तवित्र हैं ॥ ॥ ९ ॥
तव यन्त्रकी तो बात ही क्या त्रैलोक्यमें समता नहीं।
आश्चर्यमें है डालता सब यन्त्रधारीको यही ॥
जिस प्राणीने मुखमें लिये तव नाम श्रीबगलामुखी।
वह मूककर सब वादीको संसार संसदमें सुखी ॥ १० ॥
वादी बनेंगे मूक सब राजा बनेंगे दास तब।
अग्नि बनेगी हिम सदृश क्रोधी बनेंगे शांत सब ॥
दुर्जन स्वजन, गर्वी सरल, अनुगामी हो खञ्जित घना।
जृम्भित बने यह जगत् सब, तब यन्त्रसे यन्त्रित बना ॥
मैं नमन करता हूं सदा कल्याणी श्रीबगलामुखी ॥
आपत्ति अम्बे दूर कर कीजिये सुतको सुखी ॥ ११ ॥
बहुविघ्नशामक खल नियामक दारिद्र्यहर नृपस्तम्भकर।
सौभाग्यका आवास जो मृगलोचनी आकर्ष कर ॥
मृगनयनीका करुणार्द्रदृग् अरिनाशका जो द्वार है।
पुरत: प्रकट हो लपन तब जो सब सुखोंका सार है ॥
मम वैरी मुख भञ्जित करो कीलन करो चल जिह्विका।
अयि ब्राह्मी माँ स्तम्भन करो द्रुतमुद्रया अरिबुद्धिका ॥
पीताम्बरे ! बगलामुखि ! युगवैरिपद स्तम्भित करो।
गदघातसे गौराङ्गि ! तुम मम शत्रुको चूर्णित करो ॥
नत शीर्ष बिघ्न विनाशिनी करुणार्द्रदृग् सब दु ख हरो ॥ १२ ॥
त्रिपुरेऽम्ब भैरवि ! भद्रकाली वाराहिजे विश्वाश्रये !
माहेश्वरि ! बगलामुखि ! कामेश्वरि ! वामे रमे ॥
मातङ्गिके विजयप्रदे श्री स्वर्गदे अपवर्गदे ।
नित्ये परा त्वं परतरे विश्वेश्वरि त्वं त्राहिमाम् ॥
आश्रित तुम्हारे दास मैं कृपया करो रक्षा मम ॥ १३ ॥
जय अम्बिके जगदम्बिके अवलम्बमें न विलम्ब हो।
अरिजीभका कीलन करो मम आपदाएं सब हरो ॥
ब्रह्मास्त्र विद्या हो परा विघ्नौघकी विच्छेदिनी।
विद्या परम हो आप ही अरिजनित भयकी भेदिनी ॥

योषा जगत्की कर्षिणी निज भक्तमनकीहर्षिणी ।
दुर्जन उच्चाटन कारिणी निजजन विपत्ति निवारिणी ।।
त्रैलोक्यकी जननी तुम्ही दृढ़बन्ध मोक्षविधायिनी ।
पीताम्बरे ! बगलामुखी ! जनमनः सम्मोह दायिनी ।। ।। १४ ।।
चौरीके अपराधमें वा चौरसे लुटते समय ।
बन्धन गृहे, अरिमध्यमें जब राजकुल हो कोपमय ।।
शास्त्रार्थ वाद-विवादमें वा वैरिके वधके समय ।
बश्यत्व स्तम्भनमेऽथवा युधि दिव्यकालेमृत्युभय ।।
आपत्तिकर्ता वन्य भी जब घेर ले झंझापवन ।
चलता रहै वा ठहर कर त्रयबार यह तेरा स्तवन ।।
द्रुत धैर्य धर नरवर पढ़े तो प्राप्त हो मंगल भवन ।। १५ ।।
ब्रह्मास्त्र यह मैंने कहा त्रैलोक्यमें दुर्लभ अहा ।
असूयताको त्याग कर सब प्राणियोंमें सम रहा ।
गुरुभक्त इसका पात्र है जो शिष्यतामें रम रहा ।
देना उसीको सावधान रख गोपनीय प्रयत्नतः ।
यह शेवधि उसको फले रक्षा करे जो यत्नतः ।।



रचयिता :—
वैद्य वाचस्पति शर्मा

परमेशान-स्तोत्र

[प्रयोगकर्ता—श्री सीताराम मिश्र आयुर्वेद विशारद, श्रीगंगाजीका मंदिर, सरदारशहर राजस्थान]

परमेशान शिवका स्तोत्र पाठकोंके लाभार्थ यहां लिखा जाता है । यह स्तोत्र समस्त मनोकामनाओंको पूर्ण करने वाला है ।

ॐ नमस्ते विश्ववर्णाय हिरण्याय कपर्दिने ।
हिरण्यकृत चूड़ाय हिरण्यपतये नमः ।।
ईशान वज्रसम्भूत हरिकेश नमोऽस्तुते ।
नमो बालार्ककर्णाय ज्वलद्रूपधराय च ।।
नमोऽशुद्धाय शुद्धाय सौभगाय क्षयाय च ।
भवांगाऽमिति केशाय मुक्तकेशाय वै नमः ।।
नमः षट्कर्मतुण्टाय त्रिकर्म निरताय च ।
वर्णाश्रमेण विधिवत्पृथक्कर्म प्रवर्तिने ।।
नमः शोशीय शोशाय करुणाय च ते तमः ।
श्वेतपिंगलनेत्राय कृष्णवक्त्रेक्षणाय च ।।
धर्मार्थकाममोक्षाय सर्वपाप हराय च ।
नमस्त्रिशूल हस्ताय उमाकान्ताय वै नमः ।।
ईशान वक्त्र सम्भूत हरिकेश नमोऽस्तुते ।
प्रसीद पार्वतीकान्त ! उमानन्दाय वै नमः ।।

किसी भी साधनाको आरम्भ करनेसे पूर्व अथवा अन्य किसी भी समय इस स्तोत्रका नियमित अथवा अनियमित पाठ करनेसे भगवान सदाशिव परमेशान अपने भक्तकी समस्त मनोभिलाषाओंको पूर्ण करते हैं । अतः इस स्तोत्रका प्रतिदिन पाठ करना चाहिए ।

योगमाला (२)

[लेखक :—श्रीवैद्य वाचस्पति शर्मा, कोठियां राजस्थान]

(७) प्रतिश्याय सर्दी जुकाम

यह प्राय: सभी मनुष्योंको बारम्बार बहुत बचनेका प्रयत्न करने पर भी हो जाया करता है। इसको साधारण समझना नितान्त अदूर दर्शिता है, क्योंकि "प्रतिश्यायादथो कास: कासात् संजायते क्षय:।" सोंठ ३ ग्राम, कालीमिर्च ११ नग, तुलसीपत्र ११ नग, असली दालचीनी १ ग्राम, तेजपात १ ग्राम, छोटी इलायची ३ नग, लवङ्ग ३ नग, दुग्ध २५० ग्राम, शर्करा यथेष्ट। सबका चूर्ण बना दुग्धमें समभाग जल मिलाकर डाल देवें। दुग्धावशेष क्वाथकर मिष्टकर पी जावे। इस प्रकार प्रात: एवं रात्रिमें सोते समय सेवन करे। ३ दिनमें ही आश्चर्यजनक लाभ होगा। दिवाशयन निषिद्ध है।

(८) पानी लगना

पानी लगनेकी शिकायत स्थान-विशेष प्राप्त कर प्राय: सभीको हुआ करती है। ३ लाल मिर्च बिना टूटी हुईको घीमें सेक कर नमक लगाकर शीतल जल के साथ खा जावे। इस प्रकार दिनमें १ बार प्रति दिन लेनेसे जल थल नभमें विचरण करने पर भी पानी लगनेकी (जलवायु प्रतिकूलता) व्याधि न होगी।

(६) गृध्रसी (सायटिका)

सुरञ्जान मिश्री ३ ग्राम, शक्कर ३ ग्राम, मिलाकर १ मात्रा फक्की लगावे। अनुपान उष्ण दुग्ध। सात दिनमें आश्चर्यजनक लाभ होगा। दिनमें ३ बार सेवन करे।

(१०) तृतीयकज्वर (तेजरा)

मयूर पिच्छ (चन्दोवे) के टुकड़े कर गुड़में गोली बना ज्वर आने वाले दिन सूर्योदयसे पूर्व निगला देवें। इससे एक ही बारके प्रयोगमें तृतीयक ज्वर शमन हो जावेगा।

(११) सूर्यावर्त्त शिरोरोग

सूर्योदयके साथ-साथ वेदना बढ़ती जाती है। १२ बजे मध्याह्नसे शिर:शूल शनै: शनै: न्यून होता जाता है। सूर्यास्तके पश्चात् वेदना पूर्णतया शमन हो जाती है। अर्क (मदार) की फुनगी (कोंपल) गुड़में मिलाकर गोली बनाकर सूर्योदय से पूर्व निगला देवे। एक ही बारमें शिर: शूल सदाके लिये शमन हो जाता है।

(१२) श्वास (दमा)

उपरि लिखित अर्क फुनगीके स्थान पर अर्क दुग्ध ५ बूंद बलाबल देखकर बताशेमें अथवा पेड़ेमें मिला कर रोगीको निगला देवे। सप्ताह मात्रमें श्वास रोग शमन हो जावेगा।

(१३) बालातिसार (दस्तें लगना)

बच्चोंको हरे पीले दस्त हुआ करते हैं, ऐसे समय एरण्डस्नेह देकर जायफल और अतीसकी लकड़ी घिसकर देवे। यदि बच्चे को सेव (बेसनकी) में बराबर चने सिके हुए मिलाकर खानेको देवे तो इससे तत्काल दस्तें लगना बंद हो जावेगी। मीठा और मिर्च नितान्त निषिद्ध है!

(१४) स्वप्नदोष (नाईट पाल्यूशन)

यह रोग अपनी चरम सीमा पर पहुंचकर सभी मनुष्योंके साथ है। विशेषतया विद्यार्थी समुदायके गलेका हार बना हुआ है। इस रोग की एक मात्र चिकित्सा, Simple living and High thinking (सादा जीवन उच्च विचार है) क्योंकि इस रोगका मनसे पूर्णतः सम्बन्ध होनेसे मनुष्यको हीन भावना छोड़कर, प्रतिदिन प्रातः यह उच्चारण करना चाहिये Day by day in every way I am getting better and better. (मैं प्रतिदिन आत्मोन्नति करता जा रहा हूँ) वटवृक्षका दुग्ध ११ बूंद बताशेमें डालकर निरन्तर ४० दिन तक सेवन करें। अथवा भिण्डीकी जड़ २५० ग्राम, मिश्री २५० ग्राम मिलाकर चूर्ण कर ३ माशाकी दिनमें ३ बार फक्की लगावे, अनुपान दुग्ध। यह स्वप्नदोष एवं सुजाककी बहु मान्य औषध है। पथ्य-संयम Self-control ब्रह्मचर्य, ब्राह्ममुहूर्तमें उठना, उषःपान, अस्वादवृत्ति भोजन, शीर्षासन, स्वाध्याय सत्संग आदि।

(१५) वात व्याधि

आयुर्वेदके मतानुसार बिना वायुके पीड़ा असंभव है। जिस स्थान पर वेदना हो उसे तत् तद् देशीय वात व्याधि कहते हैं। विशेष कर वृद्धोंको व्यथित करना इसका स्वभाव है। लशुनका रस (पुटपाक विधिसे निकाला हुआ) १० ग्राम, २० ग्राम घृत मिलाकर १ मात्रा सेवन करें। दिनमें ३ बार, सात दिनमें सभी प्रकारकी वात व्याधि शमन होती है।

(१६) लशुन वर्जित योग (लघुराजमृगाङ्क)

तुलसी पत्र स्वरस १० ग्राम, कालीमिर्च ११ नग, घृत २० ग्राम मिलाकर १ मात्रा बना दिनमें तीन बार १३ दिन तक सेवन करनेसे सभी प्रकारकी वात व्याधियाँ दूर होकर अपूर्व बल एवं स्फूर्ति प्राप्त होगी।

(१७) काले केश करनेकी अदभुत एवं सरल विधि

भला काले केश करना कौन पसन्द न करेगा। केशोंकी बात चलते ही हमे महाकवि केशवकी यह पंक्ति सहसा स्मरण हो आती है "**केशव केसनी असकरी जस वैरी न कराय**" आज हम अपनी ज्योतिष्मतीके पाठकोंके लिए सुगम शास्त्रोक्त सिद्धयोग प्रस्तुत कर रहे हैं। गिलोय सत्व असली ३ ग्राम, आमला चूर्ण १० ग्राम, गोखरू चूर्ण १० ग्राम, घृत २० ग्राम, मिश्री २० ग्राम मिला कर १ एक मात्रा बना चाट लेवे। ऊपरसे दुग्ध पीवे। इस प्रकार प्रातः एवं रात्रिमें सोते समय कुछ महीनों सेवन करनेसे काले केशोंके साथ ही अपूर्व शक्ति प्राप्त होगी। जिसका वर्णन हमारी लेखनीके सामर्थ्यके बाहर है।

भारतीय संस्कृतिमें मंत्र यंत्र तंत्र

[ले०—श्री पं० श्यामसुन्दर ज्योतिषी, सिरसा (हिसार)

गत अंक (वर्ष १५ सं० २) में प्रकाशित हमारे लेखकी सामग्रीसे किञ्चित् प्रसन्न होकर कई जिज्ञासुओंने अनेक प्रकारके प्रश्न पूछे थे। खेद है कि पत्रोत्तरके लिये किसीने भी टिकट आदि नहीं भेजे। हमने अपनी बुद्धिके अनुसार संक्षेपमें कुछ निवेदन किया था, किन्तु हम कोई सिद्ध हैं या विशेषज्ञ हैं ऐसा नहीं लिखा था। हम स्वयं जिज्ञासु हैं, तथा प्रयत्न करने पर भी जिज्ञासाको पूर्ण करनेका साधन प्राप्त नहीं कर पाये हैं। मंत्रशास्त्रमें वैदिक मन्त्रोंसे लेकर शाबर मंत्रों तक एक विचित्र सृष्टिकी रचना मनीषियोंने की है। कभी-कभी उनके जपसे तत्काल सिद्धि मिल जाती है, तथा कभी-कभी कुछ भी फल प्राप्त नहीं होता। हमारी समझमें सिद्धि की प्राप्ति भी पूर्वजन्मके पुण्यके प्रभावसे होती है। हम केवल इतना परामर्श दे सकते हैं कि यदि आपको अपने पिछले जन्मकी साधना तथा इष्टकी स्मृति हो सके तो आप पुनः उसी इष्ट की साधना आरंभ करें। आपका इष्ट-देव कौन सा देवी देवता है इसका ज्ञान आपको जैमिनी ऋषिके आत्मकारकके नवांशसे संभव है। किसी दैवज्ञसे पूछकर निर्णय कर लें, तथा जिस देवताकी आराधना करनेका आदेश जैमिनी-सूत्र द्वारा मिले उसकी आराधना श्रेयस्कर हो सकती है। यह हमारा मत है, जो जिज्ञासुओं की संतुष्टिके लिये व्यक्त किया है।

एक परामर्श] और भी है कि कलियुगमें मंत्र जपके स्थान पर केवल नाम जप किया जावे तो और उत्तम है। नाम जपमें बिशेष विधि विधान आदि की भी आवश्यकता नहीं। नाम जप उसी इष्टका करें जिसका निर्देश जैमिनी सूत्र द्वारा हो। कलियुगमें विष्णु सहस्रनाम, श्रीमद्भगवद्गीता तथा दुर्गा सप्तशती ही केवल कीलित नहीं है। शेष मंत्रोंको परशुरामजीने कीलित कर दिया है। यह बात कई ग्रन्थोंमें लिखी है, तथा अनेक विद्वानोंकी भी यही सम्मति है। फिर भी यदि कोई सकाम उपासना करनी हो तो संकल्प अवश्य करना चाहिये। यह भी एक तत्वकी बात है। संकल्पके बिना फल की प्राप्ति तो होती है, किन्तु तत्काल फलकी प्राप्ति नहीं होती।

यदि आप यंत्रोंकी बात कहें तो हम आपसे कहेंगे कि आप "रामरक्षा—स्तोत्र" को केवल काली स्याहीसे कागज पर लिखकर गलेमें (तावीजमें बंद करके) डालें। निश्चय ही शांतिकी प्राप्ति होगी। इसमें किसी साधना की आवश्यकता नहीं है। यदि अष्टगंधसे लिख कर डालें तो उत्तम है।

तंत्रोंके विषयमें क्या कहें, हम अभी कुछ कहना नहीं चाहते। मंत्र हजारों हैं। यंत्र भी हजारों हैं। तंत्र भी असंख्य हैं, किन्तु कलियुग में सरलतासे लाभ देने वाले मंत्र यंत्रोंकी आवश्यकता है।

इष्टदेवके निर्णयका मार्ग तो हमने ऋषियों के कथनानुसार बता दिया, किन्तु मंत्रसे सिद्ध साध्य, सुसिद्ध, अरिसम्बन्धका निर्णय तो तंत्र मार्ग द्वारा ही संभव है, जिसकी चर्चा शायद हम अगले अंकमें कुछ कर सकें। अभी

विचार कर रहे हैं। आज कल अर्थ प्रधान युग है। अर्थकी प्राप्तिका मार्ग तो आज कल अनर्थ ही बचा है। जितने भी धनी नजर आ रहे हैं ये लगभग रिश्वत-ब्लैक-मिलावटकी कृपा से ही धनी बने हैं। टैक्सोंकी चोरी तो सामान्य बात है, अतः धनी बननेका सरल मार्ग तो अब यही बचा है। परिश्रम या ईमानदारीके मार्ग से धन आना कठिन प्रतीत होता है। आजकल लाटरी भी धन आनेका एक मार्ग है, बिना पाप पल्ले बांधे अनायास द्रव्य प्राप्ति तो केवल पूर्व जन्म या इस जन्मके पुण्यसे संभव है। शास्त्रोंमें अनायास द्रव्य प्राप्तिके उपाय बताये हैं, जिन पर हम फिर कभी प्रकाश डालेंगे। संक्षेपमें अभी इतना ही कहेंगे कि अनाचारके बिना धन प्राप्ति तो केवल दानके द्वारा संभव है। यदि दोगे तो मिलेगा। दिया होगा तो मिलेगा। बस यही तत्व है जो शास्त्रोंने बताया है। देनेकी बिधि भी है, जैसे खेतीकी बिधि होती है। अच्छी तरह बीज डालोगे तो अच्छी खेती होगी, अन्यथा कम खेती होगी। दान देनेकी विधिकी चर्चा भी फिर करेंगे। अभी केवल संकेत कर रहे हैं ताकि आप लोग सावधानीसे इस विषय पर विचार करने लगें।

गैस्टिक ट्रबल और उसकी चिकित्सा

[लेखक :—डा० रमेशचन्द्र एल० नागर भिषगाचार्य ए०एस०वी०आर०एम०पी०]

यह रोग पाचन संस्थान एवं आंतोंसे सम्बन्धित है और इनकी विकृतिसे इसकी उत्पति होती है, यह एक कठिन रोग है, किन्तु असाध्य नहीं, अपितु साध्य है। यदि आयुर्वेदिक पद्धतिसे इसकी चिकित्सा की जावे, एलोपैथिक औषधियोंसे कभी कभी लाभ तो होता है, किन्तु स्थाई नहीं।

लक्षण—वमन मन्दाग्नि, कब्ज, पेटका फूलना और भारी होना, उदरशूल, मरोड़ गांठ जैसा घूमते रहना, अपान वायुका अवरोध, भोजनके वाद उदरमें वायुकी उत्पत्ति और संचित वायुका गुदासे नहीं निकलना, ऊर्ध्वगामी होकर डकारोंके रूपमें बाहर निकलना, नींद नहीं आना, किसी काममें मन नहीं लगना, रुग्णका (रोगीका) शनैः शनैः दुर्वल एवं रक्त हीन होते जाना, हृदय मस्तिष्क और जोड़ोंमें दर्द होना, कभी कब्ज, कभी एक दम पतले दस्त होते रहना इत्यादि। उदरमें सञ्चित बलवान वायु जब शरीरके जोड़ पर आघात करती है तब जोड़ोंमें तीव्र वेदना, हाथ पांवमें झिन झिनी खिंचाव, कम्पन, मस्तिष्क आघात पर मस्तिष्ककी शून्यता, हृदयाघात पर हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। उदरमें स्थित वायु के बर्द्धमानावस्थामें उपरोक्त शिकायतें बनी रहती है और वायु शमन होने पर वेदना स्वयं शान्त हो जाती है।

चिकित्सा

(१) संजीवनी वटी २ रत्ती, पञ्चामृत पर्पटी २ रत्ती. गोदन्ती भस्म दो रत्ती, यह एक मात्रा है। इसे मुखमें डालकर उपरसे गौकी छाछ (तक्र) में २ माशा लवण-भास्कर चूर्ण मिलाकर पीना, इस प्रकार प्रातः सायं लेते रहें। भोजनके वाद अग्नितुण्डी वटी २-२ गोली जल

के साथ लेना, दिनमें ५-६ बार चित्रकादिवटी या शंखवटी या गन्धकवटी मुंहमें डालकर चूसते रहना चाहिये।

अथवा—(२) शंख भस्म ४ रत्ती, पञ्चामृत पर्पटी २ रत्ती, रससिन्दूर १ रत्ती, रोप्यसिन्दूर १ रत्ती, प्रातः सायं अनुपान—लवण भास्कर चूर्ण १-२ माशा को तक्र (छाछ) में मिला कर पीना एवं योग नम्बर १ में चूसनेकी गोली को दिनमें ५-६ बार चूसते रहना, अथवा—(३) अग्निमार्तण्ड रस १-२ रत्ती ५ तोला दहीं के साथ प्रातः सायं लेनेके एक घण्टे बाद जीरा भुना हुआ ४ रत्ती, पञ्चामृत पर्पटी २ रत्ती सेवन कर उपरसे लवण भास्कर चूर्ण मिश्रित तक्रामृतका पान करते रहें, भोजनके बाद हिंग्वाष्टक चूर्ण आधा माशा अग्नितुण्डीवटी २ रत्ती नीम्बूके रसके साथ सेवन करते रहें।

गेस्टिक ट्रबलके रोगीको अधिकतर दिनमें ५-६ बार तक्र (छाछ) का सेवन करते रहना चाहिये, अति लाभप्रद होगा। यदि रोगी अन्न परित्याग करके केवल लबण भास्कर चूर्ण तक्रामृत का २-३ मास सेवन करता रहे तो विना औषधिके रोगी ठीक हो जावेगा। रोगी गऊकी छाछ का सेवन करे तो शीघ्र लाभ होगा।

असमर्थावस्थामें दिनमें केवल एक बार हाथसे पिसे आटेकी रोटी बिना चुपड़ी, अरहर की दाल, मूंगकी दाल, लोकी परवल, पालक का शाक थोड़े घीमें वधारी हुई सेवन करे।

सञ्जीवनी पञ्चामृत पर्पटी अग्निमार्तण्ड रस आदि योग ग्रन्थोंमें वाणत है।

ज्योतिषका प्रारम्भिक शिक्षण (४)

[लेखक : श्री राधाकृष्ण शर्मा ज्योतिर्विद् एम.ए वी.एड जोधपुर]

३ मंगल :—

लाल रंगका होनेसे युद्धका देवता God of romanch का ग्रह अथवा अद्भुत कल्पित कथाओंका नक्षत्रपुञ्ज कहा जाता है। पृथ्वी से समानता होने के कारण इसे अंगारक या भू-पुत्र भी कहा जाता है। इसकी पृथ्वीसे दूरी लगभग ६२५००००० मील मानी जाती है, परन्तु प्रति १५वें वर्ष यह पृथ्वीके अत्यन्त निकट आ जाता है। जैसा कि ११।६।१९५६ को आया था, तदुपरान्त ६।८।१९७१ को। इस समय इसकी दूरी मात्र ३४६००००० मील रह जाती है।

इसका व्यास ४१९५ मील तथा सूर्य परिक्रमामें लगभग ६८७ दिन लगते हैं। इसकी गतिमें परिवर्तन होता रहता है। पूर्वमें उदय एवं पश्चिममें अस्त होने वाला यह ग्रह प्रायः एक राशि पर १$\frac{1}{2}$ माह रहता है।

मंगल पर दो लघु चंद्रमा हैं। एक Deimos डैमास जिसका व्यास लगभग ५ मील तथा दूसरा phabos फेवस जिसका व्यास लगभग डैमाससे दूना है। वहां वायु एवं जल है। यह बुधसे २ लाख योजन ऊपर है। यदि यह ग्रह वक्र गतिसे न चले तो ३-३ पक्षमें एक-एक राशि भोगता हुआ १२ राशियोंको पार करता है।

क्रूर मति मंगल जिसे कुछ 'युद्ध देवता' या कमाण्डर इन चीफ मानते हैं। यह देश प्रेम, साहस, शहनशीलता, कठिन परिस्थितयों एवं विभिन्न समस्याओंको हल करनेमें सामर्थ्य तथा खतरे उठानेमें तत्परताका प्रतिनिधित्व करता है।

इस तारा ग्रहको आर, वक्र, क्षितिज, रुधिर, आवनेय, अंगारक, क्रूरनेत्र, भूपुत्र, मंगल, भौम आदि नाम दिये हैं।

यह तमोगुणी मंगल युवावस्था वाला, साहसी, प्रतापी, क्षीणकटि युक्त, क्रूरमति, अति चपल, उदार, कामी, उग्रस्वभाव पित्त प्रकृतिप्रधान, रक्तवर्ण, क्षत्रिय जाति, अग्नि-तत्व प्रधान, रात्रिबली. अशुभ पाप ग्रह है! यह पशु सदृश एवं धातु स्वरूप ग्रह है। दग्ध वस्त्र, कार्तिकेय अधिदेवता, पृष्ठोदित ग्रह है। दक्षिण दिशाका स्वामी तथा अग्नि स्थानों पर वास करने बाला है! मंगल मज्जा, तिक्त रस, दिन, ग्रीष्म ऋतु तथा स्वर्ण धातुका स्वामी है। इसका वार मंगल है। यह एक-एक राशि पर १$\frac{1}{2}$ माह तक रहता है। स्वराशि १/८ मेष एवं वृश्चिक है। मकरमें उच्च व कर्कमें नीच का होता है। इसका भाग्यांक ९ है।

मंगल उर्ध्व दृष्टि वाला, रात्री बली, ७ व ८वें ४थेभाव पर पूर्ण दृष्टि रखता है। सूर्य, चन्द्र, गुरु मित्र, बुध शत्रु एवं शनैश्चर सम या उदासीन हैं। यह अपने वार, नवांश, द्रेष्काण, वर्ग, मीन, वृश्चिक, कुंभ, मकर, मेष राशिमें, रात्री, दक्षिण दिशामें, राशिके आदिमें तथा १०वें भावमें बलवान् होता है।

मंगलसे गुण, पराक्रम, स्फूर्ति, साहस,

धैर्य, आत्मविश्वास, तृतीय सहज भाव, रोग, शत्रु, मनोभिलाषा, भूमि, जाति आदिके विषय में विचार किया जाता है।

यह रक्तवर्णकी वस्तु, धातु, तांबा, सुवर्ण, मृत्तिका, मूंगा, मदिरा, केशर कस्तूरी, गुड़, मसूर, शस्त्र, स्टील तथा पारा, मनसिल, हरताल, अग्निकर्म, साहस कार्य, व वैलाधिपत्य माना जाता है। इसके अतिरिक्त कृषि सम्बन्धी, जायदात, दृढ़ता, अग्नि, उत्पात, युद्ध, रक्त, क्रोध, घृणा, झूठ, उत्तेजना, दुर्घटना, पाशविक प्रवृत्ति, भाई बहिन, क्रीड़ा, खेल, एवं अनैतिक प्रेमका प्रतिनिधि है।

मंगलका पेटसे पीठ तक, नाक, कान, फेंफड़े, शारीरिक बल आदिसे संबंध है। अशुभ होने पर कफ, गर्मी, शस्त्राघात, अग्निभय, पित्त, क्षय, ज्वर, खून बहना, रक्त विकार, संक्रामक रोग, चेचक, खसरा, प्लेग, ग्रन्थिरोग कारक होता है।

यह पुलिस अथवा सेनामें, विद्युत् शक्ति, हथियार बनानेके कारखानेमें सर्जरीका कार्य करने वाले, खिलाड़ी तथा दुराचार एवं चौर कार्यरत्त कार्यकर्ताओंका प्रतिनिधित्व करता है। प्रभाव, प्रयत्न, एवं अधिकारोंका उपयोग, अनुशासन प्रिय सैनिक स्वभाव, दृढ़ व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, प्रशासनिक योग्यता, वैज्ञानिक विषयोंका अध्ययन सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रोंमें नेतृत्व मंगलकी विशेषताएं हैं।

मंगलका फल २८ से ३२ वर्षकी अवस्था में होता है। मंगलके संतान बाधक होने पर रुद्राभिषेक करना चाहिए। निर्बल या अशुभ होने पर मूंगा धारण करना एवं मंगलका व्रत करना शुभ होता है।

४ बुध :—

बुध सूर्यसे ३६८४१४६७ मील दूर, सूर्यके अधिक निकट होनेके कारण अधिक प्रकाशवान् ग्रह है। यह सूर्यसे कुछ ही पल पूर्व उदय एवं सूर्यास्तके कुछ ही पल उपरान्त अस्त होता है। इसका ताप ३५०°C तक रहता है। पर सूर्य के निकट व दूर होने पर ताप भी घटता-बढ़ता जाता है। इसका व्यास ३,००० मील है। औसत गति ३० मील प्रति सैकण्ड तथा सूर्यकी परिक्रमा ८८ दिनमें पूरी करता है। एक राशि पर स्थूल रूपसे २५ दिन रहता है। बुध पर कोई वायुमण्डल नहीं है।

यह शुक्रसे २ लाख योजन ऊपर है। जब सूर्यकी गतिका उल्लंघन कर चलता है तब आंधी बादल व सूखेके भयकी सूचना देता है। बुध रोहिणीका पुत्र है। श्राद्धदेव वैवस्तव मनु के १० पुत्र एवं एक पुत्री इला थी। इलाका विवाह चंद्र पुत्र बुधसे हुआ बुधने इलासे एक धर्मातमा पुत्र उत्पन्न किया। इसने १०० से भी अधिक अश्वमेध यज्ञोंका अनुष्ठान किया और वह पुरुरवाके नामसे विख्यात हुआ।

सौरमण्डलमें इसे युवराजका स्थान देकर वाणीका प्रतिनिधित्व करने वाला ग्रह माना है। गुरुका दूत नियुक्त किया जाकर संसार भ्रमण करने हेतु सूर्यनारायणने वक्तृत्व शक्तिके साथ २ उड़नेकी शक्ति व गति भी प्रदान की। फिर बुधको बुद्धि, आरोग्यता पुनर्जीवन अथवा कायाकल्पका प्रदाता माना गया।

इसे सौम्य, हेम्न, वित्त, ज्ञ, बोधन, चंद्र-पुत्र, तारातनय, इंदुपुत्र भी कहा जाता है। बुध दूर्वादल वर्ण अर्थात् हरित वर्णका, स्पष्ट वक्ता, हास्य-व्यंग्यप्रिय, सुन्दर एवं प्रसन्न मुद्रा, क्षीण-

काय, वात-पित्त-कफ प्रकृति वाला एवं रजोगुणी ग्रह है। यह स्वभावसे मिश्रित, पृथ्वी तत्वसे पूर्ण, बुद्धि एवं मस्तिष्कसे वणिक्, पर जातिसे शूद्र एवं नपुंसक ग्रह है। इसका शरीर पक्षीके समान, विद्वान्, पंडितों एवं बुद्धिमानोंके समाज में रहने वाला, उत्तर दिक्वासी है। यह शरद् ऋतु एवं सुगन्धित तेल, हाथी दांत, कर्पूर, खांड, दाल, मूंग, रौप्य, कांस्य, धातु, पन्ना, जलहत वस्त्र, क्रीड़ाभूमि एवं मिश्रित रसका स्वामी है। वार बुध, अधिदेवता विष्णु एवं प्रदेश विन्ध्यसे गंगानदी पर्यन्त माना गया है।

यह मिथुन तथा कन्याका स्वामी, कन्यामें उच्चका, मीनमें नीचका तथा मूल त्रिकोण राशि कन्या है। यह ७वें भावको पूर्ण दृष्टिसे देखता है। मिथुन कन्या, धनुः राशिमें स्वदिन, स्ववर्गमें एवं उत्तरायणमें बली होता है। सूर्य एवं शुक्र मित्र, चंद्रमा शत्रु तथा मंगल, गुरु, शनि, सम हैं। बुधका भाग्यांक ५ है।

सुख भाव (४) का कारक, बुधसे वाणिज्य, वाणी, गणित, शिल्प चित्र, नृत्य, गायन, वाद्य, हाथ, पांव, त्वचा, विद्या, बुद्धि, चातुर्य, व बन्धु सुहृद, मामा, चाचा, भतीजे आदिका विचार किया जाता है।

यह स्नायु, श्वांस, मुख, नासिका संबंधी रोग, मूकत्व, मतिभ्रम नाड़ी कम्पन, रक्त हीनता, सिरदर्द, दमा, फैंफड़े शूलादि रोगोंसे संबंधित होता है। यह अशुभ होने पर गुह्य, नेत्र, उदर, वायु, कुष्ट, मंदाग्नि, रक्तादि रोगों से तथा विद्वानोंसे भी कभी-कभी पीड़ित कर देता है।

कूट नीतिज्ञ, उच्च स्तरीय तार्किक एवं महान् प्रतिभाका द्योतक बुद्धि जीवि, बुध विज्ञान, पाण्डित्य, ज्योतिष, सत्य, शिक्षण, शिल्प, चिकित्सा, उद्योग, व्यापार, प्रकाशन, सम्पादन, लेखन, युक्ति-कुशल, मित्रताका प्रतिनिधित्व करता है। यह अध्यापक लेखक, संपादक, खिलाड़ी, अभिनेता, एकाउण्टेण्ट, इंजीनियर, शिल्पकार, मूर्तिकार, डाक तार विभागका बीमाका कार्य करने वालोंका प्रतिनिधित्व करता है।

यह आध्यात्मिक शक्तिका प्रतीक है। इसके द्वारा अतिरिक्त प्रेरणा सहेतुक निर्वाचक बुद्धि, वस्तु परीक्षण शक्ति, समझका विश्लेषण किया जाता है।

बुधका प्रभाव ३२ से ३५ वर्षकी अवस्था में होता है। इसके संतान बाधक होने पर बिधान सहित सम्पुट चण्डीका पाठ करना चाहिए। अशुभ फलको दूर करनेके लिए पन्ना या विधाराकी जड़ी धारण करना शुभ रहता है।

५ गुरु :—

सौर मण्डलमें सर्वाधिक गुरुतर, वृहदाकार एवं महाकाय वाला ग्रह है। इसका व्यास ९८९७२० मील तथा ८ मील प्रति सैकण्डकी गतिसे लगभग १२ वर्षमें सूर्यकी परिक्रमा पूरी करता है। सूर्यसे इसकी दूरी लगभग ४८३२००००० मील है। पृथ्वीसे ३६७,०००,००० मील तक आ जाता है। एक राशि पर १ वर्ष तक रहता है। पूर्वमें यह उदय तथा पश्चिममें अस्त होता है। गुरुके कुल १२ चंद्रमा है। उनमेंसे ४ की खोज १६१० में गेलेलियोंने की, एककी १८९२ में प्रो०ई०ई० बरनार्डने की। गुरुकी सतहका ताप १३८ से० ग्रेड है।

यह मंगलके ऊपर दो लाख योजनकी दूरी पर स्थित है। ऋषि कर्दमकी तृतीय पुत्री श्रद्धा का विवाह अंगिरासे हुआ, उससे बृहस्पतिका जन्म हुआ। समस्त ग्रहोंसे यह अधिक बली एवं शुभ है। कोमल मति संपत्तिका प्रदाता व मानवताका हितैषी है। सौख्य एवं विज्ञानका सार ग्रह जो कि समृद्धि एवं हर्षका प्रतीक है। सौर मण्डलमें मंत्रित्व पद, वृद्ध एवं विद्वत्ताका पद गुरुको ही सोंपा है।

अंगिरा, जीव, सुरगुरु, वाचस्पति, गुरु, सुराचार्य, देवेज्य, ईज्य, द्यु पितर इनके पर्याय हैं। विदेशोंमें भी Baal of the Bobylonians, orisis of the Egyptins, Gleus of the Greeks, Thor of the Norse mythology एवं Roman Jupiter नाम दिए हैं।

यह विधि, धर्मनीतिका पंडित देव गुरु बृहस्पति, बृहद उदर एवं स्थूल गौर तन, कफ प्रकृति, भूरे बाल व नत्र वाला, पीत वर्ण, अत्यन्त विद्वान्, चतुर, सत्वगुण युक्त, क्षिप्र स्वभाव, परमार्थी, ब्राह्मण जाति, आकाश तत्व, द्विपद ग्रह है। अधिदेवता इन्द्र, धातु स्वर्ण, रत्न पुखराज, दिशा ईशान, हेमन्त ऋतु, यह मीठा रस, महीना, चर्बीका स्वामी है। वार गुरु, स्वराशि धनु व मीन, उच्च कर्क, मकरमें नीच तथा मूल त्रिकोण राशि धनु व भाग्यांक तीन (३) है।

सम दृष्टि ग्रह ५-६ भावोंको पूर्ण दृष्टिसे देखता है। यह कर्क, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन राशिगत, स्ववर्ग, स्ववार, उत्तरायण तथा राशि एवं दिवस के मध्यमें एवं लग्नमें अधिक बली वाना गया है।

सूर्य, चंद्र, मंगल मित्र, बुध-शुक्र शत्रु एवं शनि सम होते हैं। गुरु धन, लक्ष्मी, न्याय, सन्तान, पुत्र, धर्म, कर्म कारक, आध्यात्मिक एवं पारलौकिक सुख, विवेक, बुद्धि, ज्ञान, स्वास्थ्यका विचार गुरुसे किया जाता है। यह सुवर्ण, कांस्य, धातु, दाल, चना, जो, गेहूँ, घी, पीत पुष्प, फल, वस्त्र, धनिया, हल्दी लहसुन, प्याज, ऊन, मोम आदिका अधिपति है। प्रतिनिधि पशु अश्व है। सिद्धान्त वादिता, उदारता, उच्चाभिलाषा, शान्त स्वभाव, मंत्रित्व, पुरोहित्व, अग्रज, राजनीति, सम्मान, पति कल्याणका भी द्योतक है।

गुरु अपना फल १६।२०।४०वें वर्षमें देता है। सन्तान हेतु गुरु प्रसादार्थ पित्रेश्वरोंकी तिथियोंमें श्राद्ध एवं दान देना चाहिए। निर्बल या अशुभ होने पर पुखराज या भांगराकी जड़ धारण की जाय।

६ शुक्र :—

अत्यन्त प्रकाशवान् तथा तेजस्वी ग्रह शुक्र है। सूर्योदयसे पूर्व तथा सूर्यास्तके पश्चात् प्रायः इसे देखा जा सकता है। इसे सान्ध्य तारा भी कहते हैं। यह सूर्य से ६७०००००० मील तथा पृथ्वीसे ३४३००००० मील दूर है। इसका व्यास लगभग ७७०० मील है जो पृथ्वीके व्यास से कुछ ही कम है। इसकी गति २२ मील प्रति सैकण्ड है, एवं सूर्यकी परिक्रमा २२४ दिनमें पूर्ण करता है। स्थूल रूपसे एक राशि पर १ माह तक रहता है। पूर्वमें अस्त एवं पश्चिममें इसका उदय होता है। शुक मण्डल पर कुछ लोग वायु मण्डलकी संभावना करते हैं।

चंद्रमासे ३ लाख योजन ऊपर आभिजित्

सहित २८ नक्षत्र हैं। इसके दो लाख योजन ऊपर वर्षा कारक ग्रह शुक्र है। पाश्चात्य विद्वान् इसे कला, प्रेम, सौन्दर्य एवं आकर्षण की देवी Goddess of *Art*, Love, Beauty and Attraction कहते हैं। यह विषय वासनाओंको उत्तेजित करने वाला एव निःस्वार्थ प्रेमका द्योतक भी है।

शुक्रको भृगु, भृगुसुत, काव्य, सित, आच्छ, दानवेज्य एवं आस्फुजित् कहते हैं। शुभ्र वर्ण, धुंघराले श्याम केश, रुचिर एव स्मरणीय, शरीर सुन्दर नेत्र युक्त, वात तथा कफ प्रकृति, किशोरावस्था, तेजस्वी, ब्राह्मण जाति एव स्त्री ग्रह है। यह जीव संज्ञक, द्विपद, अम्ल रस, वसन्त ऋतु तथा आग्नेय दिशाधिपति है। जलचर एवं शयनागारोंमें निवास करने वाला शुभ ग्रह है। यह वृष एवं तुला राशिका स्वामी। मीनमें उच्च एवं कन्यामें नीचका होता है। एव इसका वार शुक्र है।

कटाक्ष दृष्टिवाला लघु बुद्धि शुक्र दिग्बली हैं, तथा सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि रखता है। स्ववर्ग, स्ववार, स्वोच्च राशिमें तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ, १२ स्थानमें अपराह्न कालमें शुभ होता है।

बुध-शनि मित्र, सूर्य,-चंद्र शत्रु, मगल, गुरु सम एवं भाग्यांक ६ हं।

शुक्र पत्नी भाव कारक ग्रह है। इससे धन, स्त्री, व्यापार, वाहन, रूप, सौन्दर्य, कामेच्छा, वीर्य, प्रेम, अण्डाशय, गुर्दा आदिका विचार किया जाता है। यह हीरा, स्वर्ण, मणी, रजत, आभूषण, स्फटिक, रुई, रेशमी बस्त्र, चावल, चीनी, गेहूँ, मिमरी, अजीर, श्वेत पुष्प, फल, सुगन्ध, हाथी, श्वेत अश्वका स्वामी है।

यह भोग विलास, सांसारिक सुख, संगीत, ललित कला, प्रेम मनोरंजनका द्योतक है। यह प्रमेह, स्त्री संसर्ग जनित रोग. मूत्राशय. मांस, चर्म, मैथुन युक्त रोगसे संबंधित है।

यह अभिनेता, गायक, चित्रकार, कलाकार, कौतुक वस्तु भण्डार, सुगन्धित तथा शृंगारिक प्रसाधनादि वस्तु निर्माता आदिका प्रतिनिधित्व करता है।

यह प्रायः अपना फल २५ से २८ वर्षकी अवस्थामें देता है। संतान लाभार्थ शुक्रके दुष्प्रभावके शमनार्थ गोपालन करना हितकर है। हीरक, चांदी या सिंह पुच्छीकी जड़ धारण करना लाभप्रद होती है।

७ शनैश्चर :—

उत्कृष्ट एवं सुन्दर ग्रह है। इसका व्यास ७१५०० मील है। इसके चारों ओर ३ वलय-कंकण जैसे चक्र सदैव एक दूसरेसे स्वतन्त्र रूपसे घूमते रहते हैं। शनि सूर्यसे ८८६०००,००० मील तथा ७६१०००००० मीलदूर है। ३० वर्षोमें यह सूर्य परिक्रमा पूर्ण करता है। सूर्यके समीप इसकी गति ६० मील प्रति घण्टा हो जाती है। एक राशि पर स्थूल रूपेण २½ वर्ष लगाता है। यह पूर्वमें उदय एवं पश्चिममें अस्त होता है। शनि पर भी १० चंद्रमाओंकी उपस्थिति मानते हैं। यह अत्यन्त हल्का व ठण्डा है। गुरुसे २ लाख योजन ऊपर शनैश्चर है। यह ३० महीनेमें एक राशि पर भ्रमण करता है।

यह मंद गतिसे चलने वाला बुद्धिमान, विजयी, तीक्ष्ण प्रकृतियुक्त, अहंकारी, कार्यकर्ताओं व श्रमिकोंका आश्रयदाता, सहायक, दासवृत्ति करने वालोंका संरक्षक है। सौरमण्डल

का दूत तथा दुःख व कष्टोंका कारक कहा जाता है। पाश्चात्य विद्वान् इसे अधर्म, अशिष्टता, असभ्यता, आचारहीनताका प्रबल शत्रु एवं अनुशासन सभ्यता. सामाजिक क्रम तथा कृषि कर्मका अधिष्ठाता मानते हैं।

मंद, छायासूनु. सूर्यपुत्र, कोण, तरणितनय, आर्कि, असित् आदि इसके पर्यायवाची शब्द हैं। यह रुक्ष केश, कृश अंग, सुन्दर कातर नेत्र, मोटे-मोटे दांत व नख, कफ वात पित प्रकृति प्रधान, तमोगुणी, कृष्ण वर्ण, दारुण स्वभाव, आलसी एव अन्त्यज जातिका माना है। चतुष्पद, मूल संज्ञक, नपुंसक ग्रह है। अधिदेवना ब्रह्मा. पश्चिम दिशा, कषाय, कसैला रस, धातु लोहा, शीशा, ऋतु शिशिर, वस्त्र जीर्ण, प्रदेश गंगासे हिमालय पर्यन्त, वार शनि, निवास स्थान पर्वत. खान वन या ऊसर भूमि है।

मकर व कुंभ स्वराशि, कुंभ मूल त्रिकोण, तुला उच्च राशि व नीचका मेषमें तथा भाग्यांक ८ माना जाता है। रात्रि बली पाप ग्रह शनि की ३रे व १०वें भाव पर भी पूर्ण दृष्टि होती है। तुला, मकर, कुंभ राशि, सप्तम भाव, दक्षिणायन, स्वद्रेष्काण, शनिवार, कृष्णपक्षका वक्री शनि बलवान् होता है।

बुध-शुक्र मित्र, गुरु सम तथा मंगल सूर्य चंद्र शत्रु होते हैं। शनिसे रोग एवं शत्रुभावका जीवन, आयु. मृत्यु, मृत्युका कारण, दुःख, आपत्ति, विपत्ति, संपत्ति, श्रम, दायित्व, पूंजी लगने वाले कार्य, कृषि, एकान्तवास, सन्यास, दार्शनिकता, मननशीलता प्रसिद्धि, ऐश्वर्य, नौकर, पिण्डली, घुटने. स्नायु आदिका विचार किया जाता है।

दारिद्रये, चौर-भय, हड्डी. पसली, केश, नख, मांसपेशियाँ, वात रोग, श्वास, दमा, उदरव्याधिका शनिसे सम्बन्ध होता है। शनि नीलम, लोहा, उड़द, तिल. नमक, सीसम, कृष्ण वर्णकी वस्तुएं, तेल, वच, नाग. भेंसका स्वामी है। यह कारखाने, मशीनरी कार्य करने वाले, फेरी देने वाले मजदूरोंका प्रतिनिधित्व करता है। इसे जमीन, जायदाद, ठेकेदारीके कार्य करने वालों यातायात, पुलिस जैल, स्थानीय संस्थाओंमें कार्य करने वालोंका भी प्रतिनिधित्व करता है। बली शनि सार्वजनिक प्रसिद्धि, लोकप्रियता व विशिष्टताका दाता होता है।

यह गंभीर, गूढ, अन्धकार, संवेदन, नैराश्य, Cold state of Affairs उद्विग्नता, दृढ़ता, बन्धन यन्त्रणा, अधर्म, कृपणता, असम्मान, अस्वस्थता, निर्धनता, दुर्घटना, दोषारोप, सुस्ती आदिका सूचक है।

शनि का विशेष फल ३६ से ४२ वर्ष की अवस्था में होता है। सन्तान सुख में शनि बाधक होने पर मृत्युञ्जयका आराधन सुखकर होता है। नीलम या लोहे की अंगूठी हितकर रहती है।

राहु-केतु :—

यह दोनों ग्रह परस्पर १८० अंश अर्थात् ६ राशि के अन्तर से स्थित होते हैं ये वक्र गति से अर्थात् अन्य ग्रहोंसे उल्टे घूमते हैं। एक राशि पर भ्रमण करनेमें इन्हें प्राय: १८ मास तथा समस्त राशियों का भ्रमण १८ वर्ष में कर पाते हैं। ये प्रकाश पिण्ड नहीं है। उत्तरी ध्रुवको राहु तथा दक्षिणी ध्रुवको कई एक केतु कहते हैं। सूर्य के १० हजार योजन नीचे राहु घूमता है ; हिरण-कश्यपकी पुत्री

सिंहीका विपाट विप्रचित्ति दानवसे हुआ था और उनसे राहु-केतुका जन्म हुआ।

राहु :—

अन्धकार स्वरूप, साहसी राहुको तम, सर्प, अगु, फणि, सैंहिकेय, असुर भी कहते हैं। विनाश वृत्ति वाला यह ग्रह नील वर्ण कलेवर का मलिन रूप वाला महादारुण स्वभाव, तमोगुणी, पाप ग्रह, नैऋत्य दिशापति, अन्त्यज जातिका है। पृष्ठसे उदित व वन-पर्वतोंमें यह वास करता है। इसकी धातु शीशा, अधिदेवता राक्षस, स्वराशि कन्या, उच्च राशि मिथुन व धनु नीच राशि है। कहीं-कहीं उच्च राशि वृष व नीच वृश्चिकको भी माना है। मूल त्रिकोण राशि कुंभ है। बुध, शुक्र शनि मित्र हैं। यह तीव्र बुद्धि पर आलसी एव दीर्घ-सूत्री, दक्षिण दिशाका स्वामी है। यह मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक, कुंभ राशिमें तथा १०वें स्थानमें बलवान् माना है। ५।७।६।१२वीं दृष्टि पूर्ण होती है।

यह अन्वेषण, यात्रा, वैधव्य, राजनीति, पितामह, विज्ञान गारुड़ी-विद्या, शराबी, शिकारी, जासूस, नाविक, विद्रोहात्मक, एवं आक्रात्मक स्वभाव तथा दुर्गुणोंका प्रतिनिधित्व करता है। यह गोमेद, शीशा, लोहा, नीली वस्तुएं, तिल, सरसों, हड्डी, चर्बी, चर्म, कम्बल, तलवार, घोड़ा, ऊंट, सर्पका स्वामी है। यह मशीनरी, कारखाने, फोटोग्राफी, चित्रकारी, मुद्रण कार्योंसे सम्बन्धित है। इसका विशेष प्रभाव ४२ से ४८ वर्षमें होता है। सन्तान पक्षमें राहुकी विघ्न बाधा दूर करनेके लिए कन्यादान करना चाहिये। चंदन या गोमेद धारण करना चाहिये।

केतु :—

इसे ध्वज या शिखि कहते हैं। तमोगुणी, दारुण स्वभाव वाला, मलिन रूप, मिश्रित वर्ण, छिद्रयुक्त वस्त्र, आचारहीन, वर्णसंकर जातिका अशुभ ग्रह है। स्वराशि मीन तथा धनुमें उच्च व मिथुनमें नीचका होते हुए सिंहमें मूल त्रिकोण का केतु होता है। यह स्नायु सम्बन्धी, कंडु, चर्म रोग, गुप्त षड्यन्त्र आदिसे सम्बन्धित ग्रह है। यह ज्ञान, मातामहका सूचक ग्रह है। यह लहसनिया, लोहा, घूम्र वर्णके वस्त्र, बकरा व शस्त्रोंका स्वामी है।

नीलमणी इसकी धातु है। यह वृष, धनु, मीन राशिमें बलवान् होता है। केतुका विशेष फल ४८ से ५४ वर्षावस्थामें हो सकता है। सन्तान पक्षमें बाधक हो तो गौका दान करना ठीक होता है। कुप्रभावको रोकने हेतु लहसनिया धारण करना चाहिये।

प्रजापति URENOUS :—

यह ग्रह शनिके पश्चात् आता है। यह सूर्यसे १७८२३००,००० मील दूर पृथ्वीसे १६८७०००,000 मील है। यह ग्रह ४½ मील प्रति सैकण्डकी गतिसे सूर्यकी परिक्रमा पूर्ण करनेमें ८४ वर्ष लेता है। लगभग ७ वर्ष एक राशि पर रहता है। इसके उपग्रह अथवा जो चन्द्र हैं जो पश्चिममें उदय एवं पूर्वमें अस्त होते हैं। इसका वायुमण्डल गुरु व शनिके समान है। सर विलियम हरशैल जो ब्रिटेनके ऑफ्टेगॉन गिरजेका जन्म अर्गनि वादक था ने १३ मार्च १७८१ को रात्रीके समय उसे अचानक ही खोज निकाला। इसके वाद उसे सरकी उपाधि मिली एवं राजकीय खगोलज्ञ नियुक्त हुए। इसे गुरुका पितामह मानते हैं।

यह जागृतिका द्योतक, सर्वातिरिक्त या गुप्त समझा जाने वाला अनूठा व अद्‌भुत प्रभावी ग्रह है । इसे प्रजापति ब्रह्मा तथा वारुणी या वरुण तो कहते ही हैं पर आंग्ल भाषामें इसे यूरेनश या हर्षल भी कहते हैं। इसकी स्वराशि कुंभ, उच्च राशि वृश्चिक तथा नीच राशि वृष है। वायु तत्व राशियोंमें मिथुन, तुला, कुंभ पर बलवान् माना जाता है। यह मस्तिष्क एवं नाड़ी मण्डल पर प्रभाव डालने वाला ठण्डा, परिवर्तन शील ग्रह है। यह हठ स्वतन्त्रता, चरित्र-बल, प्रतिकूलताका परिचायक एवं असाधारण बुद्धिका दाता है। यह मौलिकता तथा विषमताका ग्रह है एवं आकस्मिक सौभाग्य दुर्भाग्यका कारण बनता है । यह विद्युत्, लोक व्यवहार, सिनेमा हड़ताल अनुसंधान, क्रांतिकारी विचारधाराका प्रतिनिधित्व करता है।

वरुण :—NEPTUNE :—

यह जलाधिपति ग्रह है । इसका व्यास ३३१८३ मील तथा सूर्यसे २७९२०००००० मील तथा पृथ्वीसे २६६७०००००० मील पर अवस्थित है। यह ३१/३ मील प्रति सैकण्ड की गतिसे सूर्य परिक्रमा १६४ वर्षमें करता है। यह सूक्ष्म ग्रह १४ वर्ष १ राशि पर रहता है। इसकी सतह अत्यन्त ठण्डी है।

सर्व प्रथम बर्लिन वेधशालाके संचालक डॉक्टर गैलेने २६ सितम्बर १८४६ की रात्रि में आकाशमें वरुण ग्रहको देखा । ग्रीक्सने इसका नाम नेप्च्यून व भारतीयोंने इसका नाम वरुण रखा।

यह अत्यन्त संयमी व नम्र ग्रह है। स्व-राशि मीन उच्च राशि कर्क व मकरमें नीच का होता है। जल तत्व प्रधान कर्क, वृश्चिक तथा मीनमें यह बलवान् होता है।

यह यात्रा, गूढ़ व गुप्त कलाओंके अध्ययन के लिए शुभ होता है। प्रेरणा प्रदान करता है। भावुक, धूर्त, मायावी रहस्यमय एवं परि-वर्तन शील बना देता है। यह पैतृक धन प्रदान करने हेतु सौभाग्य कारक है। सामान्यतः यह व्यक्तिको सुस्त व लापरवाह बना देता है। सूर्य व चंद्रमासे दृष्ट हो तो साहित्य या अन्य ललित कलाओंमें निपुणता प्रदान करता है। यह विनाशकारी ग्रह भी माना जाता है जो उपद्रव, मृत्यु व विनाश कारक होता है। गूढ़ विद्या जादू टोना, राजनीतिक चेतना व औद्योगिक विकास इसकी विशेषता है। इसका अंक ७ है।

श्री रिचर्ड निक्सनका राजनैतिक भविष्य

[लेखक :—श्री पशुपतिनाथ प्रसाद गुप्त, ज्योतिर्विद्,]

अपने प्रस्तुत ज्योतिषीय विवेचनमें मैं सन् १९७२ ई० के चलित सत्र के अवशिष्ट भागमें निकट-भविष्यमें अमेरिका अथवा संयुक्त-राष्ट्र संघके वर्तमान राष्ट्रपतिके राजनैतिक भविष्य पर सीमित वाक्योंमें प्रकाश डालनेका प्रयास कर रहा हूं।

श्री रिचर्ड निक्सनके जीवन-चक्रमें बुधकी महा दशामें बुधकी भुक्ति चल रही है। केतुके नक्षत्र (मूल-नक्षत्र) में बुध अवस्थित है। बुध धनु-राशिमें संस्थित है। सिंह-लग्नोत्पन्न इस जातक के लिए बुध है धनेश तथा लाभेश। साथ ही बुध है लग्न-कुंडलीके पंचम-भावमें सूर्य, मंगल तथा बृहस्पतिकी युतिमें। केतुके नक्षत्रमें बुध स्थित है। केतु है लग्न चक्रमें बुधकी राशि अर्थात् कन्या-राशिमें, तथा लग्न भावसे द्वितीय-भाव अर्थात् परम-मारक भावमें। नवमांश-चक्रमें केतु है शुक्रकी राशि अर्थात् वृष-राशिमें, परन्तु है सप्तम-भावमें, जो भी गम्भीर मारक-भाव कहा जाता है।

लग्न-चक्रके अनुसार बुध है मारक-भावेश, क्योंकि सिंह-लग्नोत्पन्न जातकके द्वितीय-भाव का यह स्वामी है। साथ ही, सिंह-लग्नोत्पन्न जातकके लिए, यद्यपि मंगल एक योगकारक ग्रह है तथापि, नवम-भाव अर्थात् बाधक-स्थान का स्वामी होनेके कारणवश, यह बुधके साथ रहकर इसका संकेत दे रहा है कि निकट-भविष्यमें इसी बुधकी चलित दशा तथा भुक्ति में रिचर्ड निक्सनका राजनैतिक भविष्य अन्ततोगत्वा तमावृत तथा धूमिलकृत होकर ही रहेगा। इनके लग्न-चक्रके चन्द्र-लग्नसे एकादश-भाव है बाधक-स्थान। इस बाधक स्थानका स्वामी भी वही मंगल है। इसलिए मेरी ज्ञान-परिधिके अनुसार बुधका मंगलके साथ रहना, रिचर्ड निक्सनका निकट भविष्यमें राजनैतिक जीवनका ह्रास तथा पतन ही घोषित करता है। उधर, नवमांश-चक्रमें भी इसी बाधक-ग्रह (मंगल) के साथ यह बुध अवस्थित है। नवमांश-चक्रमें चन्द्रमा है बाधक-भावका स्वामी। साथ ही, यह चन्द्रमा है एकादश-भावमें, अवस्थित जहां बुधकी राशि (कन्या राशि) संस्थित है। बाधक-ग्रह (मंगल) की पूर्ण दृष्टिसे चन्द्रमा भी बुधके लिए प्रतिकूल ही प्रतीत हो रहा है। मेरी समझसे एकादश-भाव भी त्रिषडायके दोषसे अनिष्टकर ही प्रमाणित हुआ करता है।

अमेरिकाकी लग्न-राशि है मिथुन-राशि, जिसका स्वामी है बुध। स्वतंत्र-अमेरिकाकी लग्न-राशि है धनु-राशि, जिसका स्वामी है वृहस्पति (गुरु)। धनु-राशिका बाधक-पति है बुध। एवं मिथुन-राशिका बाधक-पति है वृहस्पति। भारतवर्षकी लग्न-राशि है कर्क-राशि अथवा मकर-राशि। स्वतंत्र-भारतवर्ष की लग्न-राशि है वृष-राशि। एवं गणतंत्र-भारतकी लग्न-राशि है मीन-राशि। बंगला-देशकी उदय-राशि है धनु-राशि। साथ ही रूसकी लग्न-राशि है कुम्भ-राशि।

मेरी गणनासे सन् १९७२ ई० के जूनमाह के द्वितीय सप्ताहसे लेकर २५वीं नवम्बर १९७२ ई० के मध्यस्थ कालमें शनैः शनैः श्री रिचर्ड निक्सनके राजनैतिक जीवनका पूर्ण ह्रास तथा पतन होना प्रारम्भ हो जायगा। संयुक्त-राष्ट्रसंघ (उ० अमेरिका) के राष्ट्रपति के भावी निर्वाचनमें, जो सम्भवतः इसी कालावधि के निकटप्राय होगा, इनको सफलता नहीं मिल सकती है, क्योंकि जनमत तथा आभ्यन्तरिक एवं बाह्य प्रतिक्रियाओंकी गतिविधिकी प्रतिकूलता तथा दुष्प्रभावके फलस्वरूप वर्तमान राजनैतिक स्थितिसे निम्नस्थ सीमा पर इन्हें जाना पड़ेगा । साथ ही, कलंक तथा अप्रतिष्ठाका कुफल भी इन्हें भुगतना पड़ेगा। इनके पतनकी राख पर किसी अन्य राजनीतिज्ञ की मंजिल बनेगी तथा भारतवर्ष बंगलादेश एवं रूसके साथ भावी राष्ट्रपतिकी मैत्रीपूर्ण नीति रहेगी । पाकिस्तान तथा चीनके लिए, निकट-भविष्यमें इस प्रत्याशित अमेरिकन राष्ट्रपतिके निर्वाचनके फलस्वरूप, बहुत ही बुरे दिन आ रहे हैं। पाकिस्तानका विकेन्द्रीयकरण होता रहेगा।

आश्चर्य नहीं कि भारतवर्ष आगामी नवम्बर माससे दिसम्बर मासके मध्य अन्तर्राष्ट्रीय जगत्में राजनैतिक महत्व तथा पद पर उतुङ्ग तथा शिरस्थ स्थल पर रहेगा।

व्यापार वाणी

श्रावण, भाद्रपद, आश्विन

[लेखक :—पं० शंकरलाल गौड़ "शंभु कवि" तपस्थली दूरा (आगरा)]

श्रावण

श्रावण मासका प्रारम्भ शुभ दिन गुरुवार को हुआ है। जो शुभफलका परिचायक है! नागपंचमी सूर्यवारको, पश्चिम दिशामें बुधका अस्त घोर वर्षाका सूचक तथा व्यापारिक लाइनको बदलने वाला है । अश्लेषा रविः स्त्री पुरुष योग मण्डूक वाहनसे है। वर्षा सम बुधवारके दिन भरणी नक्षत्र दैनिक नक्षत्रमें रवि नक्षत्रका परिवर्तन पश्चिमी राष्ट्रोंमें अराजकता पैदा करता है। दिनांक ४ अगस्त शुक्रवारको सिंह राशि पर भौमका होना समस्त धातुओं लाल वस्त्रों शस्त्र लोहादि पदार्थोंमें अच्छी तेजियां बन जाती है। भौम पाप ग्रहके साथमें नहीं हैं अतः सूक्ष्म तेजीका सूचक है जैसा कि मेरे अभिन्न स्नेही बन्धुवर ज्योतिष विभागाध्यक्षः श्रीराधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुरजा श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्योतिषाचार्यने व्यापार विज्ञान प्रथम भागमें लिखा है :—

यदा सिंह राशौ गतो भूमिपुत्रः समे धातवो रक्त वस्त्राणि यानि । तथा शस्त्र लोहादि यन्त्राणि धीमन् ! महार्घाणि सर्वाणि वेद्यानि तावत् ।। (व्या.वि. पृ० १९२)

सूर्येन्दु संगम तिथि (अमावस्या) हरियाली बुधवारको है। जिसका फल भारतीय ग्रन्थोंमें श्रेष्ठ कहा है। पांच गुरुवार भी श्रेष्ठ हैं, परन्तु पश्चिमी देशोंमें विग्रह पैदा करने वाले हैं :— फल इस प्रकार है। यत्र मासे पंचवारा जायंते

च वृहस्पतेः । विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते !!" अतः स्पष्ट है कि यवन राष्ट्रोंमें विग्रहकी ज्वाला भड़क उठेगी ! १६ अगस्त बुधवारको भुवन भास्कर भगवान् नवीन सूक्ष्म गणितानुसार १३।२५ पर सिंह राशिमें आ रहे हैं। इसी दिन बुधोदय पूर्वमें होता है दोनों बलिष्ठ ग्रह वायु संचार के साथ घोर वर्षा करते हैं। सिंहका सूर्य तेजीका वातावरण पैदा करता है। यथा :–

सिंहे गते दिनपतौ विपणे महर्घम् ।
ईक्ष्वादि मिण्ट तिल-तैल रसादिकेषु ।।
धात्वादि रत्नरजतादि स्वर्णकेषु ।
पापान्विते सुरगुरोर्नहि पूर्णदृष्टिः ।।

अर्थ स्पष्ट है कि गुड़ खाण्ड, शक्कर तथा तेल सरसों अलसी तथा अंडीके बीज घृत आदि वस्तुओं, सोना चांदी रत्न तथा शेयर्स में स्वर्णादिके भावोंमें अच्छी तेजीकारक होते हैं। सूर्य पापग्रहसे युक्त है अतः अच्छी तेजी आवेगी। कुछ समय वाद वार प्रभाव बुधसे मंदापन आ जाता है। सूक्ष्म गणितानुसार सायन कन्यायां भानु:का प्रवेश $\frac{3}{2}\frac{0}{5}$ पर है जो शरद ऋतुका प्रारंभ कर देता है। वर्षा ऋतु भारतीय ज्योतिर्विज्ञान ग्रन्थोंसे समाप्त हो जाती है। रक्षाबन्धन (श्रावणी) गुरुवारका है जो शुभफलप्रद ही प्रतीत हो रहा है।

भाद्रपद

भाद्रपदका श्रीगणेश सौम्य योगके साथ शुक्रवारको है। इसके फल पर जब हम विचार करते हैं—तो 'प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च" शनिवार पाँचका होना भयभीत दशा पैदा करने वाले हैं यथा —

शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी ।
ईशान देशभङ्गश्च वह्निदाहो महार्घता ।।

अनाज पर तेजी करने वाले हैं। २६ अगस्त शनिवारको धनु राशि पर गुरुदेव मार्गी अवस्था पर आ रहे हैं। रुई तेल खाण्ड सरसों अलसी अन्न सर्व वस्तु मंदी होती है। १ सितम्बरको सिंह राशि पर बुधदेव अपना व्यापार जगत्में अद्भुत फल दिखायेंगे। विशेषतः सोना खाण्ड, कपूर, सूत, देवदारु पर विशेष तेजी होती है। दिनांक ५ सितम्बर भौमवार को धनुः राशि पर राहु हो रहे हैं–महिषी घोड़े हाथी गर्दभोंका संग्रह करनेसे दूसरे पांचवें महीनेमें पंचगुना लाभ हो। यथा :–सैंहिकेयो यदा याति धनुराशौ क्रमात्ततः । महिष्यादे स्तदा कार्यः संग्रहो वसुधा तले ।।

(वर्षप्रबोध पृ० ११५)

इसी दिन अगस्त्य महर्षिजीका उदय हुआ है। अतः वर्षा रुक जाती है। यह परिभाषा लागू हो जाती है। यथा :—उदित अगस्त्य पंथ जल सोखा" भाद्र शुक्ला ८ शनिवार १६ सितम्बरको सूक्ष्म गणितानुसार कन्या राशि पर सूर्य १२।३५ पर प्रवेश कर रहे हैं। क्रूर वारके दिन सूर्यका राशि पर बदलना धान्य भावको तेज करता है। यथा :–

अन्यार्कतो भाद्रपदेऽल्पवृष्टिः ।
शनेर्जने स्याद्वहु धान्यनाशः ।।

२० सितम्बर बुधवारको कन्या राशिपर भौमदेव पदार्पण करेंगे? जब कन्याके भौम होते हैं तो चन्दन पाट वारदाना लाल वस्त्र रेशम ऊन सूती कपड़े धातुवाने पर तेजी आती है। यथा :–

"यदा कन्या मही जो व्रजेच्च तदा चन्दन पट्ट वस्त्र महर्घम् ॥ अनन्त चतुर्दशीको सूर्यदेव दक्षिण गोलमें आ रहे हैं। शुक्ला १५ शनिवार की है जो अशुभ सूचक हैं।

आश्विन मास

आश्विन मासका प्रारंभ नव सूक्ष्म गणित से क्षय तिथिको हुआ है। वार सूर्यवार है। अतः उत्तर देशोंमें जन धनका भारी विनाश होता है। २ अक्तूबर सोमवारको वृषभ राशि पर शनिदेव वक्री हो रहे हैं। जो नये रोग पीड़ा भय झगड़े पैदा करने वाले तथा तेजीके सूचक हैं। विशेषतः अन्न पर विशेष तेजी आती है। सर्व पितृ अमावस्या भी शनिवारकी है। इस दिन बुधोदय पश्चिममें वर्षा तथा ऊंचे भावों को नीचे गिरा देते हैं। सर्वशक्तिमान् माँ दुर्गा नवमी सोमवारके दिन तुला संक्रान्ति है। जो धान्यके भावको मंदा कर्पासकी अभिवृद्धि करती है। यथा :—गुरुणाऽतिसमर्घमन्नकं शशिना वा भृगु सूनुना तथैव।' सूक्ष्म गणितानुसार तुलाराशि पर संक्रांन्तिका प्रवेश विजयादशमी भौमवार ४/१० पर हुआ है। अतः क्रूरवारका फल नेष्ट बतलाया है। "भौमे यदा संक्रमते च भानुः तदा महर्घं भुवि वस्तु जातम्। क्षारं तिलास्तैल रसादिकञ्च कर्पूर धान्यं बहुधा महर्घम् ॥" अर्थ स्पष्ट है कि नमक तिल तेल तथा रसादि पदार्थ धान्य आदिकोंमें प्रायः तेजियां हो जाती हैं। तेजी होने पर बेचने वाले व्यापारी लाभ उठाते हैं। व्यापार वायदा में तेजीमें माल बेचना अच्छा है।

भाग्यवृद्धिकारक अनुभूत प्रयोग

[ले०— श्री भंवर लाल जोशी, रींसस राजस्थान]

यह प्रयोग किसी भी दिन पुष्य नक्षत्रमें आरंभ करें। किसी राशि वालोंको चतुर्थ अष्टम द्वादश चन्द्रमा पड़ता हो तो भी विचार न करें।

ब्रह्मचर्य व्रत, समयकी पावन्दी और मंत्र दीक्षा अच्छे गुरुसे ग्रहण करना एवं कूपोदक जल और लाल कनेरके पुष्प इस प्रयोगमें सफलताकी जननी है। भू शुद्धि, दीपक प्रार्थना, गुरु-मंत्रका ध्यान, कलश पूजा, शिखा बन्धन अत्यावश्यक है। यह प्रयोग स्थिर लग्नमें आरंभ करें। कालज्ञान करनेके उपरान्त अमुक गोत्रोऽमुक शर्माऽहं वर्माऽहं गुप्तोऽहं वा ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलावाप्तये भाग्य-वृध्यर्थं एकादश दिनात्मकं बीजमंत्र प्रयोग श्रीसन्तोषी देव्या प्रीत्यर्थमहं करिष्ये वा कारयिष्ये।

"ॐ ह्रीं ह्रीं वां धां मां सां सः हूँ ॐ"

इस मंत्रका प्रतिदिन दो सहस्र जप करनेसे ११ दिनका प्रयोग है। अन्तिम दिन अन्तः शुद्ध गोघृतसे कमल २१ व लाजवंतीके २४ पत्ते व तिल १ किलोसे हवन करके "शिव हरे शिव रामसखे" इस स्तोत्रका पाठ करके क्षमा प्रार्थनासे जप अर्पण करके, कन्या व ब्राह्मणोंको जो १० वर्षसे छोटी हो जिमावें। खटाई भोजन बन्द रखे। एक एक रुपया व एक एक केला दें। प्रयोग सद्य अनूभूत हैं। भाग्य वृद्धि प्रयोगके दिनोंमें ही होने लगेगी।

त्रैमासिक राशिफल विमर्श

[लेखक—ज्योतिषाचार्य श्री पं० कैलाशनाथ उपाध्याय, वाराणसी—१]

श्रावण मासका राशिफल

(ता० २७ जुलाईसे २४ अगस्त १९७२ तक)

मेष—मासारंभसे चतुर्थ सूर्य+मंगल खराब है। विविध परेशानियोंके साथ प्रभाव की वृद्धि होगी। भाग्यस्थ बृहस्पति मार्गी होकर जबर्दस्त कठिनाइयोंको दूर कर देंगे। आमदनी के क्षेत्रमें विशेष परिश्रमसे न्यूनाधिक सफलता मिलेगी। महिलाएं स्वस्थ व प्रसन्न रहेंगी। विद्यार्थी-वर्ग अध्ययनमें सफलता प्राप्त करेंगे। ता० ८,९,१८,२४ अशुभ हैं- सूर्यनारायणको अर्घ्य-दान नियमित दें तो ठीक रहेगा।

वृष—मासके मध्यमें चौथे सू०+मं० का योग घरेलू सुखोंमें बाधक है। भाग्य-वृद्धि व पराक्रम-लाभके लिए संघर्ष रत रहना पड़ेगा। राजनीति-सम्बन्ध रखने वालोंको अग्नि-परीक्षा से गुजरना पड़ेगा—अपव्यय बढ़ जायेगा। व्यापारियों और सट्टेबाजोंको धन-लाभका अवसर मिलेगा, यथेष्ट देवाराधनामें तत्पर रहना आवश्यक है। शुक्लपक्षके दिन कष्टकर रहेंगे।

मिथुन—यह मास प्रायः ठीक रहेगा। घरमें कोई मांगलिक कार्य होगा। यात्रासे कम लाभ होगा। आतिथ्य-सत्कारका अवसर मिलेगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। बड़े लोगोंसे सहयोग, बौद्धिक विकास, यात्रा सुखद होगी। महिलायें पारिवारिक सुख और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी। पढ़ने-लिखने वालों को पूरी सफलता मिलेगी। पहला-चौथा सप्ताह ठीक नहीं है।

कर्क—लम्बे-चौड़े खर्च व कर्ज-भारसे परेशानी होगी। शरीरमें निर्बलता, मनमें अशान्ति रहेगी। कार्य-सिद्धिमें बाधा, विश्वास-पात्रोंसे धोखा, और उच्चाधिकारियोंसे कलह की आशंका है। घरेलू आवश्यकताएं बढ़ेंगी। व्यापार सम्बन्धी कोई नवीन योजना बनायेंगे। खर्च बढ़ेगा। महिलाओंको पुरुष-मित्रोंसे सावधानी रखना आवश्यक है। विद्यार्थीवर्ग शरीर से कुछ पीड़ित रहेंगे। कृष्णपक्षमें ज्यादा परेशानी होगी।

सिंह—द्रव्यकी परेशानी बनी रहेगी, किन्तु साहस और उत्साहमें वृद्धि होगी। धार्मिक आस्था कम हो जायेगी। यात्राके योग हैं। दुष्टजनोंकी संगतिसे मानसिक खेद होगा। ज्वर, व्रण, आकस्मिक दुर्घटनाका भय और लोकापवादकी आशंका बनी रहेगी। शत्रु-सम्बन्धी मुकाबलेमें निश्चित रूपसे विजय समझना चाहिए। यात्रामें सफलता, रसिक वार्तालाप तथा स्वाध्यायमें प्रवृत्ति बढ़ेगी, महिलायें स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगी। तीसरे-चौथे सप्ताहमें सतर्कता पूर्वक कार्य करें।

कन्या—मान-प्रभाव बढ़ेगा। जायदाद संबंधी योजनाओंमें सफलता मिलेगी; यात्रा भी करेंगे, परन्तु घरेलू मनमुटाव, मित्रोंसे वैमनस्य और व्यापार सम्बन्धी कामोंमें प्रतिकूल वातावरण बना रहेगा। महिलाएं परिवार

के हितमें कोई न कोई योजना बनाकर सफल होंगी, उन्हें पति व सन्तानका सुख मिलेगा। ता० १-६-१०-२१-२२-२३ साधारणतः अशुभ हैं।

तुला—मास फल मध्यम है। समाजमें प्रतिष्ठा और पराक्रम लाभका अवसर मिलेगा। रिश्तेदारोंका आगमन होगा। आमोद-प्रमोद, रसिक वार्तालाप, मनोरंजन, भ्रमण आदिके अवसर भी प्राप्त होंगे, परन्तु सन्तानके मामले में अपव्यय और खेदग्रस्त रहना पड़ेगा। छात्रवर्ग की योजनाएं सफल होंगी। दूसरे सप्ताहमें स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

वृश्चिक—अष्टम शुक्रसे जन्मस्थ नेप्च्यून का षडष्टक योग रोग ग्रस्त रक्खेगा, अतः स्वास्थ्य रक्षा पर विशेष ध्यान दें। कष्टकर यात्राएं होंगी। उत्तरार्द्धमें कोई आकस्मिक आघातका भय है, बाल-बाल बच जायेंगे। वाणिज्य और सेवा कार्यमें निरन्तर बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। चर्म-रोग होनेकी आशंका है। ता० ५-१०-१५-२३-२४ कष्टकारी समय रहेगा।

धनुः—बिगड़ी दशा सुधरेगी। पारिवारिक सुख मिलेगा। मनोविनोदके साधन उपलब्ध होंगे। खर्चकी अधिकता रहेगी। स्वास्थ्यमें कुछ गड़बड़ी, फेफड़े सम्बन्धी पीड़ा, रक्तोदर विकार व पित्त विकार संभव है। व्यापारियों की योजनाएं सफल होंगी। नौकरीमें पदोन्नति या स्थानान्तरण, तथा आर्थिक लाभका चांस मिलेगा। शुक्लपक्षमें साधारण तकलीफ होगी।

मकर—पारिवारिक कठिनाइयां बढ़ जायेंगी। रोग, ॠण और शत्रुका प्रकोप रहेगा, परन्तु उन सब पर बड़ी दृढ़ता पूर्वक विजय प्राप्त करेंगे। विचारधारा बार-बार बदलती रहेगी। खर्च बढ़ जायेगा। खरीद-बिक्रीके कारोबारमें पूरी सफलता मिलेगी। मित्रोंसे प्रसन्नता और दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा। ता० ७-१६-१७-२४ वशेष कष्ट-दायक है।

कुम्भ—यह मास कोई विशेष महत्वका नहीं है, किसी नये कार्यका श्रीगणेश न करें, अन्यथा हानि होगी। व्यर्थके खर्च बढ़ जायेंगे। मानसिक चिन्ता उग्र रूप धारण करेगी। कोई कष्टप्रद समाचार मिलेगा। दुश्मनोंके षड्यन्त्र पर विजय और धार्मिक आस्था बढ़ेगी। लेखन सम्पादन करने वालोंको शारिरिक निर्बलतासे अवश्यमेव दुखी रहना पड़ेगा। महिलाओं और विद्यार्थियोंका स्वास्थ्य चिन्तनीय रहेगा। यात्रा करने वाले चोरोंसे सावधान रहें। ता० १-२-३-५-८-९-१८-२३ खराब है। शेष दिन ठीक हैं।

मीन—मान-प्रतिष्ठा बढ़नेका अवसर है, विशेष पुरुषार्थसे आप धनार्जन भी कर सकते हैं। नौकरी-व्यापारकी स्थितिमें सुधार, समाज में मान-प्रतिष्ठा, जन-प्रियता, निजी कामानु-रूप पराक्रम वृद्धि और बहुत दिनोंसे रुके कामों की सिद्धि होगी, अपव्ययसे बचकर रहें। विद्या-व्यसनी लोग स्वाध्यायकी ओर अधिक आक-र्षित होंगे। महिलाएं द्रव्याभावसे दुखी होंगी। कृष्णपक्षकी अपेक्षा शुक्लपक्ष अधिक श्रेष्ठ है।

भाद्रपद मासका राशिफल

(ता० २५ अगस्तसे २३ सितम्बर १९७२ तक)

मेष—मासफल मध्यम है। कलहशील

वातावरणसे स्वयं दूर रहें । खर्च-बढ़ा-चढ़ा रहेगा, आमदनी सन्तोषजनक होगी । किसी अप्रिय समाचारकी उपलब्धि होगी । पेट, पैर और छातीके आस-पास दर्द-आघात संभव है । नारी-वर्गको घरेलू प्रपञ्चोंमें अत्यधिक व्यस्त व परेशान रहना पड़ेगा । ता० ४-५-१४-२२-छोड़कर शेष दिन अच्छे हैं, शिवार्चनसे लाभ होगा ।

वृष—मासफल उत्तम है । दुश्मनों पर विजय और मनोकामनाएं पूर्ण होंगी । थोड़े परिश्रमसे सहज ही उन्नतिका मार्ग प्रशस्त हो सकता है । भ्रमण, मनोरंजन, उत्तम भोजन एवं मित्र-मिलनके अनेक अवसर प्राप्त होंगे, प्रसन्न रहेंगे । छात्रोंको अत्यधिक सफलता मिलेगी । महिलाओंको मानसिक चिन्ता और आर्थिक कष्ट बराबर सतावेगा । दूसरा सप्ताह कष्टदायी है ।

मिथुन—ता० ५ सितम्बरसे लग्नस्थ केतु और सप्तमस्थ राहु नीचका चलेगा, यह स्वास्थ्य-सुख तथा व्यापारोन्नतिमें अवरोधक है । नजदीकी रिश्तेदार परेशान करेंगे । मानसिक चिन्ताओंमें घिरे रहेंगे । बना-बनाया काम बिगड़ जायेगा । अथक-परिश्रम करने पर रोजी-रोटीका प्रश्न हल होता रहेगा । महिलायें स्वस्थ व प्रसन्न रहेंगी । तीसरे-चोथे सप्ताहमें खूब सतर्क रहें ।

कर्क—परेशानियोंमें कुछ न्यूनता आ जायेगी । विश्वासपात्रोंसे धोखाबाजीकी आशंका है नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा व हर्षदायक समाचारकी प्राप्ति होगी । लाभप्रद योजनाएं सफल होंगी, किन्तु विवादास्पद मामलोंमें परास्त होना पड़ेगा और कमरतोड़ खर्चकी अधिकतासे परेशान हो उठेंगे । महिलाओं का मन चिन्तित रहेगा । शुक्लपक्षमें स्वास्थ्य ढीला रहेगा ।

सिंह—ता० २ से जन्मस्थ सू+मं.+बु. शारीरिक सुख और व्यवसायोन्नतिमें बाधक है । स्वजनोंसे मतभेद होगा । भोजन, निद्रा आदि नित्य कर्ममें संयम बिगड़ जायेगा । किसी महत्वपूर्ण कार्यके लिए दौड़-धूप अधिक करना होगा । पढ़ने-लिखने वालोंको आशानुकूल सफलता मिलना मुश्किल है । ता० ३-४-१३-१४-२३ खराब है, माता दुर्गाकी यथेष्ट आराधना करें ।

कन्या—मासफल मध्यम है । जरूरी कामों में पैसे अधिक खर्च होंगे । नने-नये व्यक्तियोंसे मुलाकात होगी । द्रव्य-लाभ कम होगा । शरीर में वेदनायें बनी रहेंगी । घरमें नये-नये सामान खरीदेंगे, मनोरंजनका शौक बढ़ जायेगा । महिलायें सुखी रहेंगी । विद्यार्थियोंका मन चंचल रहेगा । नौकरी पेशा वालोंको घरेलू कष्ट होंगे । ता० २-३-५-६-१७-१८-२३ अशुभ फलदायक है

तुला—सूर्यके प्रभावसे स्त्रीको रोग होगा । आप स्वयं दुर्बलताका अनुभव करेंगे । व्यापार में कोई परिवर्तन संभव नहीं है । सट्टे-लाटरीमें लाभकी गुंजाइश पाई जाती है, मगर चोर उचक्कोंसे सावधानी रखना जरूरी है । छात्रों को पढ़नेमें दिलचस्पी जाती रहेगी । महिला वर्गका मन अशान्त रहेगा, आर्थिक आवश्यकताएं बढ़ेंगी । मासका उत्तरार्द्ध परेशानीका

कारण बनेगा।

वृश्चिक—व्यापार मध्यम रहेगा। रोग कम हो जायेगा, स्वास्थ्यमें कान्ति और सौन्दर्य बढ़ेगा। बड़े लोगों के सहयोग पर कोई नया कार्य करेंगे। घर में कुछ वाद-विवाद होगा। लक्ष्मीकी कृपा होगी, पालन-पोषणमें खर्च बढ़ेगा। महिलाएं बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार और सुमधुर वाणीसे घरमें शान्तिका वातावरण बनाये रक्खेंगी, धैर्य बढ़ेगा। ता० ३-६-११-१२-२१-२२ नेष्टकर हैं।

धनुः—उन्नति एवं धनलाभका अच्छा अवसर मिलेगा। पत्नीको प्रबल मानसिक कष्टकी संभावना है। कार्यकी सफलताके लिए अथक परिश्रम आवश्यक होगा। दौड़ धूप ज्यादा करना होगा। कोर्ट-कचहरीके काम सफल होंगे। सन्तान सम्बन्धी पीड़ा दूर हो जायेगी—आप प्रसन्न रहेंगे। विद्यार्थी वर्ग अस्वस्थ रहेंगे। ता० ४-५-१४-२३ छोड़कर शेष दिन अच्छे हैं।

मकर—सामाजिक मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी, घरेलू उलझनें शान्त होंगी। उच्चाधिकारियोंसे नौकरी पेशा वालोंको सहयोग मिलेगा। व्यापारी-वर्ग अपने उद्योगमें सफल होंगे। सट्टे-लाटरीसे कुछ लोगोंको लाभ हो सकता है। यात्रामें शारीरिक निर्बलताकी सम्भावना है, बुरी संगतिसे बचकर रहें। महिलाओंको शरीर कष्ट होगा। तीसरा सप्ताह अपेक्षाकृत ठीक रहेगा।

कुम्भ—शत्रु-पक्षसे विशेष सतर्क रहें, अन्यथा लोकापवादका भय है। व्यवहार और वाणीमें कठोरता आ जायेगी। बच्चोंकी तबियत खराब होगी। विवादास्पद मामलोंमें परास्त होना पड़ेगा। गृह:भूमि सम्बन्धी चिन्तायें लगी रहेंगी। धर्म-कर्ममें रुचि कम रहेगी, अल्प द्रव्य लाभ होगा। महिलाओंके गुप्तांगोंमें रोगोपद्रव होनेकी संभावना है। विद्यार्थियोंको परीक्षा व प्रतियोगितामें श्रमानुकूल सफलता अवश्य मिलेगी। ता० १,२,८,९, १०,१६,२३ छोड़कर शेष दिन शान्तिप्रद हैं।

मीन—छठा मंगल होनेसे दुश्मनोंके षड्यंत्र पर आपकी विजय होगी। स्वास्थ्य सुधर जायेगा। घरमें सुख-शान्ति, मनोरथकी सिद्धि और पत्नीके प्रति आकर्षण बढ़ेगा। यात्राएं सफल होंगी। स्वास्थ्यमें अपूर्व शक्तिका अनुभव करेंगे, परन्तु खर्च पर नियन्त्रण रखना बड़ा मुश्किल होगा। विद्यार्थियों और महिलाओंको अपनी योजनाओंमें सफलता मिलेगी। चौथा सप्ताह हितकर नहीं है, मासारम्भमें चोरीकी भी संभावना रहेगी।

आश्विन मासका राशिफल

ता० २४ सितम्बरसे २२ अक्टूबर १९७२ तक)

मेष—यह मास साधारण है। मित्र लोग आपकी कटु आलोचना करेंगे। किसी स्त्रीसे वाद-विवाद हो सकता है। सट्टा-लाटरीमें अंशात्मक लाभकी आशा है। रोजी-रोटीका प्रश्न हल होता रहेगा। मित्रोंसे बिरोध और खर्च बढ़ेगा। व्यापारीवर्ग खरीद-बिक्रीका कार्य करें तो लाभ होगा, यात्राका प्रोग्राम न बनावें, कष्ट होगा। सितम्बरका अन्तिम सप्ताह ठीक नहीं है।

वृष—आर्थिक दृष्टिसे विशेष परेशानी उठानी पड़ेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी मामलोंमें

सावधानी रक्खें। पत्नीसे मनको ठेस पहुंचेगा। भाई-बन्धुसे कलह होगा, परन्तु आपका धैर्य-साहस-पराक्रम और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा बनी रहेगी। व्यापारियोंके लिए स्टाक बढ़ाना उचित नहीं है, अन्यथा गहरी धन-हानि भी सम्भव हो सकती है। ता० ३-४-१३-१५-२२ अशुभ फलदायक हैं।

मिथुन—मासारंभमें चतुर्थ सू+मं०+बु० का योग कोई नया विवाद खड़ा करेगा। उद्योगोंमें सफलता मिलेगी। पराक्रम बढ़ेगा। कोर्ट-कचहरीका काम पूरा होगा। बोलचालमें चतुरता वढ़ेगी। सट्टा-लॉटरीसे लाभकी कुछ गुंजाइश है। विद्यार्थी-वर्गके लिए श्रेष्ठ मास है, लेकिन महिलाओंके लिए घरेलू परेशानी बढ़ जानेका योग है। पहले-दूसरे सप्ताहमें सतर्कता रखें।

कर्क—मासफल उत्तम है, विशेष यत्न करने पर नौकरीमें उन्नतिका चांस मिल सकता है। विवादास्पद मामलोंमें आपकी विजय होगी। यथेष्ट धन लाभका अवसर हाथसे जाने न दें जी-तोड़ मेहनत करके योजनाएं सफल करें। महिलाएं सुखी रहेंगी। छात्रोंको पढ़ाई लिखाईमें सफलता मिलेगी। नवीन पुस्तकें भी खरीदेंगे। तीसरा सप्ताह बहुत श्रेष्ठ है।

सिंह—विशेष परिश्रम करने पर जीविका-निर्वाह होगा। मित्रोंकी कटु आलोचनासे मन खेदग्रस्त रहेगा। यात्रामें शरीर कष्ट और व्यर्थ खर्च बढ़ जायेगा। सट्टे-लॉटरीके क्षेत्रोंमें निराश होना पड़ेगा। पूंजी बढ़ानेकी व्यर्थ चेष्टा न करें। महिलाओंकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी। इस मासमें कृष्णपक्ष कष्टदायक है, शुक्लपक्षमें सुधार होगा।

कन्या—यह मास साधारण है। स्त्री व सन्तान पक्षसे कष्ट होगा। चिन्तनशील अवस्था में भी आप प्रसन्न रहेंगे, मनोविनोद होता रहेगा। सम्बन्धीजनोंका आगमन होगा। भाई-बन्धु-मित्रों एवं भागीदारोंसे प्रसन्नता हासिल होगी। व्यवसायियोंको हानि होगी। नौकरी वालोंको उच्चाधिकारियोंसे विवाद और झगड़े का भय है। ता० ४-१३-२०-२१-२२ अनिष्ठ प्रभावकारी दिन हैं।

तुला—परिवार संबंधी उलझनें उपस्थित होंगी। प्रत्येक कलहशील मामलों पर अत्यन्त धैर्य व साहससे आप काबू पायें। सुन्दर समाचार मिलेगा। सुमधुर भोजन, शयनकी उचित-व्यवस्था और आमोद प्रमोद होता रहेगा। महिलाओंके लिए यह मास ठीक नहीं है। विद्यार्थियोंको बौद्धिक विकासका कुछ अवसर मिलेगा। शुक्लपक्षमें विशेष परेशानी हो सकती है।

वृश्चिक—घरेलू उलझनें व्याप्त रहेंगी। मानसिक चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। निजी आवश्यक्ताओं पर विशेष खर्च करेंगे। पत्नी एवं सन्तान सम्बन्धी कलहशील वातावरण उपस्थित होगा। सिर दर्द, पेचिश, पेट विकार संभावित है। यात्राका प्रोग्राम न बनावें, आकस्मिक आघातकी संभावना। महिलाएं सन्तान-पक्षसे पीड़ित होंगी। पहला-चौथा सप्ताह कष्टदायक है।

धनुः—आमदनी खर्चका लेखा-जोखा बराबर रहेगा। सम्बन्धीजनोंका आगमन होगा।

बिगड़ी स्थिति सुधर जायेगी । बहुत दिनोंसे रुका हुआ कोई कार्य पूर्ण होगा । सट्टेबाजोंको थोड़ी चालाकीसे विशेष लाभ हो सकता है। राजकीय कर्मचारियोंको पदोन्नतिके लिए प्रयत्न करना चाहिए, सफलता मिलेगी, परन्तु स्वास्थ्यकी रक्षा करें। तीसरा सप्ताह लोकापवाद कारक है।

मकर—श्रेष्ठ जनोंको स्वर्णादि लाभ हो सकता है। रिश्तेदारोंके हितमें आपको अपना धन और समय खर्च करना पड़ेगा। उत्तम ग्रन्थोंका स्वाध्याय करेंगे । सिनेमा वगैरहमें खर्च बढ़ेगा । पत्नीसे मन खेदग्रस्त रहेगा। विद्यार्थियों और महिलाओंके लिए यह मास ठीक है। किसी प्रकारके परीक्षा-प्रतियोगितामें होंगे। चौथे सप्ताहमें हानिकी संभावना है।

कुम्भ—अष्टम प्लूटो + हर्षलके साथ सू० + मं० + बु० का योग कष्टदायक रहेगा। स्वास्थ्य व्यवसाय एवं शत्रुपक्षसे विशेष हानिकी संभावना है। कोर्ट-कचहरीके काम अपूर्ण रहेंगे। बच्चोंकी तबियत खराब होगी । धर्म-कर्ममें रुचि कम हो जायेगी। दूर देशसे सुसमाचार मिलेगा । नौकरी वालोंको अपने उच्चाधिकारियोंसे भय बना रहेगा । इच्छाशक्ति, तर्क शक्ति बढ़ेगी । महिलाओंको रक्त विकार और सिर-दर्दसे शरीरमें कष्ट होगा। ता० ६-७-१३-१५-१६-२३ छोड़कर शेष दिन ठीक हैं।

मीन—सप्तम एवं अष्टम सूर्य प्रत्येक दृष्टि से अशुभ रहेगा, सावधानी पूर्वक हर काम करें । आकस्मिक झगड़ों और विरोधियोंसे परेशान रहेंगे। साधारण द्रव्य लाभसे पारिवारिक आवश्यकतायें हल होती रहेंगी । अग्नि-शस्त्र-रोग-ऋण-रिपु भयकी सभावना है, सतर्कतापूर्वक रहनेका यत्न करें। विद्यार्थियोंकी बुद्धि कुंठित रहेगी। महिलाओंको पारिवारिक कष्ट होगा । ता० २,८,६,१७,१८,२३ कष्टप्रद सिद्ध होंगे।

नोट:—जो महानुभाव खोटे ग्रहोंकी शान्तिके लिए परम शान्तिप्रद—"श्री शक्ति-पाठ" नियमित करना चाहें, वे लेखकके पते (के० २१।८ नारायण-दीक्षित लेन, वाराणसी—१) पर पता लिखा हुआ लिफाफा भेजकर एक प्रति बिना मूल्य उक्त 'शक्तिपाठ' की पुस्तिका प्राप्त कर सकते हैं।

मारकेश कब ?

[ले०—श्री राधाकृष्ण शर्मा ज्यो०, जोधपुर]

मृत्यु अवश्यंभावी हे । जन्मकुण्डलीमें मृत्युका निर्णय करनेके लिए मारकका ज्ञान आवश्यक है। ज्योतिषमें लग्नेश, षष्ठेश अष्टमेश तथा गुरु व शनिके सम्बन्धसे मारकेश किंवा मृत्युका ज्ञान किया जाता है। कई गण्य मान्य विद्वान् दूसरे-सातवें व आठवें भावसे भी मारकेश का विचार करते हैं।

मारकेशका अध्ययन करते समय सर्व प्रथम यह देखा जाय कि द्वितीय-सप्तम तथा अष्टम भावाधिपतियोंमें लग्नाधिपतिका अधिशत्रु कौन है। अधिशत्रु निम्नानुसार है।

सूर्यका शनि, मंगलका बुध, गुरुके शुक्र व बुध, शनिके सूर्य। चंद्रमा एवं बुध तथा शुक्रके अधिशत्रु न होकर क्रमशः मंगल, शुक्र-मंगल-शनि तथा मंगल शत्रु होते हैं। केन्द्र (लग्न) के अधिपतिका प्रवल शत्रु होगा वही मारकेश का फल देगा।

प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि मृत्यु कब होगी? उपरोक्त मारकेशकी महादशामें जब दूसरा मारकेश जो लग्नाधिपतिका शत्रु एवं प्रमुख मारकेशका मित्र हो, कि अन्तर्दशामें जातककी मृत्यु होगी।

अष्टमेश बली होकर तृतीय-चतुर्थ, षष्ठ दशम एवं व्यय स्थानमें हो तो भी वह मारकेश होता है। यदि लग्नेशसे अष्टम भावाधिपति शक्तिसम्पन्न हो तो आठवें घरके स्वामीकी अन्तर्दशामें जातककी मृत्यु होती है। अष्टमेश सप्तमेश होकर लग्न पर दृष्टि डालता हो (जो सहज स्वाभाविक है) तो पापग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु की महादशा अन्तर्दशामें मृत्यु हो जाती है।

शनिमें मंगल एवं मंगलमें शनिकी अन्तर-दशा रोगका कारण वनती है। एक मारकेश और देखिए- अष्टमेश शत्रु क्षेत्री होकर चतुर्थ हो तो भी मारकेश होता है।

यदि लग्नाधिपति क्रूर ग्रहके साथ नीच या शत्रु राशिमें रहकर अस्त हो तो जब वह गोचरवश दुःस्थान (६,८,१२) में जाये या लग्न में आवे अथवा लग्नसे संवंध करे तो जातकी मृत्यु होती है।

अब हम निम्न कुण्डलीसे मारकेशका विचार करेंगे—



इस कुण्डलीमें द्वितीयेश शुक्र, सप्तमेश भी शुक्र तथा अष्टमेश मंगल अर्थात् शुक्र व मंगल मारकेश हुए। लग्नेश मंगल है। लग्नेश-अष्टमेश एक ही मंगल है। शुक्र लग्नेशका शत्रु है। शुक्रकी पूर्ण दृष्टि लग्न पर तथा लग्नेश पर ¾ दृष्टि है। इस प्रकार यह भली प्रकार निश्चित हो गया कि उक्त कुण्डलीमें शुक्र ही मारकेश है।

अब यह देखना है कि शुक्रमें किसका अन्तर आने पर मृत्यु होगी। शुक्रमें अन्तर निम्न प्रकारसे होगा - सर्व प्रथम शुक्रमें शुक्र तदुपरान्त सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु इस क्रमसे अन्तर आता है। शुक्रमें शुक्र मारकेश नहीं हो सकता, अतः लग्नेश मंगल का शत्रु बुध परन्तु शुक्रका मित्र होनेसे मारकेश होगा। इस प्रकार शुक्रमें बुधका अन्तर मृत्युका कारण होगा।

अब यह देखें कि निश्चित वर्षमें मृत्यु कब होगी? इसके लिए जब गोचर वश शुक्र, मंगल ४,८,१२व भावमें तो नहीं है। इस प्रकारकी स्थिति आने पर जातककी मृत्यु होगी। अनेक कुण्डलियां देखने पर विदित होता है कि मृत्युके समय चन्द्रमा भी ४।८।१२ या जन्मका गोचर के कारण हो जाता है।

रमलशास्त्रका प्रारम्भिक शिक्षण—(१)

[ले०—रमलज्ञ श्री विष्णुकुमार शर्मा ज्योतिषी]

गत माघ मासके अंकमें मेरे ही द्वारा लिखित लेख "रमल शास्त्रका महत्व" के सन्दर्भ में यत्र-तत्रसे अनेक प्रशंसापत्र प्राप्त हुए, जिसमें रमलशास्त्र सीखनेकी जिज्ञासा प्रकट की गई, अतः पाठकोंके अनुरोधसे मैं रमलशास्त्रके प्रारम्भका परिचय दे रहा हूँ।

ज्योतिषके छः भेदोंमें रमलशास्त्रको भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसी रमल-विद्यासे सुयोग्य रमलज्ञ द्वारा निकाला हुआ फलादेश शत-प्रतिशत सही निकलता है। रमलमें जन्म-पत्रकी भांति अत्यधिक गणित करनेकी कोई आवश्यकता नहीं रहती, इसमें तो केवल पाशे प्रधान होते हैं। लह्यान शकलको बनाकर (जो आगे बताया जायेगा) के अपने इष्ट देवताको स्मरण करते हुए पाशे डालनेके मन्त्रको जपकर पाशे फेंक दिये जाते हैं, और उसमें चार शकलें बनती हैं, इन्हीं चार शकलोंसे सोलह शकलों का निर्माण होता है, और यही शकलें भविष्य कथनमें सहायक सिद्ध होती है।

रमल शास्त्रमें नियम—रमल विद्यामें कतिपय नियम भी हैं, इन नियमोंका पालन करने वाले रमलज्ञका भविष्य सही निकलेगा। सर्वप्रथम मुख्य नियम यह है कि रमल सीखने वाले व्यक्तिको अपने इष्टदेवताका स्मरण एवं विश्वास हमेशा बना रहे, क्योंकि बिना इष्ट-देवताके कार्य सफल नहीं होते। २४ हजार या सवा लक्ष श्री गायत्री मन्त्रका जप करके इस गुप्त विद्याका श्रीगणेश करें। दूसरा नियम यह है कि पाशे फेंकनेके मन्त्रको होलिका, दीपमाला या ग्रहणमें सिद्ध कर लेना चाहिये। पाशे पलंग, मेज, कुर्सी पर बैठकर नहीं डालना चाहिये। पाशेको पट्टिका या कड़क पुस्तक पर डालें।

पाशे डालनेका समय:—रमलज्ञको चाहिये कि वह पाशोंको दोपहरके समय व रात्रीके आठ बजे बाद नहीं डाले।

पाशोंका तिर्माण प्रकार:—रमलशास्त्रमें पाशेकी प्रधानता है, पाशे अष्टधातु—सोना, चांदी, लोहा, पीतल, ताम्बा, जस्ता, सीसा एवं पाराको मिलाकर (गलाकर) एक ही आकार

कुछ मारकेशों पर और भी विचार करें तो पाते है कि यदि द्वितीयेश पाप ग्रह हो और पाप ग्रहसे दृष्ट भी हो तो वह प्रथम मारकेश होता है। सप्तमेश पाप ग्रह हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो, तदनन्तर-द्वितीयमें रहने वाला पाप ग्रह सप्तममें रहने वाला पाप ग्रह एवं द्वितीयेशके साथ रहने वाला पाप ग्रह और सप्तमेशके साथ रहने वाला पापग्रह मारकेश होता है।

यदि शनि मारकेश हो जाय तो वह मारकेश हो जायेगा कारण मृत्युका कारक ग्रह है।

मारकेशकी दशामें षष्ठेश, अष्टमेश, द्वादशेशकी अन्तर्दशामें मृत्यु होती है।

इस प्रकार ज्योतिष वेत्ताओंको **चाहिए** कि वे मारकेशका भली प्रकार **विवेचन कर** फलादेश कहें। अस्तु।

आठ चौकोर टुकड़े बनवाकर, प्रत्येक टुकड़ेमें छेद करवाकर, चार-चार टुकड़ोंको अलग अलग दो लोहेकी तारमें पिरो देना चाहिये, जिससे प्रत्येक टुकड़ा आसानीसे घूम सके।

पाशे बनानेका समय :—'रमलामृत' प्राचीन ग्रन्थके मतानुसार "सूर्ये सायन मेषगे व्ययनगे शून्यैः समालंभयेत्" अर्थात् सूर्यदेव सायन मेष राशिमें (दिनांक २१ मार्चसे २१ अप्रैल तक सूर्य सायन मेषमें रहता है) तथा 'रमलनवरत्न' में मीन संक्रान्ति (निरयन) का उल्लेख है :—

एवं पाशयुगं कुर्यान्मीनार्केऽहर्निशा समे।
घटनं पाशकानां च ततः शून्यं च कारयेत्॥

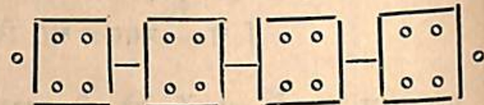
निरयन मीन राशिमें सूर्य १३ मार्चसे १३ अप्रैल तक रहता है, तथा दिन-रात बराबर हो अर्थात् दिनमान ३० घटी हो उस दिन पाशेका निर्माण कराकर शून्यका चिह्न ढलवा देना चाहिये।

पाशे बनवानेकी विधि : किसी चतुर, विश्वासपात्र तथा सुयोग्य स्वर्णकारसे पाशे बनवाना चाहिये। आठ चौकोर टुकड़ेके ऊपर भाग पर चार-चार शून्य (°° °°) और उसके ठीक नीचे भागमें दो-दो शून्य (°°) तथा दोनों पशवारोंमें तीन-तीन शून्य बनावें।

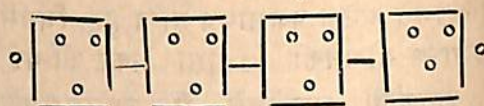
अष्टधातुके अन्तर्गत अन्य धातुओंके अलावा सोना दो रत्ती, चान्दी तीन रत्ती एवं गुरुसे सम्बन्धि धातु पीतल अधिक मात्रामें डाल देना चाहिये।

आठ चौकोर टुकड़ोंका चित्र इस प्रकार है :—

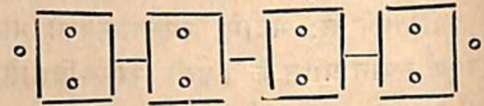
नम्बर १



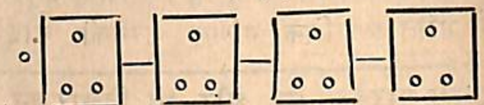
नम्बर २



नम्बर ३



नम्बर ४



रमलशास्त्रमें सोलह शकलें होती हैं, जिसका नाम व स्वरूप इस प्रकार है :—

(१) लह्यान (२) कब्जुद्दाखिल (३) कब्जुल्खारिज (४) जमात ≡ (५) फरहा (६) उकला (७) अंकीश (८) हुमरा (९) बयाज (१०) नुस्त्रुल्खारिज (११) नुस्त्रुखिल (१२) अतवेखारिज (१३) अतवेद्दाखिल (१४) नकी (१५) इज्जतमा (१६) तरिखा [क्रमशः]

स्वप्न विचार प्रत्यक्षानुभव

पशु पक्षी एवं फल दर्शन खंड

(गताङ्कसे आगे)

[लेखक - श्री मदनमोहन जैन "पवि"]

पशु पक्षी :–

१. सिंह दर्शन=अर्थ संकट हल, बहुजन मिलन। २. नूतन कार्य सुझाव प्राप्ति, सिंह किसीको खाता दिखाई देवे तो पड़ौसमें किसी व्यक्तिकी मृत्यु। ३. सिंह व ऋषी दर्शन= आशाजनक पत्र व्यवहार। ४. मयूर दर्शन= वर्षागमन। ५. रीछ व बन्दर=आशा जनक पत्रागमन। ६. वानर समूह=पार्सल आगमन, पत्रागमन, चाचा मिलन (रिश्तेदार) ७. खूनसे लथपथ वानर=प्रसन्नताके समाचार, ऐच्छिक ज्ञानकी उपलब्धि, लेख स्वीकृति, प्रकाशन कार्य सिद्धि। ८. हस्ती दर्शन=आनंद प्राप्ति, परीक्षामें सिद्धि, नेता हो, चुनाव काल हो तो जय मिले। ९ तीन हाथियों पर संत बैठे, नारियल बिखेरते देखना=साहित्याध्ययन, दिगंबर, श्वेताम्बर वा पीताम्बर साधु दर्शन, वार्तालाप, दर्शन चर्चा होगी। १०. श्वेत हस्ती दर्शन=ख्याति एवं धनागम। ११. छः दांत वाला हाथी दर्शन=पुत्रोत्पन्न होगा, वह कुलदीपक होगा। (शास्त्रोक्त) १२. छत्रयुक्त हाथी दर्शन=धनागम, भूमि क्रय चर्चा।

विभिन्न पशु :—१३. गायको बछड़े सहित देखना=कार्य सिद्धि। १४. पीली गाय=संत दर्शन। १५. गोह काटने दौड़ना=शिक्षित, परिचित मिलन, सन्मित्र मिलन। १६ अश्व को पीटते देखनेसे व्याधि आगमन। १७. उष्ट्र पर बैठना=परिचित घनिष्ठ रिश्तेदार मृत्यु मुखसे बच जायगा। १८. खर, उष्ट्र दर्शन= स्वास्थ्य हानि। १९. काले घोड़े पर बैठना= स्वास्थ्यमें कमी। २० भेड़ मय बालके देखना आनंद प्राप्ति। २१ कुत्तोंका टोला (समूह) भौंकते देखना=संघर्ष, वाद-विवाद, (उदर रोग) दस्तें लगना आदि। २२. श्वान, गिद्ध व उल्लू दर्शन=संघर्ष, महाकष्ट। २३. चींटियें देखना= प्रियजन मिलन। २४. कबूतर या मत्स्य देखना=हर्ष, स्वजन मिलन यश प्रांप्ति होगी। २५. मगरका पानीमें खींचना=सजा, अपराध से मुक्ति (मुकदमेंमें जय भी मिलेगी)।

टिप्पणी :—कृष्णरंगके पशु पक्षी स्वप्नमें देखना दुखकारी। स्वप्नमें आक्रमण करते जानवरको देखना, संघर्ष, अशान्ति, वाद-विवाद। जीव जन्तु काटे तो शुभ है। कुत्ता, गधा, रीछ, ऊंट अशुभ हैं। कोयल, तोता, मयूर, गरुड़ बगुला शुभ हैं।

फ़ल दर्शन खंड :—[कच्चे फल देखनेसे शुभ फल प्राप्ति, किन्तु कार्यमें विलंब होगा परिपक्व फल दर्शन शीघ्र सिद्धि समृद्धि दायक होता है]।

१. नारंगी दर्शन=सम्मान सूचक वार्तालाप, परिचय वृद्धि, बहुजन मिलन। २. केला देखना=मधुर भोजनकी प्राप्ति होगी। ३. पपीता देखना=लोक नृत्य वा नाटक दर्शन या

बहुरूपीया दर्शन होगा। ४. फल खाना=नूतन शीघ्र कार्य सिद्धि। ५. खरबूजा खाना=नूतन विचारोद्भव, सत समागम। ६. पांच छः फल दर्शन=चिर परिचित मानव मिलन। ७. सेव या लीची=दर्शन चर्चा, ग्रन्थाध्ययन। ८. आम्र फल चूसना=निमन्त्रणागमन परीक्षामें उत्तीर्ण होना। ९. बादाम मुनक्का या इलायची दर्शन=अर्थ प्राप्ति ज्ञान वृद्धि। १०. नारियल फोड़ते देखना=आनंद ही आनंद, स्वजन मिलन। ११. विभिन्न प्रकारके मेवे देखना=ऐच्छिक स्थानान्तर या आशाजनक तत्काल कार्य सिद्धि होगी। १२. अर्द्ध परिपक्क आम्र दर्शन=धर्माध्यक्ष या संत मिलन।

शाक या सब्जी दर्शन :—१. तरोई, ककड़ी व चने=बहु जन मिलन, रोग मुक्ति। २. हरे भरे भुट्टोंके खेत देखना=स्वरोग मुक्ति होगी। ३. मटरकी फली देखना=हर्ष, सत्संग प्राप्ति। ४. चंवलेकी फली खाना=सर्वानंद, सफलता।

विशेष :—रसदार फल, बहु बीज, नारियल हरि शाक दर्शन शुभ हैं। सड़े फल दर्शन अशुभदायी हैं। (क्रमशः आगेके अंकमें)

वर्षा आगमन ज्ञान

[लेखक :—श्री कोमलप्रसाद पाठक 'बाबा बेताल' मैनपुरी उ०प्र०]

लोटा द्वारा वर्षा ज्ञान

लोटा भरि पानी धरै, भिगो कपड़ा डरि।
जो पानी टपकै बहै, कपड़ा के आधार॥
कछु खाली हुई जाइ तो, दस दिन में बरसात।
होई अवसि मानौं सही. बाबा कविकी बात॥
वस्त्र किनारे भूमि पर, जो टपकै नहि तोय।
दस दिन लों वर्षा नहीं, गारण्टी से होय॥

जौंक द्वारा वर्षा ज्ञान

बर्त्तन को लै कांच को काली मिट्टी डारि।
शक्कर तनिक मिलाइए, पानी भरो सम्हारि॥
जोंक छोड़िए पात्र में देखो नूतन खेल।
पानी पर तैरन लगै, वर्षा रेलम पेल॥
नीचे बैठे तो रहे निश्चय मौसम मौन।
उछरै बूढ़े जानिए, होइ तीव्र गति पौन॥
आश्विन मास अगस्त, उगि कास डाभ रहि फूल
खंजन पक्षी आगमन पावसके प्रतिकूल॥

वृक्षों द्वारा अकाल सुकाल निर्णय

माघ फालगुन चैतमें पतझर होई विशेष।
तो जानो शुभ कालको आइ गयो सन्देश॥
कछु पाती तरु पर रहै, कछु नीचे गिर जाई।
पशु चारे की हीनता, धनाभाव दरसाई॥
फल फूलन कीडा परै पातन जाला दीख।
खेती चौपट जानिए सुन बाबा की सीख॥
नींबू इमली बेर जो फागुन फरै विशेष।
तो जानो दुष्काल है निश्चय करै कलेश॥
जंगल की बूटी जड़ी फरै चैत वैसाख।
राजा परजा सब सुखी, बढ़ै बहुत ही साख॥
फूल न आवैं डार पर आवत ही झरि जाइं।
तो निश्चय दुर्भिक्ष है जामे संशय नाइं॥
अर्द्ध वृक्ष फूलै फलै तो जानो समकाल।
संवत् समवत जानिए कहि "बाबा बैताल"॥
नीरस तरुवर देखिए गूगल गोंद सुखाइ।
खेती रेती में मिलै पीपर गोंद गिराइ॥
मौलश्री केला फरै वाढ़ै बहुत कपास।
श्रेष्ठ होइ धन धान्य को फूलै फलै पलास॥
आम फरै नहि आँवला, बौर ठौर झरि जाइ।
कहि बावा वैताल जी, निश्चय शाख नसाइ॥

आइ निबौरी नीम पैइं, सूखि सूखि लटकाई।
तो जानो दुर्भिक्षको, आवन हार बताई॥
फोग वृक्ष अरु खेजड़ी फूलि फरै अधिकाई।
चावल मोठी बाजरा घर में नहीं समाई॥
आक फरै गेहूँ बढ़ै नीम फरै तिल बाढ़ि।
बड़ के फरै जुवार वीड़ अब जिन कड़ुवा काढ़ि॥
बाबा विरवा आम को जौन दिशा फरि फूल।
तौन दिशा वरषै जलधि और दिशा प्रतिकूल॥
झरबेरी आषाढ़ में पात पात झरि जाई।
तो संवत् शुभ ज़ानिए, वर्षा जोग जनाई॥
अथवा बरगद वृक्ष में जटा जमै अंकूर।
पूछि न पंडित ज्योतिषी है वर्षा भरपूर॥
पतझैर होइ पलास में रहे पात नहीं एक।
तो सुकाल गति जानिए बाबा करें विवेक।
जो गति बीच पलास की सोई गति घन धानि।
स्वच्छ होई तो स्वच्छता कीट परै तो हानि॥

ऊंट कटेरी शंखाहूली।
वर्षाकाल रहे जो फूली।
तो दुष्काल काल को जानो।
हो विपरीत सुकाल बखानो॥

आक रुई आकाश उड़ावै।
अन्न धान तिल वृद्धि लावै॥
बाढ़ै चावल और उखारि।
गेहूँ चना बढ़ावन हारि॥
आक डार टिड्डा दिखरावै।
हरित होइ तो ज्वार बढ़ावै॥
आम फरै तो गेहूँ लावै।
नीम फरै तिल तैल करावै॥
गूला फरै ईख अधिकाई।
बिच्छू बढ़े ज्वार बढ़ाई॥

केला पीलू निबोली इमली आम अंगूर।
बढ़ै रस प्रति एक में जामुन बेर खजूर॥
जा ऋतु से पहिले फरे होइ धान्य अनुकूल।
निश्चय जानि दुकालिया फल उपज प्रतिकूल॥
होइ पात में रुक्षता और न जाला छेद।
चिकने चिकने पातरा वर्षा करें अभेद॥
वर्षा के आरम्भ में थूहर पात उगन्त।
वेगिहिं बरसै बादरा घर में बैठो कन्त॥
बिजली बत्ती बारिए आवें कीट पतंग।
हरित रंग पहचानिए, वर्षा लावै संग।

गर्भ में पुत्र है या कन्या ?

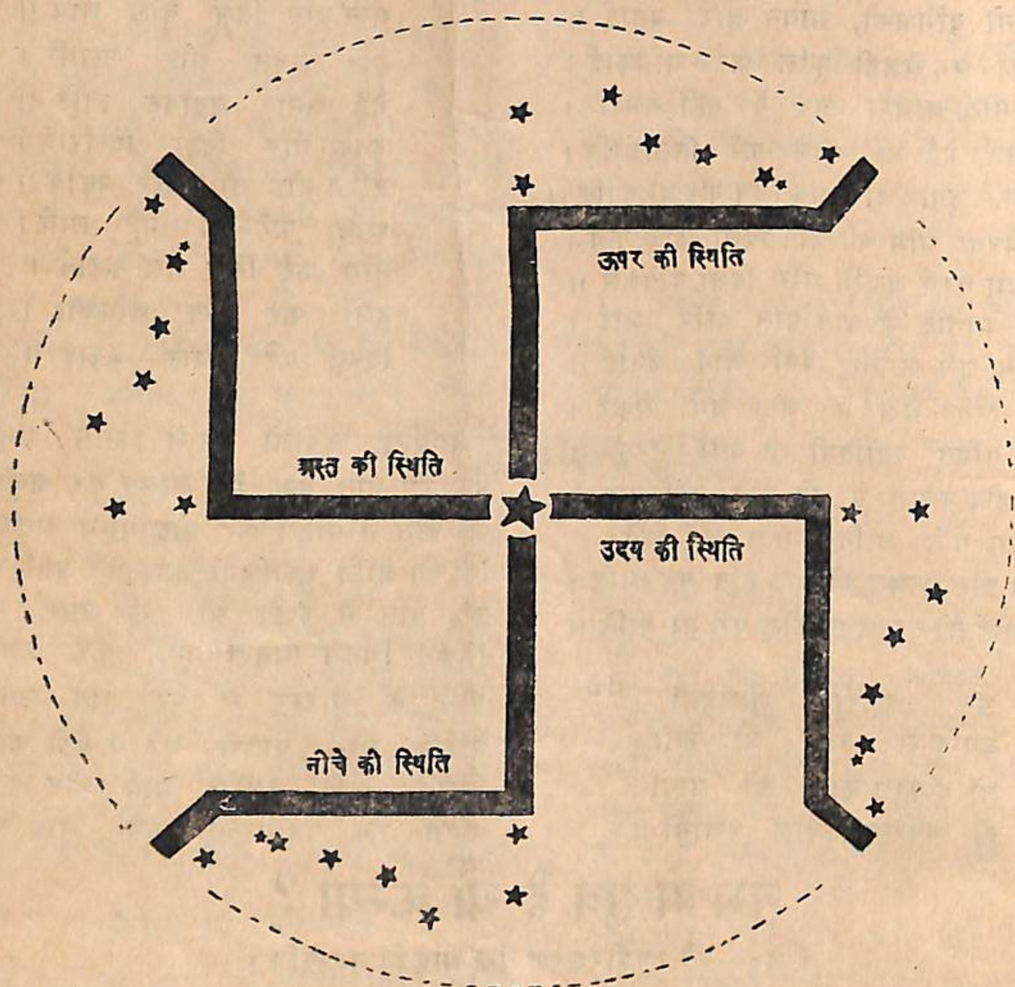
[ले०—श्री रघुवीरशरण वैद्य आयुर्वेद बृहस्पति]

"नखद्वयं गर्भिणी नामधेयं, तिथिप्रयुक्तं रस संयुतञ्च।
एकेन न्यूनं नवभागधेयं, समे कुमारी विषमे कुमारः॥"

कोई स्त्री गर्भवती होवे तो वह गर्भवती स्वयं या उसका पति या उससे संबन्धित कोई व्यक्ति पूछे कि लड़का होगा कि लड़की ? तब गर्भवती की हाथ पांव के नखों की संख्या २०, गर्भवती के नाम के अक्षरों की संख्या, और तिथि की संख्या को जोड़ ले, इसमें ६ और जोड़ दें, फिर एक कम कर दें। फिर ९ का भाग देवें। यदि सम संख्या जैसे २—४—६—८ बचें तो लड़की, यदि विषम १—३ ५—७ वचें तो लड़का होगा। शून्य बचे तो गर्भ हानि होगी। उदाहरण—गर्भवतीका नाम 'सुभद्रा' नाम के ३, पंचमी तिथि के ५, नखों की संख्या २० इनमें ६ और जोड़े तो ३४ हुए। एक कम कर दिया ३३ रहे, ९ का भाग दिया ६ बचे अतः लड़की होगी। यह योग ८० प्रतिशत ठीक बैठता है।

स्वस्तिक

'ध्रुव परिक्रमामें संलग्न सप्त ऋषि मण्डल'



श्वेत कमलकी माला पहिने अर्थात् सप्तऋषि मण्डल (मरीचि, अरुन्धती सहित वसिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह तथा क्रतु) से शुशोभित कामिनीके समान उत्तर दिशा जो मन्द मुस्कान युक्त तथा सनाथा-सी जान पड़ती है और ध्रुव नक्षत्र रूपी नायकके संकेतसे नित्यप्रति उसकी परिक्रमामें संलग्न है, स्वस्तिक उसीका ही आधारभूत चिह्न है।

स्वस्तिक मांगलिक चिन्होंमें प्रधान माना गया है। यह चिह्न बनानेमें भी सुगम है, केन्द्र बिन्दुसे चार समकोणिक भुजाएं निकलती हैं, जिन्हें दाहिनी ओर मोड़ दिया जाता है। यह चारों भुजाएं चारों दिशाओंका संकेत करती हैं। अर्थात् सब ओर शुभ हो। शुभ चिन्तनसे मनुष्यकी दुःखानुभूति आदि आपत्तियोंका शमन हो जाता है। ऋषियोंमें अपने यहां सप्तऋषियोंकी महानता सर्बोच्च मानी गई है। किसी मंगलमय कार्यके समय स्वस्तिक चिह्नको स्थान देना उस कार्यके निमित्त आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु सप्तऋषियोंका आह्वान करना है। —**जगन्नाथ शर्मा भारद्वाज**

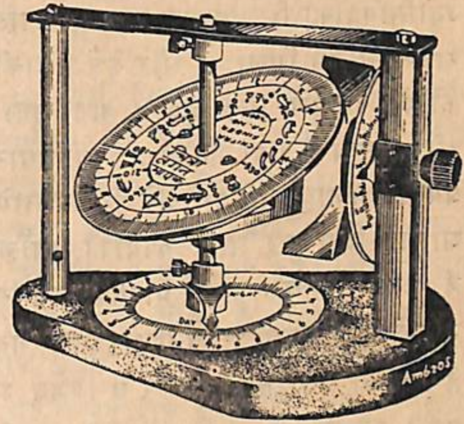
विद्वत्परिचय

"चित्रा लग्न मापक"

तथा

उसके निर्माता

'पं० जगन्नाथ भारद्वाज'



इस स्तम्भमें मैंने ज्योतिर्विज्ञानकी जिन महामनीषियोंने विशेष सेवा की है, तथा वर्तमानकालमें भी जो इस उपेक्षित विज्ञानकी साधनामें जुटे हुए हैं उनका परिचय प्रकाशित किया है। श्रद्धेय श्री मुकुन्द दैवज्ञ, डा० सूर्यनारायण व्यास (पद्मभूषण) और श्री हंसराज कपिल ज्यौतिषाचार्यका परिचय मैं गत वर्षोंमें प्रकाशित कर चुका हूं। गत शारदीय नवरात्रों में एक दिन अपराह्न समयमें अकस्मात् बिना पूर्व सूचनाके ही एक अर्द्धवृद्ध सुगठित सुन्दर शरीर वाले, तथा दूसरे प्रौढ़ सज्जन ज्योतिष्मती-निकेतनके सामने अपनी मोटरकार खड़ी करके मेरे पास आ बैठे। नमस्कार शिष्टाचारानन्तर दूसरे प्रौढ़ सज्जनने बताया कि "हम अम्बाला छावनीसे आपके दर्शनार्थ आ रहे हैं। ये पं० जगन्नाथ शर्माजी हैं, जिन्होंने 'चित्रालग्न-मापक-यंत्र' और नक्षत्र-मण्डल (प्लेनेटोरियम) भी बनाया है।" सुनकर मुझे महान् प्रसन्नता हुई। श्री पं० जगन्नाथजीने मुझे तीन चार बार स्नेहानुरोधरूपेण पत्र लिखे थे कि एक बार कभी मैं अम्बाला एक रात्रि रुककर उनका लग्नमापक यंत्र और प्लेनेटोरियम देखूं। किन्तु समयाभावके कारण मैं उनसे साक्षात्कार न कर सका। आज वे स्वयं ही चित्रालग्नमापक यंत्र ले कर पहुंच गये। यंत्र प्रक्रिया देखकर मुझे महान् प्रसन्नता और पंडितजीकी प्रतिभा पर गर्व हुआ। पंडितजी उसी दिन रात्रिको लौट गये और मैं भी प्रतिज्ञाबद्ध हो गया कि अब दिल्ली जाते समय अवश्य आपके पास रुकूंगा। तदनुसार गत ११ अप्रैलको दिल्ली जाते समय रात्रिको मैं पंडितजीके पास रुका, और एक दिन कुछ घण्टे लौटते हुए भी रुका। मुझे पंडित जीकी प्रतिभा साधना और सहृदयताको देखकर परम सन्तोष हुआ। पंडितजीका बाल्यकाल संकटमें बीता है। साधन-हीनावस्थामें परिस्थितियोंसे वीरतापूर्वक जूझकर अपने जीवनका स्वयं निर्माण किया है। आप न संस्कृतके विद्वान् हैं और न ज्योतिषकी कोई उच्च परीक्षा ही दी है। साधारण हिन्दी अंग्रेजी ज्ञानके बल पर ही आपने अपनी सच्ची लगन श्रम और साधना से वह कार्य किया है जो उच्च शिक्षा प्राप्त सिद्धान्तवेत्ता ज्योतिषाचार्य भी नहीं कर पाते। भारतकी राजधानी दिल्लीमें आधुनिक उपकरण से युक्त एक उन्नत ज्योतिष-यंत्रालय या

वेधशालाकी परमावश्यकता है। १८ वर्ष पूर्व ज्योतिर्विदोंका शिष्टमण्डल स्व० राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र बाबूसे मिला था और वेधशालाकी मांग की थी, वह पूर्ण नहीं हुई । अब सुना है कि श्री शक्तिधर शर्मा M Sc. ज्योतिषाचार्यके प्रयत्नसे पंजाबी यूनिवर्सीटीने पटियालामें वध-शालाके लिए कुछ लाख रुपयोंकी स्वीकृति दी हैं। श्री शक्तिधर शर्मा प्राच्यप्रतीच्य सिद्धान्त ज्योतिषके मर्मज्ञ उच्च-शिक्षा-प्राप्त नवयुवक हैं। ३ वर्ष अमेरिकामें रहकर वे विशेष अनुभव प्राप्त कर आये हैं। शक्तिधर मेरे आत्मीयजन हैं, अतः अनुरोध करूंगा कि वे इस कार्यको शीघ्र सम्पन्न करावें और पं० जगन्नाथजी जैसे लगन वाले व्यक्तियोंका सहयोग भी आवश्यकतानुसार लेवें। साधन-सम्पन्न व्यक्ति विज्ञानके मार्गमें आगे बढ़ें उनका गौरव तो है ही, किन्तु जो सर्वथा साधनहीन अनाथावस्थामें नाना संकट झेलकर इस क्षेत्रमें आते हैं उनका गौरव अधिक है। भारतके ग्रामोंमें भी ऐसे कई साधनारत सरस्वतीपुत्र अज्ञात रूपमें होंगे जिन्हें आगे उठानेकी आवश्यकता है। ऐसे साधनारत महापुरुषोंके परिचयके लिए 'ज्यो-तिष्मती' का यह स्तम्भ सदा खुला रहेगा। इस अङ्कमें यहां पं० जगन्नाथजीकी जीवनीका संक्षिप्त परिचय प्रकाशित किया जा रहा है। आपके संशोधन पूण लेख 'ज्योतिष्मती' के आगामी अङ्कोंमें निरन्तर प्रकाशित होंगे। 'स्वस्तिक' सम्बन्धी एक सचित्र लेख इस अङ्क में पृष्ठ ५८ पर दिया है।

पं० जगन्नाथ वह विलक्षण व्यक्ति हैं जिन्हें आजके विद्वानोंने 'नक्षत्रोंका मानव' की उपाधि से विभूषित किया है। आपका जन्म हरियाणा प्रान्तमें अम्बाला नगरके एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवारमें हुआ। आपकी आयु इस समय ६० वर्षकी है। पण्डितजीको महान् बनानेमें इनकी विषम परिस्थितियोंका बहुत बड़ा हाथ है। जब आप दो वर्षकी अबोध अवस्थामें ही थे कि शिरसे पिताका स्नेहसिक्त वरद हस्त उठ गया। ऐसी स्थितिमें आपकी जीवन-नौका माताजीकी भुजाओं रूपी चप्पुओंके बलसे अनेक संकट रूपी भंवरका सामना करती हुई बढ़ चली। माताजीके असीम स्नेहमें रहकर आपने दशवीं श्रेणी तक शिक्षा प्राप्त की, तत्पश्चात् माताका बोझ हल्का करनेके लिए विज्ञान यंत्रों के एक कारखानेमें नौकरी कर ली. एक बार मशीन पर काम करते हुये आपके बाएं हाथकी दो उंगलियां कट गई। सब लोग कहने लगे कि पण्डितजीका हाथ बेकार हो गया है, परन्तु तब यह किसे ज्ञात था कि पण्डितजी वह हीरा हैं जो विपत्तियोंकी रगड़से और अधिक चमक उठेगा।

हाथ घायल हो जानेके पश्चात् पण्डितजी ने विज्ञान यंत्रोंका एक अपना कारखाना खोलने का विचार बनाया। जिसके लिये माताजीने आशीर्वाद सहित ५०० रु० की अपनी कुल जमा पूंजी काममें लगानेको दे दी। फलस्वरूप आपका कारखाना दिन प्रतिदिन उन्नति करने लगा। जो अब 'मोहन ब्रदर्स' नामसे प्रख्यात है।

उन्हीं दिनों अम्बालामें पं० भवानन्द भारतके एक सुविख्यात ज्योतिषी हुआ करते थे जिन्होंने कई प्रकारके प्राचीन तथा नवीन ज्योतिष यंत्रोंका निर्माण किया था। एक बार महामना पं० मदनमोहन मालवीयजीने उनके यंत्रोंके परीक्षण तथा भारतमें नवीन ढंगसे एक वेधशालाके निर्माण हेतु परामर्श करनेके लिये

पण्डित भवानन्दको काशी आनेका निमन्त्रण दिया। परन्तु अभी वह यंत्र सुव्यवस्थित ढंगके बने हुए न थे, पण्डितजी उनको आधुनिक रूप देना चाहते थे, जिसके लिये उन्हें एक अच्छे वैज्ञानिककी आवश्यकता थी। पं० जगन्नाथजी के पं० भवानन्दजीसे बहुत अच्छे सम्बन्ध थे। अतः आपने उन यंत्रोंको नवीन रूप देनेमें पूरा-पूरा सहयोग दिया। साथ-साथ इसके आपकी रुचि भी ज्योतिषके प्रति अधिकाधिक बढ़ती चली गई।

पण्डितजी एक जन्मजात वैज्ञानिक हैं, आपके अन्वेषण विज्ञानके ठोस सिद्धान्तों पर आधारित रहते हैं। आप समय-समय पर अनेकानेक वैज्ञानिक यंत्रोंका आविष्कार करते रहे हैं, जिनमेंसे ज्योतिष सम्बन्धी कुछ यंत्रोंका संक्षिप्त विवरण यहां दे रहे हैं :—

सन् १९३५ में खगोलके सूक्ष्म अध्ययन निमित्त आपने "**चित्रा वेध यंत्र**" का निर्माण किया। जिसके द्वारा समय, तिथि एवं ग्रह स्पष्टादिका शुद्ध ज्ञान बड़ी सरलता तथा शीघ्रतासे किया जा सकता है।

सन् १९५७ में "चित्रा नक्षत्र मण्डल" (Planitorium) का निर्माण कर आपने भारतके भव्य भालको उन्नत किया है। हरियाणाके इस उपेक्षित किन्तु महत्वपूर्ण नगरमें "चित्रा" ही एकमात्र दर्शनीय स्थल है। देश-विदेशका कोई भी विशिष्ट अभ्यागत इसकी यात्रा करना नहीं भूलता। यह यंत्र अर्धवर्तुलाकार छतके गोल कमरेमें स्थित है। कमरेमें अन्धेरा कर देने पर अन्तरिक्षका पूर्णतः वास्तविक दृश्य चलचित्रकी भाँति प्रस्तुत हो जाता है। निर्देशक एक प्रकाश-संकेतककी सहायता से विभिन्न राशि तथा नक्षत्रोंकी ओर संकेत करता हुआ टिप्पणी देता रहता है।

पण्डितजी पिछले १० वर्षोंसे एक विलक्षण अन्वेषणमें लगे हुए हैं, जिसके द्वारा आपने यह सिद्ध किया है कि ग्रहोंका गुरुत्वाकर्षण हीं हमारी पृथ्वी पर भूचालोंका मुख्य कारण है। जैसे ही एक ग्रह दूसरे ग्रहके समीप आता है अथवा विलग होता है वैसे ही पृथ्वी पर भूचाल आया करते हैं। इसी सिद्धान्तके बल पर आपने कई वार भूचालोंकी भविष्यवाणियां भी की हैं जो सत्य सिद्ध हुई हैं। सम्भवतः आगामी एक दो वर्षोंमें ही पण्डितजी इस खोज को विश्वके समक्ष प्रस्तुत करने वाले हैं। साथ ही आपने "भूचाल सूचक" नामसे एक अनुपम यंत्रका भी आविष्कार किया है। पूर्व इसके कि भूचाल अपना रौद्र रूप धारण कर पाये, इस यंत्रसे एक उच्च ध्वनिका प्रसार होने लगता है, जिससे रात्रिमें सोया हुआ व्यक्ति भी उठकर अपनी सुरक्षाका स्थान ले सकता है।

अपनी कर्त्तव्यपरायणताके बल पर आपने इस वर्ष "चित्रा लग्न मापक" का निर्माण कर ज्योतिष जगत्में तहलका मचा दिया है। राशि-चक्र, क्षितिज-मण्डल तथा कालचक्रादिसे सुशोभित यह एक प्राकृतिक यंत्र है। मानो खगोल क्रमको पूर्णतः आकाशसे उतार कर पृथ्वी पर ला धरा हो। इस यंत्र द्वारा समग्र भूमण्डल पर जहां तक मानवका विस्तार है, किसी भी स्थानके अक्षांशानुसार क्षितिज मण्डलको, तिथि अनुसार राशि चक्रको तथा समयानुसार कालचक्रको सैट कर तुरन्त शुद्ध लग्न अंशोंमें पढ़ सकते हैं, जिसके लिये आपको

किसी भी पत्रा-सारणी तथा कागज़-पैन्सिलकी कोई आवश्यकता नहीं। आप यदि प्रातः ही यंत्रको सैट कर लेते हैं तो समझ लें कि यह दिनभरके लिये लग्न-घड़ी बन गया, जिस समयका भी लग्न आप जानना चाहें, समयानुसार सुईको घुमाकर कालचक्र पर ले जाएं और तुरन्त लग्न पढ़ लें।

"चित्रा लग्न मापक" और भी बहु प्रकार के कौशल तथा बुद्धिमत्तासे सिद्ध है। खगोल अध्ययन तथा ज्योतिष सम्बन्धी अनेक शोध कार्य इस यंत्र द्वारा सुलभ तथा रुचिकर हैं, यथा :—सूर्योदय, सूर्यास्त तथा अन्यान्य भौम, गुरु आदि किसी ग्रहका उदयास्त एवं मध्याह्न कालादिका शोधन, किसी भी लग्नके आरम्भ एवं अन्तकालका ज्ञान प्राप्त करना तथा दशम लग्न इत्यादि। ज्योतिषसे तनिक भी जानकारी रखने वाला व्यक्ति सरलतासे इस यंत्रका उपयोग कर सकता है। ज्योतिष सम्बन्धी कार्यालय, विद्यालय, वेधशाला, अनुसंधान केन्द्र तथा जो सज्जन खगोल अध्ययन तथा ज्योतिषमें विशेष रुचि रखते हैं, उनके लिए "चित्रा-लग्न मापक" एक जीवन साथी है—ऐसा कहना अतिशयोक्ति न होगी। जैसा कि प्रत्यक्षको प्रमाणकी आवश्यकता नहीं हुआ करती उसी प्रकार पञ्चाङ्ग द्वारा शोधमें अशुद्धिकी सम्भावना हो सकती है, परन्तु इस यंत्र द्वारा प्राप्त फलमें किसी प्रकारकी कोई आशंका नहीं रहती।

पण्डितजी आज भी अनेक प्रकारकी नवीन खोजोंमें संलग्न हैं। उनकी यह हार्दिक इच्छा है कि संस्कृत कालेजोंमें ज्योतिष अध्यापनकी जो प्राचीन पद्धति प्रचलित है आजके इस नूतन तथा वैज्ञानिक युगमें उसको एक नया मोड़ मिलना ही चाहिए। मैंने भी कई बार सरकारसे अनुरोध किया है कि प्रत्येक विश्वविद्यालयमें एक ज्योतिष पीठ हो।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

त्रैमासिक व्यापारिक भविष्यफल

[लेखक :— श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्य विशारद खोरी (गुड़गावां)]

श्रावण मास

सावन बदी १ को गुरुवार होनेसे उर्द तिल तेलमें तेजी होगी। अर्थात् दाल अन्न तिलहनमें तेजी रहेगी। वैसे ५ गुरुवार इस मासमें सुख शांतिके प्रतीक हैं। आज ही मिथुने शुक्रः गेहूं जौ चना विशेषकर चावल तेज। बदी ३ तिलहन तेल अन्न तथा बारदाना तेज। चांदी मन्दी। बदी ५ का क्षय तीन दिन तक हर एक वस्तुमें मन्दीका झटका आयेगा। बदी ६ को बुधास्त होकर अनाज सोना चांदी, रुई तेज करेगा। बदी ८ अश्लेषायां रवि, गेहूँ, चणा, अलसी, गुड़ शेयर्स तेज। परन्तु रुई, कपास, लाख कपड़ा चांदी अन्न मन्दा। बदी ९ कृत्तिकाका क्षय तेजी करेगा। बदी १० मघायां सिंहे मौमः वर्षाका अवरोध, उर्द, मूंग, तिल, धान्य, सोना, चांदी ताम्बा और लाल रंगके पदार्थ अलसी, सरसों, गेहूं, मसूर लालमिर्च आदिमें तेजी होगी। परन्तु मंगल अस्त होनेसे बिपरीत फल भी हो सकता है, बाजारका रुख देखकर काम करें। बदी ११ को मृगशिर नक्षत्र आगे तेजीकी सूचना देता है। बुधवारी अमावस्या तेजीकारक, अश्लेषा नक्षत्र, वर्षामें कमी करेगा। रुई मन्दी, धान्य तेज। शुक्रवार चन्द्रोदय सोना चांदी रुईमें घटबढ़से तेजी करेगा। सुदी ३ सरसों आदि तिलहन, गल्ला पाट कुष्टा लोहा जस्ता तेज। रुई, चांदी मन्दी। सुदी ७ को जहां वर्षा होगी, वहां आगे अनाजकी उपज उत्तम होगी नोट कर लें। सिंहेऽर्कः ईख, गुड़ खाण्ड शक्कर तिल तेल सोना ताम्बा तेज होगा। गत संक्रातिसे पांचवें बारमें होनेसे तेजीको बल मिलेगा, घोर तेजीकारक योग बन गया। बुधका उदय भी अनावृष्टि तथा दुर्भिक्षकी सूचना देता है, परन्तु बुध बक्री है। सुदी ९ को मार्गी होकर बाजारकी लाइनें पलट देगा। सुदी ११ अश्लेषाका बुध गुजरात सौराष्ट्र आदि देशोंमें वर्षाके कारण बाढ़ आ सकती है, तिलहनके सौदेमें व्यापारियोंको लाभ होगा। सुदी १३ पुनर्वसौ शुक्रः सोना, चांदी रुई, सूत सरसोंमें मन्दीका रुख हो जायेगा। गुरुवारी पूर्णिमा मन्दीकारक है। परन्तु श्रवण का अभाव आगेकी तेजी बता रहा है। श्रावणमें "आगे मंगल पीछे भान-वर्षा वर्षे ओस समान" वाला योग बनता है। परन्तु मंगल अस्त होनेसे योग कमजोर पड़ गया है। बुध गुरु दोनों वक्री होनेके कारण जनरल लाइन मन्दीकी रहेगी।

भाद्रपद मास

बदी १ को शतभिषा नक्षत्र है पक्षके आरम्भमें तीनों पूर्वा, रोहिणी, हस्त और शतभिषा नक्षत्र प्रतिपदाको हो तो सभी धान्य तेज होते है। अतः इस मासमें अनाजमें जनरल लाइन तेजीकी रहेगी। बदी २ गुरु मार्गी होगा। एक बार चांदी. सोना, सरसों कपास आदिमें तेजीका उछाला आयेगा। दो चार दिनमें बाजार गिर जायेगा। रुईमें मोटी मन्दीकी सम्भावना है। बदी ४ को मन्दीका रुख रहेगा। वदी ६ पू०फा० का सूर्य सोना, चांदी रुई सूत चावल, गेहूँ, गुड़ जीरा घी तेज करेगा। वर्षा योग भी है। जन्माष्टमी मन्दी कारक है। बदी ९ रुई कपास सूत कपड़ा सोना चांदी लकड़ी

फ़रनीचर तेज होगा। बदी १२ सोना, चांदी रुई लाख चपड़ा गुड़ मन्दा, ब्लैक मारकीटमें बाधा, सरकारी पाबन्दी सख्त होगी। बदी १४ सिंहस्थ बुध अस्त होकर वर्षामें कमी करेगा। चांदी घटबढ़से मन्दी, सोना गेहूँ अलसीमें तेजी। अमावस्या गुरुवारी मन्दीकारक। किसी भी मासमें गुरुवारी अमावस्या हो या गुरुवार को उस मासका नक्षत्र (जैसे भाद्रपदमें पूर्वा या उ० भाद्रपद) हो तो सर्वत्र वर्षा होती है।

सुदी १ को पूर्वाफाल्गुनी है। बदी १ को शतभिषाकी भाँति यह योग भी अन्न तेज करने वाला है। बदी २ शनिवार चन्द्रदर्शन होगा एक मासमें अन्न महँगा होगा और किसी राज्य में मंत्रीमंडल भंग होगा। पूर्णिमा भी शनिवारी है, अत: इस पक्षमें सोना चांदी रुई कपासमें जनरल लाइन तेजीकी रहेगी। आज दस बजे बाद खाण्ड घी खोपरा गेहूँमें मन्दीका रुख रहेगा। सुदी ४ को चित्रा नक्षत्र सुभिक्षकारी है। यह एक चांस है। सुदी ५ को उफायां रवि: तिलहन, धातुएं, मूंज, बांस, नील रेशम कपास तेज। परन्तु ५मीकी वृद्धि तीन दिनके अन्तर्गत एक मन्दीका झटका लाएगी। सुदी ६ को ८ घड़ी उपरान्त सप्तमी अनुराधायुता है। यदि इस संयोगमें वर्षा न हो तो आगे वर्षाकी आशा छोड़ देनी चाहिये। सुदी ८ को कन्या संक्रांति है, नारियल मंजीठ कुसूभ आदि लाल रंगके पदार्थ तिलहन तथा गल्ला तेज होगा। यह फल २६ सितम्बरसे ५ अक्टूबर तक होगा। उफायां बुध तेजीमें सहायता करेगा। सुदी ११ नक्षत्र वृद्धि अन्न तथा रस पदार्थ मन्दे करेगी। १२ को कन्याका भौम रेशमी वस्त्र एव लाल रंगके पदार्थ तेज। परन्तु मंगल अस्त है। पूर्णिमा शनिवारी तेजी करेगी। आज आठ दिनकी तेजी लगा दें।

आश्विन मास

बदी १ का क्षय मन्दीकारक है। बदी ४ हस्ते रवि: गेहूँ गुड़, खांड घी, सन नमक रुई, हलदी, धनिया हरड हींग खार तेज। बदी ७ सिंहे शुक्र: वर्षाका अवरोध होकर वायुवेग बढ़ेगा। वदी ८ परिघ योगका क्षय देशी घी तेज। वदी १० शनि वक्री होगा। दुर्भिक्ष, धान्य का नाश युद्ध भय, रोग पीड़ा कारक है। वदी त्रयोदशी तुलाका बुध, तेजीको तरक्की देगा। वर्षा एवं वायुवेग बढ़ेगा। शनिवारी अमावस्या को घोर तेजीकारक खर्पर योग बनता है। पश्चिममें बुधका उदय वर्षामें बाधा डालेगा। कपासकी फसलमें हानि होनेसे कपास तेज होगी। सुदी १ को नवरात्रारंभ, नवरात्रोंमें श्री दुर्गा सप्तशतीके पाठ करने करानेसे धन धान्यमें वृद्धि होती है। सुदी २ सोमवारको चन्द्रदर्शन-भादवा सुदी २ के चन्द्रदर्शनकी भांति एक मासमें अन्न तेज और किसी राज्यमें मन्त्री-मण्डल भंग करेगा। परन्तु आज सोना चांदी ताम्बा, रुई, कपास, मूंगफली तेल तिल मिर्च गोला गेहूँ मन्दे रहेंगे, सुदी ३ चित्राका सूर्य — गल्ला, गेहूँ, चना अरहर, रुई सूत चपड़ा तेज़। ज्वर तथा अतिसार रोग बढ़ेगा। सुदी ४ पू.फा. का शुक्र, चावल, चांदी, रुई, सूत, सन सोना मन्दा होगा, सुदी ६ ज्येष्ठा वृद्धि मन्दीकारक, परन्तु चन्द्रमा पर शनि दृष्टि होनेसे तेजी होगी। सुदी ८ की वृद्धि मन्दीकारक है, आज ही तुला संक्राँति है। सोमवारी संक्रांति मन्दी-कारक होती है। सुदी नौमी २।४१ मंगलवारी कपास और उर्द संग्रह करनेकी राय देती है।

आगे लाभ होगा। उपरान्त दशमी रोगकारक है। सुदी ११ का क्षय तेजीकारक है। सुदी १३ जौ, गेहूं चणा तेज। शनिवारी पूनम भी तेजीकारक है, उपरांत अश्विनी नक्षत्र आगे मन्दी करेगा। इस मासमें पांच रविवार नाना प्रकारकी दुर्घटनाओंके सूचक है। तेजी मन्दी जोरदार चलेगी। सुदी पक्षमें घोर तेजीकी सम्भावना है।

शकुन विचार

सावन

सावन लागत प्रथम दिन उगत न दीखे भानु।
वर्षाऋतु वर्षा बहुत उत्तम संवत जानु।।

सावन रोहिणी नखतमें यदि जल ना बरसाय।
यह लक्षण दुर्भिक्षका हाहाकार मचाय।।

भादवा

दोयज भादव बदीमें घटाटोप आकाश।
अन्न खरीदो खूब ही तेजी फागुण मास।।
भादव शुक्ला चौथको नभ ना दीखे चंद।
उत्तम वर्षासे रहे चारों दिशि आनन्द।।

आश्विन

आश्विन बदी अमावसी जो आवे शनिवार।
समयो होवै किरकरौ जोशी करो विचार।!
बादल वर्षा बीजली बिजया दशमी देख।
मूंग उर्द तिल तेलमें तेजी रहै विशेख।।

त्रैमासिक व्यापारिक दिग्दर्शन

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन अर्घकाण्ड-वाचस्पति, मैंनपुरी उत्तरप्रदेश]

श्रावण मास

इस मासमें पश्चिम दिशा अथवा उत्तरकी वायु या वायव्य (उत्तर पश्चिम कोण) की हवा जितनी जोरसे चलती है उतनी ज़ोरसे वर्षा भी होती है, किन्तु दक्षिणी वायु चलते ही वर्षा ऐसे रुक जाती है जैसे की आती हुई ट्रेन को लाल झण्डी दिखा दी गई हो। उ०प्र० पञ्जाब राजस्थान म०प्र० में परीक्षा करके देखना चाहिये। श्रावण मासमें ५ गुरुवार एवं कृष्णा १ गुरुवारी मूंग उड़द दाल अन्न तेलके बीज शेयर्स तेज करेगी, क्योंकि सूर्यसे आगे भौम वर्षा को बराबर रोकता रहेगा। ता० २७ को मिथुने शुक्र होते ही गुरुसे प्रतियोग तेल के बीज गेहूं जौ चना चावल दाल अन्न तेज, गुड़ खाण्ड रुई रेशम कालीमिर्च मन्दे करेगा। आज ही शीघ्री मृगे शनि होते ही उषायां राहुसे चरणात्मक वेध ता० ७ तक देशी घी लाख चपड़ा तुअर तेलके बीज तेज करेगा। कृष्णा ३ परतः चतुर्थी शनिवारी गुड़ खांडको मन्दा करेगी। कृष्णा ६ का क्षय एक मासमें रुई रेशम पाट कालीमिर्चको मन्दा करेगा। ३१ जुलाई बुधास्त पश्चिममें बादल वर्षा वायुवेग चांदी सोना तेलके बीज गुड़ खाण्ड रुई रेशम पाटकी चलती लाइनको एक दम बदल देगा १।१८ बजे भौम-बुध युति प्रत्येक वायदेमें गजबकी तेजी आवेगी। १ अगस्तकी शामसे वृश्चिकांशे सूर्य-शुक्र कल तक तेलके बीज मन्दे कर देंगे। बुधाष्टमी मन्दी लाती ही है। ता० ४ की रात को गुरुसे नवमस्थ सिंहे भौम सोना चांदी दाल अन्न गुड़ खाण्ड तेजीकी और चलते रहेंगे।

सिंहे भौमका फलः—"यदा अङ्गारकौ सिंहे तदा अङ्गारमयी मही" अस्तु । ग्रीष्मका भीषण प्रकोप होगा । कृष्णा ११ को मृगशिरा नक्षत्र होनेसे वर्षानाश, सर्वत्र हाहाकार होगा । ता० ६ को आर्द्रायां शुक्र मध्यप्रदेश व दक्षिणी हिन्दमें महान् वर्षा करेगा । कृष्णा १४ परतः अमावस मंगलवारी तेजीकारक है । शुक्ला १ को चन्द्रोदय गत वर्षोंके रिकार्डसे ३।४ मासमें जीवोंके प्राणनाश नर-संहार, प्रजा-विग्रह युद्धादि भय कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टिसे तेजी-मन्दीका दौर चलावेगा । वृषांशे गुरु-भौम ता० १४ तक तेलके बीज तेज करेगा, गुड़ खाण्ड भी तेज होंगे । ता० १२ को मघायां सिंहे भौम) कालमें कन्या-तुलाका चन्द्रमा तेलके बीज गुड़ खाँड गेहूँ दाल अन्नादिमें अचानक मन्दी भी ला सकेगा । ता० १४ को नेपच्यून मार्गी बादल वर्षा वायुवेग सभी वस्तुओंमें जबरदस्त चाल देगा । नागपञ्चमीसे शुक्ला ८ पर्यन्त मासारम्भ में उल्लिखित क्षेत्रोंमें वर्षा हो तो आगे भी उन्हीं क्षेत्रोंमें समयानुकूल वर्षा होती रहेगी । ता० १६ को मध्यान्हकालमें श्रावणमासगत श्री सूर्यदेव अस्त भौमसे युक्त गुरुसे संदृष्ट होकर वारात् ५ नक्षत्रात् ५, ४५ मुहूर्तमें सिंह राशिस्थ होंगे, फलतः ग्रीष्मका भीषण प्रकोप, सोना चांदी गुड़ खांड तांबा लालमिर्चमें विशेष तेजी आजानेकी आशंका है । आज ही तुलसी जयन्ती शुक्ला ७ को मासारम्भमें उल्लिखित क्षेत्रोंमें जहां भी ता० १५ को ३।१५ बजेसे आज शाम तक सूर्य-चन्द्रमा बादलोंमें ही रहें तो आगे उस क्षेत्रमें भी महान् वर्षा होती रहेगी । शुक्ला ७मीमें स्वाति नक्षत्र वर्षाकारक है । जो कहीं-कहीं अच्छी वर्षा लावेगा । साथ ही आज पूर्वोदयी बुध ता० १८ को मार्गी होकर भी अपने स्वभावानुसार बादल वर्षा वायुवेग करेगा । मार्केट की सभी वस्तुओंमें भी तूफानी उलटफेर करके व्यापारियोंको चकित कर देगा । ता० १६ की रातसे वृषांशे गुरु सूर्य ता० २२ तक तेलके बीजोंमें मन्दा, गुड़ खाण्डको तेज करेंगे । शुक्ला १० शनिवारी (सिंहार्कमें) कहीं-कहीं अच्छी वर्षा करेगी । ता० २० की शामसे सार्पे बुधका मघायां भौमसे चरणात्मक वेध ता० २४ तक सभी खाद्य वस्तुओंके साथ रुई पाट रेशमको भी तेज करेगा । ता० २२ बुध से शुक्र १२वें सभी वस्तुओके साथ चांदी सोनामें भी मन्दा लावेगा ता० २४ को रातमें शुक्र हर्षल केन्द्र कल सभी वस्तुओंको मन्दा करेगा । श्रावणी पूर्णिमाको धनिष्ठा नक्षत्र प्रायः उपजकी सर्वत्र कमीकी सूचना दे रहा है. किन्तु जिस क्षेत्रमें बादल बिजली गर्जना हो, दिनको फुहार पड़े तो आगे उसी क्षेत्रमें उत्तम वर्षाकी आशा करनी चाहिये इस मासमें नीमकी निबौली पकी फूली होकर जमीन पर ढेरों जिस क्षेत्रमें दिखाई देगी वहां वर्षा और उपज श्रेष्ठ होगी । किन्तु, यदि पेड़ पर ही सूखी लटकी रहे तो वर्षा और उपज भी उस क्षेत्रमें बहुत ही कम होगी, परीक्षित है ।

भाद्रपद मास

इस मासमें पूर्वी वायु लेखारम्भमें उल्लिखित क्षेत्रोंमें जितनी जोरसे चलेगी, तदनुसार वर्षा भी होगी । २५ अगस्तको डेढ़ बजे मार्गी गुरुसे बादल वर्षा वायुवेग होते ही चांदी सोना रुई रेशम पाट कालीमिर्च तेलके बीज गुड़ खांड दाल अन्नमें मन्दी आनेकी आशा करें, अन्यथा तेजी ही करेगा । आज ही रातको बृषांशे गुरु शुक्र ता० २६ को सवेरे तक बादल वर्षा सम्भव, साथ ही पूफायां भौम यहींसे सिंहांशे शनि-

भौम ता० ३० तक वर्षा नाशक, ज्वार बाजरा, मक्का तिल तेलके बीज गुड़ खांड हल्दी सोना चांदी तेज, पूर्वी हिन्दमें उत्पात करेगा। ता० ३० को पूफायां रवि होते ही यदि पूर्वी वायु चलेगी, तो वर्षा अवश्य ही होगी। श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी गुरुवारीका क्षय मन्दीकारक। यहां से प्रायः व्यापारिक वस्तुओंमें तेजी-मन्दीकी विशेष लाइन कभी-कभी बड़े जोर-शोरसे निकलती है। १ सितम्बरको सायं ७।१९ बजे शनि दृष्ट कर्क शुक्र, रातको सिंहे बुध होकर सूर्य+मंगल+बुध योगसे कभी तो सभी वस्तुओंमें जबर्दस्त तेजी तो कभी अच्छा मन्दा भी लाता है। आज ही रातको शुक्र-राहु दृष्टि कल सभी वस्तुओंमें अच्छा मन्दा ला सकेगी। ता० ५ को पुष्ये शुक्रसे सभी वस्तुयें मन्दी, आज ही दिनके १ बजे धनुषि राहु होकर गुरु +राहु योगसे रुई रेशम पाट कपड़ा कालीमिर्च तेज, तेलके बीज गुड़ खांड चना चावल दाल अन्न चांदी सोना सर्वधातु शेयर्स मशीनरी सामान किराना हल्दी जीरा धनियांमें भी कोई जबर्दस्त चाल निकलेगी। बाजारकी चलती लाइन का उपयोग करना बुद्धिमानी होगी। ता० ६ को पूर्वास्त बुधसे बादल वर्षा वायुवेगसे होगी तो सभी वस्तुओंमें भयानक मन्दी भी आ सकेगी। गुरुवारी अमावस सुभिक्षकारी होती है। आज ही सायं ४।२६ बजे सूर्य-भौम युतिसे मन्दा, मंगलका सूर्यसे पृष्ठ गमन महाद् वर्षा-कारक योग हो जाता है जो मन्दा लावेगा। ता० ९ को शी० पूफायां बुध सभी वस्तुओंमें मन्दीकारक है। ता० ११ को १ बजेसे शी० पूफायां बुधका पुष्ये शुक्रसे चरणात्मक वेध कल रात तक हिन्दव्यापी वर्षा लाने वाला योग है, जो मन्दीका कारण होगा। चांदी सोना रुई पाट रेशम भी प्रभावित होंगे। शुक्ला ४ सोमवारी चित्रा संयोगी ता० १५ तक बादल वर्षा लेखा-रम्भमें उल्लिखित क्षेत्रोंमें होगी तो निश्चित रूप से श्रेष्ठ मन्दा होगा। रेडियोका बोल्ट (VOLUME) घुमाकर कड़कड़ाहटसे किसी भी क्षेत्रकी वर्षाका ज्ञान कभी भी किया जा सकता है। ता० १२ को तुलांशे बुध-शुक्र रातसे ता० १४ को ३ बजे तक, ता० १४ की शामसे वृश्चिकांशे बुध-शुक्र ता० १६ को सवेरे तक श्रेष्ठ वर्षाकी सूचना देते हैं। शुक्ला ५ की वृद्धि मन्दीका ही सङ्केत करती है। ता० १३ को सूर्य-शनि केन्द्र किसी उत्पातके साथ सभी वस्तुओंमें अच्छा मन्दा लावेगा। ता० १५ की रातको उफायां भौम सभी वस्तुओंमें तेजीकारक, दक्षिणी हिन्द व मलाया सुमात्रा गोआमें वर्षा की कमी सुनाई देगी। ता० १६ को शी० उफायां बुध (भौमसे नक्षत्र योग तथा धनांशे भौम-बुध कल तक) मन्दीसे तेजी करेगा। आज ही १२ बजे कन्यामें रवि, ता० १८ को शी० कन्यायां बुध, ता० २१ को कन्यामें भौम होकर सूर्य+ बुध+भौम योग तेजी ला सकेगा। शुक्ला ८ मूल नक्षत्र संयोगी रुई रेशम पाट बोरी कालीमिर्च में तेजीकी लम्बी मोटी लाइन देगी। ता० १७ को सायं ६।४२ बजे सार्पे शुक्र कहीं-कहीं घोर वर्षा, सभी खाद्य वस्तुओंको मन्दा भी कर सकेगा। ता० २० को भौम-राहु त्रिकोण तेजी लावेगा। ता० २२ को १ चरण चतुर्दशी उप रान्त शुक्रवारी पूर्णिमामें ६०% पू०भा० नक्षत्र सुभिक्षकारी है। उ०प्र० पञ्जाब राजस्थान म०प्र० में आज बादल या वर्षा होगी तो सभी खाद्य वस्तुओंमें अच्छा मन्दा, खुला रहेगा तो तेजी होगी।

आश्विन मास

इस मासमें ईशान (उत्तर-पूर्व कोण) की वायु लेखारम्भ उल्लिखित क्षेत्रोंमें जहां भी चलेगी वहां आगे भी वर्षा होगी। प्रायः प्रति-वर्ष श्राद्ध पक्षमें तेजी-मन्दीका अच्छा दौर उपजकी कमी य। अधिकताके कारण चलता ही है। २५ सितम्बरको १।४६ वजेसे बृषांशे गुरु-बुध ३ दिनमें कहीं-कहीं वर्षा लावेंगे। ता० २७ कों मिथुनांशे बुध-गुरु १२।३७ बजेसे ता० २६ को सवेरे तक भूली भटकी वर्षा करेंगे। ता० २६ की रातको गुरु दृष्ट सिहे शुक्रसे चांदी मन्दी, गुड़ खांड दाल अन्न चना तांबा लालमिर्च को तेज करेगा। १ अक्टोबरको उषायां राहुका उफायां भौमसे चरणात्मक वेध ता० ६ को २।१२ बजे तक रुई रेशम पाट बोरी शेयर्स मन्दे, अन्य सभी खाद्य वस्तुओंको तेज कर देगा। ता० १ को चित्रामें बुध खाद्य वस्तुयें मन्दी भी कर देगा। ता० २ की रात मृगशी० शनि बक्री बादल वर्षा वायुवेग शनैः शनैः सभी वस्तुओं के मूल्यको बढ़ाता जावेगा। ता० ३ को चित्रा में बुधका मूलामें गुरुसे चरणवेध ता० ५ को सवा बजे तक बादल वर्षा वायुवेग, सभी खाद्य वस्तुओंके मूल्यको घटावेगा। ता० ४ को सायं भौम प्लूटो युति युद्ध महान् दुष्काण्डसे त्राहि-त्राहि होगी। ता० ५ को तुलामें बुध होकर बुध शुक्रके मध्य रवि आजानेसे वर्षाका नाश होगा। कन्या राशिमें सूर्य+भौम योग ग्रीष्म प्रकोप व्यापारकी सभी वस्तुओंमें तेजी लावेगा। ता० ६ को हस्ते भौम व्यापारकी सभी वस्तुओं में अच्छी तेजी लावेगा। ता० ७ को कृष्णा ३० शनिवारी दिसम्बर ७२ तक सभी खाद्य वस्तुओंके मूल्यको सवाया डयौढ़ा तक कर देगी। परीक्षित चान्स है, अन्यथा समय तो वता ही देगा। ज्योतिष विद्याके अविश्वासियोंको चुनौती है। रातको पश्चिमोदयी बुधसे बादल वायुवेग शीतकी वृद्धि होगी। गुजराती आश्विन मास (शुक्ला १ से कार्तिक कृष्णा ३० तक) में ५ रविवार तेलके बीज गुड़ खांड घी तेल लालमिर्च खोपरा अन्नादि तेज करेंगे। ता० ६ को चली लाइन ता० ११ को बड़े जोर-शोरसे बदलेगी। ता० १३ को चित्रामें रविका मूलामें गुरुसे चरणवेध ता० १६ तक तथा शुक्ला ६ शुक्रवारी रुई रेशम पाटके साथ अन्य वस्तुयें भी मन्दी करेगा। ता० १६ की रातको तुलामें रवि होकर सूर्य+बुध योग मन्दीके झटकोंमें मन्दी हुई वस्तुयें खरीदनेसे लाभ होगा। सूर्य-शुक्रका परिवर्तन योग गुड़ खांड तेज करेगा। ता० १६ को भौमोदय यहांसे चली लाइन ता० २७।२८ को बड़े जोर-शोरसे बदल देगा। ता० २० को वृश्चिकांशे सूर्य-शुक्र रुई पाट रेशम तेलके बीज ता० २२ तक मन्दे करेंगे। लाभ हानिका पूर्ण उत्तर दायित्व प्रयोक्ता महोदय पर ही रहेगा।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

जुलाई १९७२ ई०

ता० २६ बुधवार—श्रीगुरुपूर्णिमा व्यास पूजा
२९ शनिवार—श्रीगणेश ४ व्रत चं.उ. ९।४

अगस्त १९७२ ई०

ता० १ मंगलवार—श्री तिलक जयन्ती
५ शनिवार—कामदा एकादशी व्रत
६ रविवार—प्रदोषव्रत
९ बुधवार—हरियाली अमावस
११ शुक्रवार—चन्द्रदर्शन मु० ३०
१२ शनिवार—मधुश्रवा संधारा ३
१४ सोमवार—नागपंचमी
१५ मंगलवार—भारतीय स्वतन्त्रता दिवस
१६ बुधवार—सिंह संक्रान्ति तुलसीदास ज०
१७ गुरुवार—श्रीदुर्गाष्टमी मेला श्री नयना देवी चिन्त्यपूर्णी (हि०प्र०)
२० रविवार—पुत्रदाएकादशीव्रत स्मा वै.
२१ सोमवार निम्बार्क ११ व्रत
२२ मंगलवार—भौम प्रदोषव्रत
२४ गुरुवार—रक्षाबन्धन श्रावणी पूर्णिमा ऋषितर्पण, सत्यव्रत, श्री अमरनाथ यात्रा
२७ रविवार—कज्जली ३ श्रीगणेश ४ व्रत चंद्रोदय रात्रि ८।१४
३० बुधवार—हलधर ६ श्री बलदेव जयन्ती
३१ गुरुवार—श्रीकृष्णजन्माष्टमी (जयन्ती) व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ११।१९ गोकुलाष्टमी, आद्या काली जयन्ती।

सितम्बर १९७२ ई०

ता० १ शुक्रवार—नन्द महोत्सव, गुग्गा ९
३ रविवार—अजा एकादशी व्रत स्मा. वै.
४ सोमवार—निम्बार्क ११, वत्स द्वादशी
५ मंगलवार—भौमप्रदोषव्र जैन पर्यूषण
७ गुरुवार—कुशोत्पाटिनी पिठौरी अमावस
९ शनिवार—चन्द्रदर्शन मु०३०
१० रविवार—हरितालिका ३ वराह जय०
११ सोमवार—श्रीगणेश जन्म महोत्सव कलंक ४ पत्थर चौथ
१२ मंगलवार ऋषिपंचमी जैन संव्वत्सरी
१५ शुक्रवार मुक्ताभरण७, जन्मोत्सव-श्री १०५ सोलन-नरेश
१६ शनिवार—कन्यामें सूर्य संक्रान्ति मु० ३० श्रीराधाष्टमी दुर्वा ८
१७ रविवार—श्रीचन्द्र ९ उदासीन सम्प्रदाय
१९ मंगलवार—पद्मा एकादशी व्रत जलझूलनी मेला श्री चारभुजा गढ़बोर-मेवाड़ (राजस्थान)
२० बुधवार—प्रदोषव्रत श्री वामन ज० श्रीभुवनेश्वरी [जयन्ती।
२२ शुक्रवार—अनन्त १४ व्र० सत्यव्रत
२३ शनिवार—पितृपक्ष महालयारम्भ सवरात महोत्सव यवनोंका
२६ मंगलवार—श्रीगणेश ४ व्रत चं.उ. ८।२८

अक्टूबर १९७२ ई०

ता० २ सोमवार—श्री महात्मा गांधी जयन्ती
३ मंगलवार—इन्दिरा एकादशी व्रत
४ बुधवार—प्रदोषव्रत
७ शनिवार—सर्वपितृ अमा०महालय स०
८ रविवार—शारदीय नवरात्रारंभ
९ सोमवार—चन्द्र दर्शन मु० १५
१४ शनिवार—श्री सरस्वती आवाहन
१५ रविवार—श्री दुर्गाष्टमी सरस्वती पूजा महाष्टमी मेला श्री ज्वालामुखी
१६ सोमवार—महानवमी सरस्वती बलिदान
१७ मंगलवार—विजया१० मेला दशहरा रावणदाह श्रीसरस्वतीविसर्जन
१८ बुधवार—पापांकुशा ११ व्र. भरतमिलाप
१९ गुरुवार—एकादशीव्रत वैष्णवोंका
२० शुक्रवार—प्रदोषव्रत
२२ रविवार सत्यव्रत, शरद्पूर्णिमा।



तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर

नारायण जानता है कि उसकी आमदनी मामूली सी है। इसीलिये वह और उसकी पत्नी सोच समझकर खर्च करते हैं।

और बातों के साथ साथ उन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा के लिये बड़े विचार से एक योजना बनाई है क्योंकि इसमें ही उन सब का कल्याण है।

तभी तो उन्होंने परिवार को भी छोटा रखने का फैसला कर लिया है ताकि वे हर बच्चे को अच्छी शिक्षा दे सकें।

davp 71/532

Achievements Under Community Development.

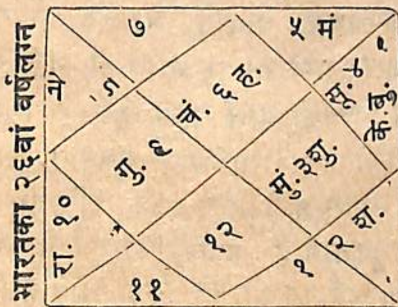
Applied Nutrition Programme.

	1968-69	1969-70	1970-71
1. Horticulture.			
1. School Gardens Laid (No)	226	132	2443
2. Area Covered under School Gardens (Hect)	N.A.	8	7
3. Kitchen gardens laid (No)	—26,9	8044	19051
4. Area convered under kitchen gardens. (Hect)	N.A.	126	319
5. Community gardens laid (No)	—	645	N.A.
6. Area covered under Commn-Gardens (Hect).	—	15	2
7. Horticulture block units setup (No)	N.A.	N.A.	7
8. Horticulture Villages units setup (No)	—	44	10
II. Poultry			
1. Poultry Biock units set up (No)	1	NA	62
2. Poultry village units set up (No)	13	407	427
III. Pisciculture			
1. Fishery units set up (No)	Nil	11	—
2. Fishery village units set up (No)	—	6	2
3. Water area stocked (Hect)	6	9	2
4. Fingerlings supplied (No)	8300	36000	21200
IV. Feeding Programme.			
1. Pre school/school children	72,300	21,100	661
2. Expectant/Nursing mothers	1,300	6.800	NA
3. Vegetables supplied (Kg)	11,990	593	2.032
4. Eggs supplied (No)	3000	NA	24,700
5. Milk Supplied (Liters)	22,712	1,238	165
6. Fish supplied (Kg)	45	43	—
V. Youth And Wamen Programme			
1. Mahila Samitis Associated (No)	92	90	153
2. Membership in Mahila Samitis.	841	1591	2,531
3. Youth Club Associated (No)	33	55	66
4. Membership in Youth Clubs.	632	882	1,121
VI. Training			
1. Persons trained in Hort.	....	26	110
2. Porsons trained in poultry	—	251	202
3. Persons trained in pisciculture	—	...	37
4. Non-Officials trained.	438	420	585
5. Officials trained.	....	...	16

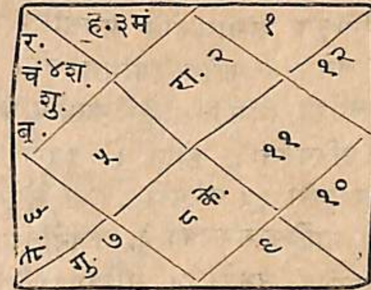
(पृष्ठ १६ से आगे)
इसी अवधिमें २८ जूनसे १ जुलाई तक शिमलामें शिखर सम्मेलन हो रहा है। आर्य संस्कृतिका अधिनायक देवगुरु बृहस्पति स्वराशिमें वक्री है और अकेला है, किसी अन्य ग्रहका इस पर दबाव (संयोग) नहीं है, अतः जहां भारत सहृदयता और सद्भावनासे स्थायी शांतिका प्रयत्न करेगा वहां अनार्य सस्कृति-प्रधान दैत्य गुरु शुक्र भी स्वराशिस्थ है, परंतु यह शनिके प्रभावमें है और गुरु शुक्रका षडष्टक योग हैं। यह अनार्य पक्ष (पाकिस्तान) की हृदय शुद्धता का परिचायक नहीं है। तात्कालिक क्षणिक (कुछ महीनोंके लिए) स्वस्थ वातावरण चाहे भले ही बन जावे पर इससे सदाके लिए स्थायी शान्ति की आशा रखना मृगमरीचिका मात्र होगी।

स्वतन्त्र भारतका २६वां बर्ष

सं० २०२९ श्रावण शु० ५ सोमवार दि० १४ अगस्त १९७२ को इष्ट घट्यादि ९।५९ सू० ३।२८ कन्या लग्नके २० अंशमें २६वां बर्ष प्रारम्भ होगा। स्वतन्त्रता प्राप्तिके २५ बर्ष पूर्ण हो जानेसे इस नये वर्षमें रजतजयन्ती उत्सव मनाया लावेगा। २५ बर्ष पूर्व स्वतन्त्रता की उपलब्धि १४ अगस्तकी अर्ध रात्रिमें हुई थी, अतः सौरमानसे वर्षारम्भ प्रतिवर्ष प्रायः १४ अगस्तको ही होता है। स्वातन्त्र्योत्सव १५ अगस्त मंगलवार १९७२ को ही मनाया जावेगा।



स्वतन्त्र भारतका जन्म लग्न



लग्नेश दशमेश मुंथेश बुध लाभ स्थानमें है। धनेश भाग्येश शुक्र दशममें मुंथाके साथ और सुखेश सप्तमेश गुरु केन्द्रमें बलवान् है अतः इस वर्षमें भारतका गौरव संसारमें बढ़ेगा। उद्योग धन्धोंमें प्रगति होगी। अनेक देशोंसे व्यापार सन्धियां होंगी. भूगर्भ सम्पत्तिके नये स्रोत उपलब्ध होंगे। मंगल व्यय स्थानमें मित्र राशिस्थ, गुरुसे दृष्ट है। अतः भारतकी सैन्य शक्ति सुदृढ़ बनेगी, शत्रुओंको भारतकी प्रगति पर ईर्ष्या होगी। दशम राज्य भावमें मुंथा शुक्रयुक्त गुरु दृष्ट है अतः केन्द्रीय सत्ता सुदृढ़ होगी और स्थायी शांति एवं समृद्धिकी ओर शासक प्रयत्नशील होंगे। स्वतन्त्र भारतका जन्म शनि दशाके अन्तमें हुआ था। अब इस बर्षके अन्तमें केतुकी महादशा समाप्त होकर शुक्र महादशा प्रारम्भ होगी। केतुके ७ वर्ष वृश्चिक राशिमें होनेसे संघर्ष कारक रहे हैं। उच्च राशिगत केन्द्रमें होनेसे संकटों संघर्षोंको पार करते हुए अपने उच्च आदर्शों पर भारत आगे बढ़ता रहा है। अब आगामी २७वें वर्षसे आगे शुक्र महादशाके २० वर्ष भारतके लिए उत्तरोत्तर प्रगतिकारक सिद्ध होंगे।

इस २६वें वर्षलग्नमें दशमस्थ शुक्रका चतुर्थस्थ गुरुसे ईसराफ योग बन गया है। गुरु

शुक्र वैसे भी निसर्ग शत्रु हैं, अतः राष्ट्रनायकों वा शासनसूत्र संचालकोंमें आन्तरिक मतभेद उभरने लगेंगे । फलतः मंत्रिमंडलोंमें हेरफेर होंगे । वर्षकी प्रथम तिमाहीमें केन्द्रीय मंत्रिमंडल में कुछ परिवर्तन होगा । दूसरी तिमाही १५ नवम्बरसे १५ फरवरी तकका समय भारत के लिए आर्थिक संकटका है, राजनैतिक सामाजिक मतभेद उभरेंगे । मन्त्रिमण्डलोंमें प्रतिस्पर्धा वा फूटके कारण कुछ अकल्पित परिवर्तन होंगे । कांग्रेसमें अति वामपंथी गर्म दल और नर्मदलका संघर्ष पराकाष्ठा पर पहुंचेगा । शहरी सम्पत्ति और भूमि-सुधार परिसीमन योजना पर उग्र मतभेद होंगे । पंजाब बंगाल बिहार उड़ीसा असम केरल और तमिलनाडमें कुछ नाटकीय घटनाएं होंगी । गुप्त षड्यंत्रमें कुछ अधिकारी फंसेंगे । दो वरिष्ठ अधिकारी दुर्घटना-ग्रस्त होंगे । मंहगाई बढ़ेगी, बेकारी दूर नहीं होगी । कछ सामाजिक आर्थिक धार्मिक एव राजनैतिक मामलोंमें प्रजामें उग्रमतभेद होनेसे कहीं सत्याग्रह हड़ताल एवं उग्रप्रदर्शन होंगे। पौष मास (जनवरी १९७३) में धनुः राशिमें पंचग्रही योग हो रहा है, यहांसे आगे ६ मास तक कुछ भयंकर दुर्घटनाएं या प्रकृति-प्रकोपसे हानि होगी । शीतलहर हिमपात ओलावृष्टिसे भी हानि होगी । यहां पाकिस्तानसे सम्बन्ध कुछ तनावपूर्ण होंगे । सीमाओं पर युद्ध जैसी स्थिति बनेगी । २४ जनवरीको गुरु अपनी नीच मकर राशिमें प्रवेश करेगा वहांसे आगे १ वर्ष तक शान्ति वार्ता या संधियां विफल होंगीं । राष्ट्रोंमें विग्रह बढ़ेगा, समझौते भंग होंगे । आगामी ग्रीष्मकाल (वर्षके) उत्तरार्धमें भयंकर गरमी और लूसे प्रजा त्रस्त होगी । अग्निकाण्ड अधिक होंगे ।

इन सब अनिष्ट योगोंके होते हुए भी वर्ष लग्नेश मुन्थेश जन्मलग्नेश बुधशुक्र दशम एकादशमें होनेसे भारत सभी प्रकारके संभाव्य संकटोंको पार करके उत्तम भविष्यका निर्माण करेगा । यथा–

"यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो लग्नधिपो जन्मविलग्नपो वा । केन्द्रत्रिकोणाय धनस्थितास्ते सुखार्थ हेमाम्बर लाभदा स्युः ।।"

गरीबी और बेकारी दूर करनेका उद्घोष शासनतंत्र गतवर्षसे निरन्तर करता आ रहा है और इसीके बलपर चुनावमें अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है । परन्तु ग्रहयोग तो ऐसे हैं कि इस वर्षमें जीवनोपयोगी वस्तुएं सस्ती नहीं होंगी । मँहगाई बनी ही नहीं रहेगी अपितु अनेक वस्तुएं सर्वसाधारण निर्धन जनताके लिए दुर्लभ होंगी । बेकारी बढ़ेगी । गतवर्ष इन्हीं दिनों 'श्रीविश्वविजयपंचांग' सं० २०२९ में पृष्ठ १०-११ पर 'वाणिज्यव्यवसाय' स्तम्भमें जो विचार लिखे थे वे पाठकोंने पढ़ें होंगे ।

शिमला शिखर–सम्मेलन

आज २८ जून बुधवारको बहुचर्चित शिखर-सम्मेलन शिमला हिमाचल-सचिवालय में सायंकाल ५–१० पर भारतकी प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और पाकिस्तानके राष्ट्रपति श्री जुल्फीकार अली भुट्टोकी औपचारिक प्रथम वार्तासे प्रारम्भ हो गया । इस शिखर सम्मेलन पर भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्वकी आंखें लगी हुई हैं । दक्षिण एशियाकी स्थायीशान्तिका सूत्रपात इस पर निर्भर होनेसे सभी लोग इसका परिणाम जानने की उत्सुकतामें हैं । ग्रहस्थिति पर विवेचन करने के लिए कई पत्र भी मेरे पास आये हैं । आज

सायंकाल ६ बजे जब मैं भ्रमणार्थ मालरोड़से निकला तो कुछ मित्रोंने श्री हीरालाल कौसर की दुकान पर बिठा लिया । इनके मुद्रणालय पर सायंकाल जाते आते कुछ क्षण बैठकर स्थानीय साहित्यिक स्नेही सज्जनोंकी देशविदेश पर चर्चाएं प्रायः होती रहती हैं। मेरे परम स्नेही श्री चन्द्रदत्तजी शास्त्रीने प्रश्न किया कि -- "शिमलामें इस समय शिखरवार्ता चल रही है। अभी सायं ५ - १० पर प्रारंभ हुई हैं। इस का परिणाम जाननेके लिए हम सब उत्सुक हैं, कृपया लग्न लगाकर अपना निर्णय दीजिए ?"

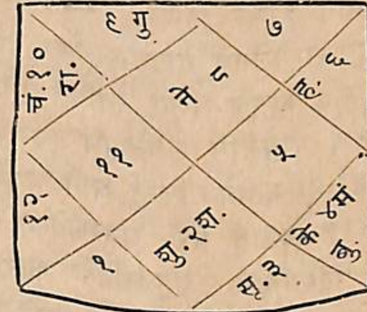
उस समय पंचांग मेरे पास नहीं था। परन्तु दैवज्ञके नाते चन्द्रमा और ग्रह स्थिति प्रायः नित्यकी स्मरण रहती है । उस समय सायंकाल वृश्चिकलग्न तो निश्चत था ही। लग्नेश मंगल नीच राशिमें केतुके साथ नवम और नवमेश चन्द्रमा राहुके साथ था अतः मैंने शास्त्रीजीको बताया कि इस सम्मेलनसे स्थायी शान्तिके कोई ठोस परिणाम नहीं निकलेंगे। अभी तत्कालमें तो किसी भी महत्वपूर्ण प्रश्न पर कोई निर्णय नहीं हो सकेगा। स्थिर लग्नमें शीघ्र कार्य सिद्धि नहीं होती। समस्या जहांकी तहां रहती है। आचार्य पृथुयशने लिखा है -

"वृषसिंह वृश्चिकघटैर्विद्धि स्थानं गमागमौ नस्तः। न मृतं न चापिनष्टं न रोग शान्तिर्न चाभिभवः ॥"

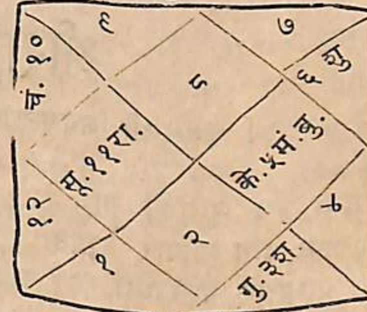
रात्रिको घर पहुँचकर मैंने इस सम्मेलन का इष्टकाल लग्न और नवांशकण्डली बनाकर विचार किया उसका दिग्दर्शन यहां संक्षेपमें प्रस्तुत कर रहा हूं।

सं० २०२६ वि० आषाढ़ कृष्णा २ बुधवार दि० २८ जून १९७२ सायंकाल ५ - १० शिमलानगरे अक्षांशा: ३१।६ पूर्वरेखांशा: ७७-१३, इष्ट घट्यादि २९।१५ सू० २।१३ ल० ७।१५

लग्न कुण्डली



नवांश कुण्डली



शिखर सम्मेलके प्रारम्भमें वृश्चिक लग्न १५ अंश होनेसे नवांश लग्न भी वृश्चिक ही है। २८—२९ ३० जून तीन दिनके लिए यह सम्मेलन हो रहा है, परंतु स्थिर लग्न नवांशमें प्रारम्भ होनेके कारण एक दो दिनके लिए और आगे बढ़ जाना सम्भव है, और इसकी परिणति यहीं नहीं होगी। अर्थात् आगे इस विषय पर पुनः वार्ता पाकिस्तान या अन्य किसी तटस्थ देशमें करनेकी बात कहकर सम्मेलन समाप्त होगा। राज्येश सूर्य अष्टममें गया और नवांश में राहुके साथ हो गया है । नवांश कुण्डलीमें गुरु शनि अष्टम गये हैं, अतः काश्मीर प्रश्न पर सम्मेलनमें गतिरोध सम्भव होगा । काश्मीर

पर पाकिस्तान अपना दृष्टिकोण नहीं बदलेगा। काश्मीर और युद्धबंदियोंकी प्रमुख समस्याएँ इस सम्मेलनमें पूर्णरूपसे नहीं सुलझ पायेंगी। लग्न वर्गोत्तम है और गुरु शुक्र दोनों ही स्वक्षेत्र में बलवान् होकर क्रमशः २—७ में स्थित हैं अतः इस सम्मेलनसे भारत-पाकका पारस्परिक तनाव कुछ कालके लिए स्थगित हो जावेगा और कुछ मामलोंमें शान्तिपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर हो जावेंगे। किन्तु आगे चलकर दोनों देशोंके जनमानस पर समझौतेका अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। राहु शनिके कारण पाकिस्तानके द्वारा समझौतेका पूर्ण रूपमें पालन न होनेसे यह कागजी कार्यवाही मात्र रहेगी। परन्तु अभी दोनों देशोंके प्रतिनिधि स्नेह-सद्भावना लेकर शिमलासे विदा होंगे। आगामी वर्ष १९७३ में मकरके गुरु और मिथुनके शनिमें काश्मीर समस्या पुनः विस्फोटक बनेगी। जगदम्बा इन भूले भटके पाकिस्तानियोंको सद्बुद्धि दे ताकि आत्मविनाशसे बच सकें। ये भी क्या करें अब इनके अन्तका समय १४वीं शतीका समाप्ति-काल सन्निकट है और अनेक सन्तमहात्माओंकी भविष्यवाणियां भूतवर्तमानको स्पष्ट कर चुकी हैं और भविष्य सामने आ रहा है। शिवमस्तु सर्वजगतः।

दि० २८-६-७२

श्रीशङ्कर व्यापार-भविष्य

[ले०—श्री शिवचरणलाल शर्मा रमलाचार्य, फिरोजाबाद (उ०प्र०)]

ता० २६ जुलाईसे ता० २२ अक्टूबर १९७२ तक चांस व्यापार वायदा एवं हाजिर प्रत्येक धान्यादि दालदाना, रुई कपास, गुड़ खांड चीनी, पाट जूट वारदाना, चांदी सुवर्ण-मिल शेयर्स एवं किराणा, खुश्क मेवा, कच्ची सब्जी, तिलहन तेलवीयां, देशी घृत और बम्बई वरली मटका आदिकी तेजी मन्दी।

चांस हाजिर व्यापार धान्यादि दालदाना—

श्रावण प्रारम्भ तक आशा है व्यापारी बन्धु स्टाक कर चुके होंगे, अगर स्टाक नहीं किया हो तो स्टाक अवश्य करें। चूंकि ग्रह योगानुसार गेहूँ चना, चना दाल, जौ मटरा अरहर (तुअर) में सितम्बर तक ८)१०)१५) रु० के लगभग तेजी बन जाना सम्भव है। मूंग उड़द में ५)७) रु० मौठ मसूरमें ८)१०) रु० की, बाजरा जुवारीमें ३)४)५) रु० तककी तेजी बनेगी। मक्कीमें प्रथम २)३) रु० की तेजी आकर ५)७) रु० की मन्दी बनेगी। राज-माष लोबियामें भी सितम्बरसे तूफानी मन्दीका संचार होगा। खण्ड वृष्टि व अनावृष्टिके कारण यत्र-तत्र दुर्भिक्ष पड़ेगा। ३० सितम्बर को स्टाक निकाल दें, चूंकि भविष्यमें तूफानी मन्दी चलेगी।

किराणा पोस्ता बीज कालीमिर्च लाल-मिर्च राई लवंग कूट्ट हल्दी जीरा मैथी धनियां सोंफ सौंठ खरीदो, ३० सितम्बर तक अच्छी तेजी बनेगी। सांभर नमक सिंघाड़ा छोटी बड़ी इलायची लाख चपड़ामें तूफानी मन्दीका संचार होगा। यह मन्दी अक्टूबरके मध्य तक अच्छी बनेगी। अमचूर इमलीमें ता० २६ जुलाईसे रुख तेजीका रहेगा।

खुश्क मेवा—काजू अखरोट छुहारा पिस्ता

किसमिसमें ता० २८ जुलाईसे ३० सितम्बर तक आई मन्दी स्टाक कर लो, ता० ३० सि० से २० अक्टूबर तक अच्छी तेजी बनेगी, सूखा गोला बादाम चिलगोजा आलूबुखारामें ता० २७ जुलाईसे ही तेजीकी लाइन अक्टूबर तक इकतरफा चलेगी।

रुई कपास—ता० २७ जुलाईसे २० सितम्बर तक तेजी। २० सितम्बरसे २२ अक्टूबर तक राजनैतिक कारणवश मन्दी बनेगी।

पाट जूट बारदाना—में ता० २७ जुलाई से एक बार अच्छी मन्दी बनेगी। इस आई मन्दी में १४ अगस्त तक खरीदो। ३१ अगस्त तक तेजी खेलनेवाले व्यापारी माल कमा लेंगे।

चांदी—ता० २४ जुलाईको खरीदो, अथवा ८ दिनकी तेजी लगा दो। ३१ जुलाई तक ८) १०) रु० तेजी बन सकती है। किन्तु यह तेजी की लाइन ६ अगस्त तक इकतरफा चलेगी, ता० २४ जुलाई तक नीचा भाव ता० ६ अगस्त तक एक टकासे भी क्रासिंग खिलाफ हो जाये तो सौदा काट कर तार चिट्ठी फून द्वारा हमारा परामर्श लें। सूर्य बुध गुरु राहुका प्रभाव चांदी एवं धातु पदार्थों पर विशेष रूपसे पड़ते देखा गया है। ता० २५ अप्रैलको गुरु देवाचार्य वक्री हुये थे उसी समयसे चांदीमें तूफानी मन्दीका संचार हुआ है। ता० २५ अगस्तको गुरु के मार्गी होनेके उपरान्त चांदी लाइनमें विशेष परिवर्तन होगा। ता० ५ सितम्बरको राहुने धनु: राशि व केतुने मिथुन राशि पर प्रवेश किया है, उपरोक्त योग जब भी बना है चांदी एवं धातु पदार्थोंमें ६ माह पूर्वसे सदैव १००) तक या कम अधिक मन्दी निश्चय आई है।

चांदी वायदाके गिने चुने चांस—ता० ७ अगस्तको बन्द तक आई मन्दी खरीदो, अथवा ८ अगस्तकी तेजी लगा दो ३)३॥) रु० तक तेजी बनेगी। ता० १५ को खुलते बाजारसे १६ तक ३)५) रु० की तेजी बनेगी। ता० ३१ अगस्तको चांदी बेचो अथवा ८ दिनकी मन्दी लगा दो, ता० ८ सितम्बर तक चांदीमें १२) १५) रु० तक मन्दी बन सकती है।

ता० १६ सितम्बरको चांदी खरीदो अथवा २० की तेजी लगादो ३)४) रु० की तेजी बनेगी। उपरोक्त आंकड़ोंसे कम अधिक भी लाइन चल सकती है।

चांस स्वर्ण—रिपोर्ट लिखते समय सोना का भाव २८०)२८५) रु० प्रति तोलाका है, सोना २६०) रु० से ऊंचा भाव नहीं बनेगा। सोना नीचेमें २००)२१०) रु० वर्षके अन्त तक भाव बन जायेगा।

चांस हरा नारियल—ता० २६ जुलाई तक स्टाक कर लो ३० सितम्बर तक १५०) २५०) रु० तक तेजी नारियल पर बन जायेगी।

चांस वायदा एवं हाजिर गुड़ खांड चीनी—गुड़ खांड रसादिक पदार्थों पर विशेष प्रभाव मंगल ग्रहका पड़ता है। ता० १८ जुलाईको मंगल अस्त हो गया है, अतः यहांसे एक बार रसादिक पदार्थोंमें अच्छी तेजीका संचार ता० ७ सितम्बर तक करेगा। ७ सि० तक आई तेजीमें व्यापारी बन्धु अपना स्टाक निकाल दें। भविष्यमें तूफानी मन्दी बनेगी। अगर ता० १८ जुलाईसे ७ सितम्बर तक तेजी बनी है तो ७ सि०से भविष्यमें अच्छी मन्दी बनेगी, अन्यथा तेजी चलेगी।

चांस साबुनी तेल—ता० २७ जुलाईसे २० अगस्त तक महुआ करन्जी नीम तेल चर्बी में साधारण रुख तेजीका रहेगा। किन्तु यह तेजी स्थिर नहीं है. व्यापारी स्टाक निकाल दें। ता० २० अगस्तसे मन्दीका संचार होगा। यह मन्दी अक्टूबर तक इकतरफा चलेगी।

चांस तम्बाकू आदि—ता० २७ जुलाईसे ३१ अगस्त तक तम्बाकू तेंदू पत्ता आदिमें तेजी रहेगी। १ सितम्बरसे भविष्यमें मन्दी चलेगी।

चांस देशी घृत—ता० २६ जुलाईसे ३० सितम्बर तक ग्रह योग तेजीके प्रबल हैं।

चांस कैमीकल—सिलेनियम वीरैक्स आरसैनिक केडियममें ता० २६ जुलाईसे २० अगस्त तक तेजी। २० अगस्तसे ३० सितम्बर तक मार्केट उछल-उछल कर टूटता जायेगा।

चांस तिलहन तेलवीयां व्यापार वायदा एवं हाज़िर ता० २६ जुलाईसे अलसी एरण्डा, तेल मूंगफली बिनौला (सरकी) सरसोंमें ४ सितम्बर तक दुतरफा घटबढ़ चलते हुये वतौर रियक्शन मन्दी बनेगी। किन्तु यह मन्दी स्थिर नहीं है। ता० ५ अगस्त तक पुनः स्टाक कर लो। ता० ५ को गुरु शुक्र सम सप्तक योग ता० ७ अगस्तको शनि राहु वेध यह योग भविष्यमें काली वस्तु एवं तेलवीयांमें तेजीका तूफान मचा देगा। यहांसे लम्बी लाइन अच्छी तेजीकी बन जाती है। ता० ४ अगस्तका नीचा भाव, २ सितम्बर तक क्रौस नहीं होगा। अगर साधारण भी लाइन विपरीत जाये तो तुरन्त सौदा काटकर हमारा परामर्श अवश्य प्राप्त करें। ता० ४ सितम्बरसे यत्र तत्र बादल तूफान बर्षाका योग सम्पन्न होगा और तेलवीयांमें अच्छी मन्दीका संचार होगा।

शाह नियामतउल्ला वली साहबकी भविष्यवाणी

[श्रीविश्वविजयपंचांग' और 'ज्योतिष्मती' के गताङ्कोंमें हम महर्षि व्यास, योगी अरविन्द, श्री जूलवर्न और प्रो० हरारकी भविष्यवाणियाँ प्रकाशित कर चुके हैं। इन सब भविष्यवाणियोंमें पाकिस्तानके पतन और भारतके अभ्युदयका उल्लेख है। पाकिस्तानका अङ्ग भंग तो हो चुका है और अब वह अपने तथाकथित मित्रोंसे विनाशक शस्त्रास्त्र प्राप्त करके विनाशके पथ पर अग्रसर हो रहा है। अब हम बुखाराके एक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता सन्त शाह नियामत उल्ला वली साहबकी भविष्यवाणी यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। यह भविष्यवाणी अभी हमें एक पत्रसे प्राप्त हुई है। इसका पूर्ण विवरण पटना स्थित खुदाबख्श ओरियण्टल लायब्रेरीसे प्राप्त करनेका प्रयत्न करेंगे। —सम्पादक]

बंगला देशकी समस्याका क्या परिणाम होगा ? पाकिस्तानकी राजनीतिक सूरत क्या होगी ? इन महत्वपूर्ण समस्याओं पर भविष्यवाणी शाह नियामत उल्ला वली साहबने कई सौ वर्ष पहले ही कर दी थी । उनकी भविष्यवाणी है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें परस्पर शत्रुता इतनी बढ़ जायगी कि दोनोंमें युद्धका तनाव तब तक बना रहेगा, जब तक कि मुसलमानी भू-भाग पूरी तरह पराजित हो कर फिरसे भारतमें नहीं मिल जाएगा। उन्होंने पाकिस्तानको मुसलिम भू-भाग ही कह कर सम्बोधित किया है। साथ ही इस मुसलमानी भू-भागको जीतने वाला भारतीय सेनापति भी कोई मुसलमान ही होगा, किन्तु इसके बाद हिन्दू और मुसलमान दोनों जातियां एक ही जातिकी तरह घुलमिल जायेंगी।

कसीदेमें लिखी भविष्यवाणी

यह भविष्यवाणी फारसीमें कसीदेकी सूरतमें लिखी हुई है। जिस ग्रन्थमें यह कसीदा है, वह पटनाकी खुदाबख्श ओरिएन्टल लाइब्रेरीमें सुरक्षित है।

उक्त सन्त शाह साहबकी भविष्यवाणियां अभी तक चमत्कारपूर्ण ढंगसे बिल्कुल ठीक सिद्ध हुई हैं जिसने लोगोंको आश्चर्यमें डाल दिया है। उन्होंने लिखा था कि जापान और रूसमें युद्ध होगा। जो कि १९०४ में ठीक प्रमाणित हुआ। इसी प्रकार जापानमें जो १९२३ में भूकम्प आया था, उसके बारेमें इस ग्रन्थमें लिखी उनकी सन्तवाणी सत्य सिद्ध हुई। उन्होंने प्रथम विश्वयुद्धके बिषयमें लिखा था कि अंग्रेज और जर्मन लड़ेंगे, उसमें अंग्रेज जीतेंगे। इस युद्धमें एक करोड़ इकत्तीस लाख लोग मारे जायेंगे। ब्रिटिश कमीशन रिपोर्टने इस संख्या की भी पुष्टि की है। उन्होंने यह भी लिखा था कि जर्मन दो भागोंमें बट जायेंगे और उनमें ननाव बढ़ेगा।

उन्होंने दूसरे विश्वयुद्धके प्रसंगमें एक भयंकर बम विस्फोटका जिक्र किया है। हम जानने हैं कि दूसरा महायुद्ध जापानमें दो एटम बम विस्फोटोंके साथ समाप्त हुआ।

भारत फिर अखंड होगा

उन्होंने हिन्दुस्तानके बारेमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक युगोंका वर्णन पहलेसे ही कर दिया था। कहा था कि मुसलमानोंके हाथसे भारत विदेशियोंके हाथमें चला जायगा, फिर हिन्दू-मुसलमान मिलकर उनके खिलाफ विद्रोह

करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप विदेशी शासक यहांसे चले तो जायेंगे, परन्तु हिन्दुस्तानको दो टुकड़ोंमें बांट जायेंगे। ये दोनों टुकड़े दो देश बन जायेंगे। फिर कोई भारतीय मुसलमान सेनापति ही मुसलमानी भागको जीतकर भारत में मिला लेगा।

इस भविष्यवाणीसे भी कहीं अधिक महत्व-पूर्ण तीसरे महायुद्धके विषयमें कही हुई कुछ बातें हैं। वली साहबकी भविष्यवाणी है कि तीसरा विश्वयुद्ध बहुत भयंकर होगा। एक ओर तो युद्ध दल अमेरिका होगा और दूसरी ओर चीन। इसके बाद अंग्रेज अपनी सभ्यता सहित पूरी तरह समाप्त हो जायेंगे और हिन्दुस्तान एक महती शक्तिके रूपमें प्रकट होगा। किन्तु इसके लिए उसे बहुत कठोर संघर्ष करना पड़ेगा। इस घोर संकटके बीच इस देशमें एक फरिश्ता आएगा जो हजारों छोटे मोटे लोगोंको अपने खेमेके नीचे एकत्र कर लेगा। इन लोगों में वह इतना उत्साह और शौर्य फूंक देगा कि वे भौतिकवादी विज्ञानकी मान्यताओंको मिथ्या और छिन्न-भिन्न सिद्ध करके दिखा देंगे। इस दौर और विचार क्रान्तिके बाद सीधे सच्चे लोगोंकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और चारों ओर अमन चैन फैलता चला जाएगा।

इस भविष्यवाणीमें यह बात कुछ दिल-चस्प और महत्वपूर्ण है कि एक युग क्रान्तिका श्रीगणेश भारतसे होगा। साथ ही यह भी कुछ कुतूहलसे खाली नहीं है कि पाकिस्तानका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। बिल्कुल इसीसे मिलती जुलती भविष्यवाणी एक और विश्वविख्यात भविष्यवक्ता जुल वर्नने भी की है।

शिखर वार्ता समझौते पर हस्ताक्षर

अभी यह अन्तिम पृष्ठ छपते समय ३ जुलाईको ज्ञात हुआ कि गत रात्रि रविवारको निशाथ-काल १२–४० पर भारतकी प्रधानमंत्री और पाकिस्तातके राष्ट्रपतिने समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं। इस शिखर सम्मेलनकी प्रारम्भिक ग्रह स्थितिका दिग्दर्शन पृष्ठ ७५—७६ पर २८ जूनकी रात्रिमें लिखा जा चुका है। वृश्चिक लग्नके फलस्वरूप प्रारम्भमें गतिरोध भी हुआ और निश्चित कार्यक्रमसे दो दिन अधिक सम्मेलन चला। २ जुलाई रविवारको वार्ताके अन्तिम दौरमें दोनों देशों की समस्याएं पारस्परिक वार्ता द्वारा हल करनेका निर्णय हुआ और निशीथकी नीरवतामें १२–४० पर दोनों नेताओंके हस्ताक्षर हो गये। इस समय मीन लग्नका अन्त (२६ अंश) होनेसे वर्गोत्तमांश लग्न था। चन्द्रमाने मीन राशिमें १२–३७ पर प्रवेश किया ही था, यह भी अपने स्वांशमें है। लग्नेश गुरु बलवान् होकर दशम (राज्य) भावमें स्वराशिस्थ है और पू०भा० नक्षत्रका चतुर्थ चरण प्रवेश होनेसे गुरुमहादशाके ४ वर्ष शेष हैं। अतः इस शांतिप्रिय लग्नेशकी महादशामें भारतके सत्प्रयत्नसे युद्धकी विभीषिका दूर होकर शांति स्थापना संभव हो सकेगी। इस ग्रह स्थिति पर विशद शास्त्रीय विवेचन अधिकारी विद्वान् यदि लिख भेजेंगे तो आगामी अंकमें प्रकाशित किये जावेंगे।

आगामी नववर्षाङ्कके लिए सभी लेख १५ अगस्त तक प्राप्त होने चाहिए। बादमें विलम्बसे प्राप्त हुए लेख छप नहीं सकेंगे।

—सम्पादक

'JYOTISHMATI' REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

श्रीहरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा दि कुमार प्रिंटिंग प्रेस सोलन में छपकर ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि.प्र.) से प्रकाशित